Resource: Open Hindi Contemporary Version

Open Hindi Contemporary Version (Hindi) is based on: Hindi Contemporary Version Bible, Biblica, Inc, 2019, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Open Hindi Contemporary Version

1 Kings 1:1

1 राजा दावीद अब बहुत बूढ़े हो चुके थे. उन्हें ओढ़ाया अवश्य
जाता, था मगर कपड़े उनके शरीर को गर्म नहीं रख पा रहे थे.

2 इसलिये उनके सेवकों ने उन्हें सलाह दी, “महाराज, हमारे
स्वामी के लिए एक जवान लड़की की खोज की जाए, वह
महाराज की सेवा करे और उनके सामने ही रहे. वही आपकी
गोद में सोया करे, कि महाराज, हमारे स्वामी की देह गर्म रह
सके.”

3 तब उन्होंने पूरे इस्राएल में एक सुंदर लड़की को खोजना
शुरू कर दिया. उन्हें शुनाम देश में ऐसी लड़की मिल गई,
जिसका नाम था अबीशाग. वे उसे राजा के सामने ले आए.

4 यह जवान लड़की बहुत ही सुंदर थी. उसे राजा की सेविका
बना दिया गया, वह उनकी सेवा करने में लग गई; मगर राजा
ने उसके साथ शारीरिक संबंध नहीं बनाए.

5 उसी समय हेग्गीथ के पुत्र अदोनियाह ने अपने आपको ऊंचा
उठाते हुए यह घोषणा की: “अगला राजा मैं हूं.” उसने अपने
लिए रथ और घुड़सवार भी तैयार कर लिए और अपने आगे-
आगे दौड़ने के लिए पचास सैनिक भी.

6 उसके पिता ने उससे यह प्रश्न करते हुए कभी नहीं रोका:
“तुमने ऐसा क्यों किया है?” अदोनियाह एक सुंदर युवक था.
उसका जन्म अबशालोम के ठीक बाद ही हुआ था.

7 अदोनियाह ने जाकर ज़ेरुइयाह के पुत्र योआब और पुरोहित
अबीयाथर से मिलकर बातचीत की. उन्होंने अदोनियाह की
तरफ होकर उसकी सहायता भी की.

8 मगर पुरोहित सादोक, यहोयादा का पुत्र बेनाइयाह,
भविष्यद्वक्ता नाथान, शिमेई, रेइ और दावीद के वीर योद्धाओं
ने अदोनियाह को समर्थन नहीं दिया.

9 अदोनियाह ने एन-रोगेल नामक स्थान पर जाकर ज़ोहेलेथ
नामक चट्टान के पास भेड़ों, बैलों और हृष्ट-पुष्ट पशुओं की
बलि चढ़ाई. इस मौके पर उसने अपने सभी भाइयों—
राजकुमारों और यहूदिया के राजकीय अधिकारियों को तो
आमंत्रित किया था,

10 मगर उसने इस मौके पर न तो भविष्यद्वक्ता नाथान को, न
तो बेनाइयाह को न अपने भाई शलोमोन को और न किसी
वीर योद्धा को आमंत्रित किया.

11 नाथान ने शलोमोन की माता बैथशेबा से कहा, “क्या तुमने
सुना नहीं कि हेग्गीथ का पुत्र अदोनियाह राजा बन गया है,
और दावीद हमारे स्वामी इससे अनजान हैं?”

12 इसलिये अब मेरी सलाह सुनो, कि तुम अपना और अपने
पुत्र शलोमोन का जीवन सुरक्षित रख सको:

13 इसी समय राजा दावीद से जाकर कहो, “महाराज, मेरे
स्वामी, क्या आपने अपनी दासी से यह शपथ न ली थी, ‘मेरे
बाद तुम्हारा पुत्र शलोमोन ही राजा बनेगा, वही मेरे सिंहासन
पर बैठेगा? तो फिर अदोनियाह राजा कैसे बन बैठा?’

14 जब तुम राजा से बातचीत कर ही रही होगी, मैं वहां तुम्हारे
पीछे-पीछे आ जाऊंगा और तुम्हारी बातों में हामी भरूंगा.”

15 तब बैथशेबा राजा के कमरे में गई. राजा बहुत ही बूढ़े हो
चुके थे और शूनामी अबीशाग उनकी सेवा में लगी थी.

16 बैथशेबा ने झुककर राजा को नमस्कार किया. राजा ने
उससे पूछा, “क्या चाहती हो तुम?”

17 बैथशेबा ने उन्हें उत्तर दिया, “मेरे स्वामी, आपने अपनी
सेविका से याहवेह, आपके परमेश्वर की शपथ ली थी, ‘तुम्हारा
पुत्र शलोमोन ही मेरे बाद राजा होगा, और वह मेरे राज
सिंहासन पर बैठेगा.’

18 अब देखिए, अदोनियाह राजा बन बैठा है, जबकि महाराज,
मेरे स्वामी, आपको इसके बारे में पता ही नहीं है.

19 अदोनियाह ने बड़ी संख्या में बैलों, हष्ट-पुष्ट पशुओं और
भेड़ों की बलि चढ़ाई है, और उसने राजा के सभी पुत्रों को
पुरोहित अबीयाथर और सेनापति योआब को भी बुलाया है,
मगर आपके सेवक शलोमोन को इसके लिए नहीं बुलाया गया
है.

20 महाराज, मेरे स्वामी, इस समय सारे इस्राएल की नज़रें आप
पर लगी हैं, कि आप यह घोषणा करें कि महाराज, मेरे स्वामी
के बाद कौन सिंहासन पर बैठेगा.

21 नहीं तो यही होगा कि जैसे ही आप मेरे स्वामी हमेशा के
लिए अपने पूर्वजों में जा मिलेंगे, मुझे और मेरे पुत्र शलोमोन
को अपराधी घोषित कर दिया जाएगा.”

22 बैथशेबा राजा से यह बातें कर ही रही थी, कि भविष्यद्वक्ता
नाथान वहां आ गए.

23 उन्हें बताया गया, “भविष्यद्वक्ता नाथान आए हैं.” जब
भविष्यद्वक्ता नाथान राजा के सामने पहुंचे, उन्होंने राजा को
दंडवत किया.

24 इसके बाद नाथान ने कहा, “महाराज, मेरे स्वामी, क्या यह
आपकी घोषणा है ‘मेरे बाद अदोनियाह राज करेगा, वही मेरे
सिंहासन पर बैठेगा?’

25 क्योंकि आज उसने जाकर बैल, हष्ट-पुष्ट पशु और बड़ी
मात्रा में भेड़ों की बलि चढ़ाई है. इस मौके पर उसने सभी
राजकुमारों, सेनापतियों और पुरोहित अबीयाथर को भी
आमंत्रित किया है. ये सभी इस समय उसकी उपस्थिति में यह
कहते हुए खुशी मना रहे है. ‘अदोनियाह सदा जीवित रहे!’

26 मगर अदोनियाह ने मुझे, हां मुझे, आपके सेवक को,
पुरोहित सादोक को, यहोयादा के पुत्र बेनाइयाह और आपके
सेवक शलोमोन को नहीं बुलाया है.

27 क्या, यह सब महाराज, मेरे स्वामी द्वारा किया गया है, और
आपने अपने इन सेवकों को इस बात की सूचना देना सही न
समझा, कि महाराज, मेरे स्वामी के बाद उनके सिंहासन पर
कौन बैठेगा?”

28 जब राजा दावीद ने यह सुना, उन्होंने आदेश दिया, “मेरे
सामने बैथशेबा को बुलाया जाए.” बैथशेबा आकर राजा के
सामने खड़ी हो गई.

29 राजा ने यह शपथ लेते हुए कहा, “जीवित याहवेह की शपथ,
जिन्होंने मुझे हर एक मुसीबत में से निकाला है,

30 मैंने इस्राएल के परमेश्वर, याहवेह के सामने जो शपथ ली
थी, ‘तुम्हारा पुत्र शलोमोन मेरे बाद राजा होगा और वही मेरी
जगह पर मेरे सिंहासन पर बैठेगा,’ मैं आज ठीक यही पूरा
करूंगा.”

31 यह सुन बैथशेबा ने झुककर राजा को दंडवत करते हुए
कहा, “राजा दावीद, मेरे स्वामी, सदा जीवित रहें.”

32 राजा दावीद ने आदेश दिया, “पुरोहित सादोक,
भविष्यद्वक्ता नाथान और यहोयादा के पुत्र बेनाइयाह को मेरे
सामने बुलाया जाए.” जब वे राजा के सामने आए,

33 राजा ने उन्हें आदेश दिया, “मेरे पुत्र शलोमोन को मेरे निज
खच्चर पर चढ़ाकर उसे अपने स्वामी के सेवकों के साथ लेकर
गीहोन चले जाओ.

34 वहां पहुंचकर पुरोहित सादोक और भविष्यद्वक्ता नाथान
इस्राएल का राजा होने के लिए शलोमोन को अभिषेक करें.
इसके बाद नरसिंग फूंकने के साथ यह घोषणा की जाए. ‘राजा
शलोमोन सदा जीवित रहें!’

35 आप सभी इसके बाद शलोमोन के पीछे-पीछे आएं. तब वह
यहां आकर मेरे राज सिंहासन पर बैठे कि वह मेरे बाद मेरी
जगह पर राजा हो जाए; क्योंकि खुद मैंने उसे यहूदिया और
इस्राएल पर राजा बनाया है.”

1 Kings 1:1

36 यहोयादा के पुत्र बेनाइयाह ने राजा से कहा, “आमेन! महाराज, मेरे स्वामी के परमेश्वर, याहवेह भी ऐसा ही कहें.

37 जिस प्रकार याहवेह महाराज, मेरे स्वामी के साथ साथ रहे हैं, उसी प्रकार वह शलोमोन के साथ साथ बने रहें, और उसके सिंहासन को मेरे स्वामी, राजा दावीद के सिंहासन से भी अधिक बढ़ाएं.”

38 तब पुरोहित सादोक, भविष्यद्वक्ता नाथान, यहोयादा का पुत्र बेनाइयाह और केरेथि और पेलेथी शलोमोन को राजा दावीद के निज खच्चर पर बैठाकर उसे गीहोन ले गए.

39 वहां पुरोहित सादोक ने मिलनवाले तंबू से लाए हुए सींग के तेल से शलोमोन का अभिषेक किया. तब उन्होंने नरसिंगा फूंका और सभी ने एक आवाज में यह नारे लगाए: “राजा शलोमोन सदा जीवित रहें!”

40 तब सारी भीड़ बड़े ही आनंद में बांसुरी बजाते हुए राजा के पीछे-पीछे चलने लगी. इतनी तेज थी उनकी आवाज कि इससे धरती डोल उठी!

41 यह आवाज अदोनियाह और उसके सभी अतिथियों ने भी सुनी. इस समय वे अपना भोजन खत्म कर ही रहे थे. जैसे ही योआब ने नरसिंगे की आवाज सुनी, वह पूछने लगा, “नगर में इस चिल्लाहट का कारण क्या है?”

42 वह यह पूछताछ कर ही रहा था, कि पुरोहित अबीयाथर का पुत्र योनातन वहां आ पहुंचा. अदोनियाह ने उससे कहा, “यहां आओ तुम भले व्यक्ति हो, इसलिये भला समाचार ही लाए होगे.”

43 योनातन ने उसे उत्तर दिया, “नहीं! हमारे स्वामी, महाराज दावीद ने शलोमोन को राजा बना दिया है.

44 राजा दावीद ने उसे पुरोहित सादोक, भविष्यद्वक्ता नाथान, यहोयादा के पुत्र बेनाइयाह और केरेथि और पेलेथी भी उसके साथ भेजे हैं. इसके अलावा उन्होंने शलोमोन को राजा दावीद के निज खच्चर पर भी चढ़ा दिया है.

45 पुरोहित सादोक और भविष्यद्वक्ता नाथान ने गीहोन में शलोमोन का राजाभिषेक कर दिया है. वे सभी वहां से बड़ी ही खुशी में लौटे हैं. इसलिये नगर में यह आनंद मनाने की आवाज सुनाई दे रही है. यही है वह चिल्लाहट, जो आपने सुनी है.

46 इन सबके अलावा अब शलोमोन राज सिंहासन पर बैठे हैं.

47 वह सब होने के बाद राजा के सेवकों ने जाकर महाराज, हमारे स्वामी को यह कहते हुए बधाईयां दी है ‘परमेश्वर शलोमोन के नाम को आपके नाम से भी अधिक ऊंचा करें, उनके राज सिंहासन को आपके राज सिंहासन से भी अधिक बढ़ाएं.’ यह सुन महाराज ने अपने पलंग पर ही दंडवत किया.

48 साथ ही राजा ने यह भी कहा, ‘धन्य हैं, याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर, जिन्होंने आज किसी को मेरे सिंहासन पर बैठने के लिए चुना है, और उसे खुद मेरी आंखों ने देख लिया है.’ ”

49 यह सुन अदोनियाह के सभी अतिथि बहुत ही डर गए. वे सभी उसी समय उठकर अपने-अपने रास्ते पर निकल गए.

50 फिर अदोनियाह मन ही मन शलोमोन से डरने लगा; इसलिये उसने तुरंत जाकर वेदी के सींग पकड़ लिए. शलोमोन को इस बात की ख़बर इस प्रकार दी गई:

51 “सुनिए, सुनिए! अदोनियाह महाराज से डरता है, इसलिये उसने जाकर यह कहते हुए वेदी के सींग थाम लिए हैं, ‘आज महाराज शलोमोन यह शपथ लें, कि वह अपने सेवक को तलवार से नहीं मारेंगे.’ ”

52 शलोमोन ने उत्तर दिया, “यदि वह अपने आपको एक अच्छा व्यक्ति साबित करे, उसका ज़रा सा भी नुकसान न होगा; मगर यदि उसमें दुष्टता का अंश भी पाया गया तो उसकी मृत्यु तय है.”

53 राजा शलोमोन ने आदेश दिया कि उसे वेदी से लाकर उनके सामने पेश किया जाए. वह लाया गया, और उसे राजा शलोमोन के सामने पेश किया गया. वह आया और राजा शलोमोन के सामने दंडवत हो गया. राजा शलोमोन ने उसे आदेश दिया, “आप अपने घर को लौट जाइए.”

1 Kings 2:1

1 Kings 2:1

1 जब दावीद की मृत्यु का समय निकट आया, उन्होंने अपने
पुत्र शलोमोन को ये आदेश दिए:

2 "संसार की रीति के अनुसार मैं जा रहा हूं, तुम्हें मजबूत होना
होगा और तुम्हें पुरुषार्थ दिखाना होगा.

3 परमेश्वर के नियमों के पालन की जो जवाबदारी याहवेह,
तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें सौंपी है—उनके नियमों का पालन
करने का, उनकी विधियों का पालन करने का, उनकी आज्ञा,
चितौनियों और गवाहियों का पालन करने का, जैसा कि मोशेह
की व्यवस्था में लिखा है; कि तुम्हारा हर एक काम जिसमें तुम
लगे होते हो, चाहे वह कैसा भी काम हो; करते हो, समृद्ध हो
जाओ;

4 जिससे याहवेह मेरे बारे में ली गई अपनी इस शपथ को पूरा
कर सकें: 'यदि तुम्हारे पुत्रों का व्यवहार मेरे सामने उनके पूरे
हृदय और प्राण से सच्चा रहेगा, इस्राएल के सिंहासन पर बैठने
के लिए तुम्हें कभी कमी न होगी.'

5 "इसके अलावा तुम्हें यह भी मालूम है कि ज़ेरुइयाह के पुत्र
योआब ने मेरे साथ कैसा गलत व्यवहार किया था—उसने
इस्राएल की सेना के दो सेनापतियों—नेर के पुत्र अबनेर और
येथेर के पुत्र अमासा की किस प्रकार हत्या की थी. उसने मेल
के समय में भी युद्ध के समान लहू बहाया था. ऐसा करके
उसने अपने कमरबंध को और अपने जूतों को लहू से भिगो
दिया.

6 अपनी बुद्धि का सही इस्तेमाल करो और ध्यान रहे कि
उसके लिए वह इस बुढ़ापे में पहुंचकर शांति से अधोलोक में
प्रवेश न कर सके.

7 "मगर गिलआदवासी बारज़िल्लई की संतान पर विशेष दया
दिखाते रहना. ऐसा करना कि वे भोजन के लिए तुम्हारे साथ
बैठा करें; क्योंकि जब मैं तुम्हारे भाई अबशालोम से छिपता
हुआ भाग रहा था, उन्होंने मेरी बड़ी सहायता की थी.

8 "यह न भूलना कि इस समय तुम्हें बहुरीम के रहनेवाले
बिन्यामिन वंशज गेरा के पुत्र शिमेई के बारे में भी निर्णय लेना
है. जब मैं माहानाईम की ओर बढ़ रहा था, उसने मुझे कड़े
शाप दिए थे. मगर जब मैं लौट रहा था, वह मुझसे मिलने
यरदन नदी के किनारे तक आया था. मैंने जीवित याहवेह की
शपथ लेकर उसे आश्वासन दिया, 'मेरी तलवार उस पर कभी
न उठेगी.'

9 अब उसे दंड देने में ढिलाई न करना. तुम बुद्धिमान व्यक्ति
हो, तुम्हें पता है कि सही क्या होगा. उसके बूढ़े शरीर को बिना
लहू बहाए अधोलोक में उतरने न देना."

10 इसके बाद दावीद अपने पूर्वजों में जा मिले. उन्हें उन्हीं के
नगर की कब्र में रख दिया गया.

11 इस्राएल पर दावीद के शासन की अवधि चालीस साल थी.
उन्होंने हेब्रोन में सात साल और येरूशलेम में तैंतीस साल
शासन किया.

12 शलोमोन अपने पिता दावीद के राज सिंहासन पर बैठे.
उनका शासन इस समय बहुत बढ़िया तरीके से दृढ़ हो चुका
था.

13 एक दिन हेग्गीथ का पुत्र अदोनियाह शलोमोन की माता
बैथशेबा से मिलने आया. बथशेबा ने उससे पूछा, "सब कुशल
तो है न?" "जी हां, जी हां, सब कुशल है." उसने उत्तर दिया.

14 उसने आगे कहना शुरू किया, "मुझे आपसे एक विनती
करनी है." बैथशेबा ने उत्तर दिया, "हां, कहो."

15 तब उसने कहा, "आपको तो इस बात का पता है ही कि
वास्तव में यह राज्य मेरा था—पूरे इस्राएल की उम्मीद मुझसे
ही थी. फिर पासा पलट गया और राज्य मेरे भाई का हो गया;
क्योंकि यह याहवेह द्वारा उसी के लिए पहले से तय किया गया
था.

16 अब मैं आपसे सिर्फ एक विनती कर रहा हूं: कृपया मना न
कीजिएगा." बैथशेबा ने उससे कहा, "हां, कहो."

17 अदोनियाह ने कहना शुरू किया, "आप कृपया राजा
शलोमोन से विनती करें कि वह मुझे शूनामी अबीशाग से
विवाह करने की अनुमति दे दें; वह आपका कहना नहीं
टालेंगे."

1 Kings 2:1

18 “ठीक है!” बैथशेबा ने उत्तर दिया, “तुम्हारी यह विनती मैं
महाराज तक ज़रूर पहुंचा दूंगी.”

19 तब बैथशेबा अदोनियाह के इस विषय को लेकर राजा
शलोमोन के सामने गई. उन्हें देखकर राजा उठ खड़े हुए, और
उनसे मिलने के पहले झुककर उन्हें नमस्कार किया. फिर वह
अपने सिंहासन पर बैठ गए, उन्होंने आदेश दिया कि एक
आसन उनकी माता के लिए लाया जाए. बैथशेबा उनके दाईं
ओर उस आसन पर बैठ गईं.

20 बैथशेबा ने अपनी बात कहनी शुरू की, “मैं तुमसे एक
छोटी सी विनती कर रही हूं; कृपया मना न करना.” “मेरी
माता, आप कहिए तो! मैं मना नहीं करूंगा.” राजा ने उन्हें
आश्वासन दिया.

21 तब बैथशेबा ने आगे कहा, “अपने भाई अदोनियाह को
शूनामी अबीशाग से विवाह करने की अनुमति दे दो.”

22 राजा शलोमोन ने अपनी माता को उत्तर दिया, “मां, आप
अदोनियाह के लिए सिर्फ शूनामी अबीशाग की ही विनती क्यों
कर रही हैं? आप तो उसके लिए पूरा राज्य ही मांग सकती थी;
वह तो मेरा बड़ा भाई है. ऐसी ही विनती आप पुरोहित
अबीयाथर और ज़ेरुइयाह के पुत्र योआब के लिए भी कर
सकती हैं!”

23 तब राजा शलोमोन ने याहवेह की शपथ लेते हुए कहा,
“परमेश्वर मेरे साथ ऐसा ही, बल्कि इससे भी कहीं अधिक करें,
यदि अदोनियाह अपनी इस बात का मूल्य अपने प्राणों से न
चुकाए.

24 क्योंकि जीवित याहवेह ने ही मुझे मेरे पिता दावीद के
सिंहासन पर बैठाया है, उन्हीं ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार मुझे
राजवंश दिया है. यह तय है कि आज ही अदोनियाह को प्राण-
दंड दिया जाएगा.”

25 राजा शलोमोन ने यहोयादा के पुत्र बेनाइयाह को यह
जवाबदारी सौंपी, और उसके वार से अदोनियाह की मृत्यु हो
गई.

26 इसके बाद राजा ने पुरोहित अबीयाथर से कहा, “आप
अनाथोथ चले जाइए, जहां आपकी पैतृक संपत्ति है. सही तो
यह था कि आपको मृत्यु दंड दिया जाता, मगर इस समय मैं
आपकी हत्या नहीं करूंगा, क्योंकि आपने मेरे पिता दावीद के
सामने प्रभु याहवेह की वाचा के संदूक को उठाया था, साथ ही
आप मेरे पिता के बुरे समय में उनके साथ बने रहे.”

27 यह कहते हुए शलोमोन ने अबीयाथर को याहवेह के
पुरोहित के पद से हटा दिया, कि याहवेह का वह कहा हुआ
वचन पूरा हो जाए, जो उन्होंने शीलो में एली के वंश के संबंध
में कहा था.

28 जब योआब को इसकी ख़बर मिली, वह दौड़कर याहवेह
के मिलनवाले तंबू में जा पहुंचा, और उसने जाकर वेदी के
सींग पकड़ लिए. ज़ाहिर है कि योआब अदोनियाह के पक्ष में
था; हालांकि अबशालोम के पक्ष में नहीं.

29 जब राजा शलोमोन को यह बताया गया, योआब याहवेह के
मिलनवाले तंबू को भाग गया है, और वह इस समय वेदी पर
है, तो शलोमोन ने यहोयादा के पुत्र बेनाइयाह को आदेश
दिया, “जाओ, उसे वहीं खत्म कर दो!”

30 बेनाइयाह ने याहवेह के मिलनवाले तंबू के पास जाकर
योआब से कहा, “यह महाराज का आदेश है, ‘आप मिलनवाले
तंबू से बाहर आइए!’ ” किंतु योआब ने उत्तर दिया, “नहीं, मैं
यहीं अपने प्राण दे दूंगा.” बेनायाह ने इसकी सूचना राजा को
दे दी, “योआब ऐसा कर रहे हैं, और उन्होंने मुझे यह उत्तर
दिया है.”

31 राजा ने बेनायाह को उत्तर दिया, “वही करो, जैसा वह चाह
रहा है. उसे खत्म करो, और उसका अंतिम संस्कार भी कर
देना. यह करने के द्वारा तुम मेरे पिता के वंश और मुझ पर उस
सारे बहाए गए लहू का दोष दूर कर दोगे, जो योआब द्वारा
बेकार ही बहाया गया था.

32 याहवेह ही उन सभी कुकर्मों को उसके सिर पर ला छोड़ेंगे;
क्योंकि उसने बिना मेरे पिता के जाने, अपने से कहीं अधिक
भले और सुयोग्य व्यक्तियों की तलवार से हत्या की, नेर के पुत्र
अबनेर की, जो इस्राएल की सेना के सेनापति थे, और येथेर के
पुत्र अमासा की, जो यहूदिया की सेना के सेनापति थे.

33 तब उन दोनों की हत्या का दोष लौटकर योआब और उनके
वंशजों पर हमेशा के लिए आता रहेगा; मगर दावीद, उनके
वंशजों, उनके परिवार और सिंहासन पर याहवेह के द्वारा दी
गई शांति हमेशा बनी रहे.”

1 Kings 3:1

34 तब यहोयादा का पुत्र बेनाइयाह भीतर गया, और योआब
पर वार कर उसका वध कर दिया, और उसे बंजर भूमि के
पास उसके घर पर उसका अंतिम संस्कार कर दिया.

35 राजा ने यहोयादा के पुत्र बेनाइयाह को योआब की जगह
पर सेनापति और अबीयाथर के स्थान पर सादोक को पुरोहित
बना दिया.

36 इसके बाद राजा ने शिमेई को बुलवाया और उसे आदेश
दिया, "येरूशलेम में अपने लिए घर बनाइए और उसी में
रहिए. ध्यान रहे कि आप यहां से और कहीं न जाएं,

37 क्योंकि जिस दिन आप बाहर निकलेंगे, और किद्रोन घाटी
पार करेंगे यह समझ लीजिए कि उस दिन आपकी मृत्यु तय
होगी, और इसका दोष आपके ही सिर पर होगा."

38 शिमेई ने राजा को उत्तर दिया, "महाराज, मेरे स्वामी द्वारा
दिए गए निर्देश सही ही हैं. जो कुछ महाराज, मेरे स्वामी ने
कहा है, आपका सेवक उसका पालन ज़रूर करेगा." तब
शिमेई येरूशलेम में लंबे समय तक रहता रहा.

39 तीन साल खत्म होते-होते शिमेई के दो सेवक भागकर गाथ
के राजा माकाह के पुत्र आकीश के पास चले गए. शिमेई को
यह सूचना दी गई: "सुनिए, आपके सेवक इस समय गाथ में
हैं."

40 यह सुन शिमेई ने अपने गधे पर काठी कसी और गाथ के
लिए निकल गया, कि आकीश के यहां जाकर अपने सेवकों
को खोज सके. शिमेई वहां से अपने सेवकों को लेकर
येरूशलेम लौट आया.

41 शलोमोन को इस बात की सूचना दे दी गई कि शिमेई
येरूशलेम से गाथ गया था और अब वह लौट चुका है.

42 यह सुनकर राजा शिमेई को बुलाने का आदेश दिया. राजा
ने शिमेई से प्रश्न किया, "क्या मैंने बड़ी गंभीरता से आपसे
याहवेह की शपथ लेकर यह चेतावनी न दी थी, 'जिस दिन
आप येरूशलेम से बाहर निकलें, यह समझ लीजिए कि
आपकी मृत्यु तय होगी'? जिसके उत्तर में आपने ही कहा था,
'महाराज, मेरे स्वामी द्वारा दिए गए निर्देश सही ही हैं.'

43 इतना होने पर भी आपने याहवेह के सामने ली गई शपथ
का सम्मान और मेरे आदेश का पालन क्यों नहीं किया?"

44 राजा ने शिमेई से यह भी कहा, "आपको उन सारे बुरे
व्यवहारों और गलतियों का अहसास है, जो आपने मेरे पिता
दावीद के साथ की थी; इसलिये याहवेह आपके द्वारा किए गए
इन दुरव्यवहारों को आपके ही ऊपर लौटा ले आएंगे.

45 मगर राजा शलोमोन धन्य रहेंगे और दावीद का सिंहासन
याहवेह के सामने हमेशा के लिए बना रहेगा."

46 राजा ने यहोयादा के पुत्र बेनाइयाह को आदेश दिया, और
उसने बाहर जाकर शिमाई पर ऐसा वार किया कि उसके
प्राणपखेरु उड़ गए. इस प्रकार शलोमोन के हाथों में आया
राज्य दृढ़ हो गया.

1 Kings 3:1

1 शलोमोन ने मिस्र के राजा फ़रोह के साथ वैवाहिक गठबंधन
बनाया. उन्होंने फ़रोह की पुत्री से विवाह कर लिया, और उसे
दावीद के नगर में ले आए. उन्होंने उसे येरूशलेम में तब तक
रखा, जब तक अपने भवन, याहवेह के भवन और येरूशलेम
की शहरपनाह बनाने का काम पूरा न हो गया.

2 लोग पूजा की जगहों पर अब भी बलि चढ़ाते थे, क्योंकि अब
तक याहवेह के लिए कोई भी भवन बनाया नहीं गया था.

3 शलोमोन याहवेह से प्रेम करते थे. हां, अपने पिता दावीद की
विधियों का पालन भी करते थे. इसके अलावा वह पूजा की
जगहों पर बलि चढ़ाते और धूप भी जलाते थे.

4 एक बार राजा बलि चढ़ाने के लिए गिबयोन नगर गए. यह
विशेष पूजा की जगह थी. शलोमोन हमेशा उस वेदी पर
होमबलि के लिए एक हज़ार पशु चढ़ाते थे.

5 गिबयोन नगर में ही याहवेह शलोमोन पर सपने में दिखे.
परमेश्वर ने उनसे कहा, "मांगो, जो तुम्हारी मनोकामना है!"

6 शलोमोन ने याहवेह को उत्तर दिया, "आपने अपने सेवक
मेरे पिता, दावीद पर बहुत प्रेम दिखाया है, क्योंकि वह आपके

1 Kings 3:1

सामने सच्चाई, ईमानदारी और मन की सीधाई से चलते रहे. आपने उन पर अपना अपार प्रेम इस हद्द तक बनाए रखा है कि, आज आपने उन्हें उनके सिंहासन पर बैठने के लिए एक पुत्र भी दिया है.

7 “याहवेह, मेरे परमेश्वर, अब आपने अपने सेवक को मेरे पिता दावीद की जगह पर राजा बना दिया है. यह होने पर भी, सच यही है कि मैं सिर्फ एक कम उम्र का बालक ही हूं—मुझे इसकी समझ ही नहीं कि किस परिस्थिति में कैसा फैसला लेना सही होता है.

8 आपका सेवक आपके द्वारा चुनी गई प्रजा के बीच है, जो इतनी विशाल है जिसकी गिनती भी नहीं की जा सकती है, जिनका हिसाब रखना मुश्किल है.

9 इसलिये प्रजा का न्याय करने के लिए अपने सेवक को ऐसा मन दे दीजिए कि मैं भले-बुरे को परख सकूं, नहीं तो कौन है जो आपकी इतनी विशाल प्रजा का न्याय करके उसे चला सके?”

10 शलोमोन की इस प्रार्थना ने प्रभु को प्रसन्न कर दिया.

11 परमेश्वर ने उन्हें उत्तर दिया, “इसलिये कि तुमने न तो अपनी लंबी उम्र के लिए, न धन-दौलत के लिए और न ही अपने शत्रुओं के प्राणों की विनती की है, बल्कि तुमने प्रार्थना की है, कि तुम्हें न्याय के लिए सही विवेक मिल सके;

12 देखो, मैं तुम्हारी इच्छा पूरी कर रहा हूं. देखो, मैं तुम्हें बुद्धि और विवेक से भरा मन देता हूं, ऐसा, कि न तो तुमसे पहले कोई ऐसा हुआ है, और न तुम्हारे बाद ऐसा कोई होगा.

13 मैं तुम्हें वह भी दूंगा, जिसकी तुमने प्रार्थना भी नहीं की; धन-दौलत और महिमा. तुम्हारे पूरे जीवन भर में कोई भी राजा तुम्हारे सामने खड़ा न हो सकेगा.

14 यदि तुम मेरे मार्ग पर चलोगे, मेरी विधियों और आज्ञाओं का पालन करते रहो, जैसा तुम्हारे पिता दावीद करते रहे, मैं तुम्हें लंबी उम्र दूंगा.”

15 शलोमोन की नींद टूट गई. उन्हें लगा कि यह सिर्फ सपना ही था. वह येरूशलेम लौट गए, और वहां प्रभु की वाचा के संदूक के सामने खड़े हो गए, और उन्होंने होमबलि और मेल बलि चढ़ाई, और अपने सभी सेवकों के लिए एक भोज दिया.

16 एक दिन शलोमोन की सभा में दो वेश्याएं आ खड़ी हुईं.

17 उनमें से एक ने विनती की, “मेरे प्रभु, हम दोनों एक ही घर में रहती हैं. जब यह घर पर ही थी, मैंने एक बच्चे को जन्म दिया.

18 बच्चे को जन्म देने के तीसरे दिन इस स्त्री ने भी एक बच्चे को जन्म दिया. हम दोनों साथ साथ ही रह रही थी. घर में हम दोनों के अलावा कोई भी दूसरा व्यक्ति न था, घर में सिर्फ हम दोनों ही थी.

19 “रात में इस स्त्री के पुत्र की मृत्यु हो गई, क्योंकि बच्चा इसके नीचे दब गया था.

20 रात के बीच में जब मैं सो रही थी, इसने उठकर मेरे पास से मेरे पुत्र को लेकर अपने पास सुला लिया, और अपने मरे हुए पुत्र को मेरे पास लिटा दिया.

21 जब सुबह उठकर मैंने अपने पुत्र को दूध पिलाना चाहा, तो मैंने पाया कि वह मरा हुआ था! मगर जब मैंने सुबह उसे ध्यान से देखा तो, यह मुझे साफ़ मालूम हुआ कि वह मेरा पुत्र था ही नहीं, जिसे मैंने जन्म दिया था.”

22 इस पर दूसरी स्त्री बोल उठी, “नहीं! यह ज़िंदा बच्चा ही मेरा पुत्र है. तुम्हारा पुत्र यह मरा हुआ बच्चा है.” मगर पहली स्त्री ने कहा, “नहीं! मरा हुआ बच्चा तुम्हारा ही पुत्र है, ज़िंदा बच्चा मेरा पुत्र है.” यह सब राजा के सामने हो रहा था.

23 तब राजा ने कहा, “एक कहती है, ‘जो ज़िंदा है, वह मेरा पुत्र है, जो मरा है वह तुम्हारा पुत्र है’ और दूसरी स्त्री दावा कर रही है, ‘नहीं! मरा हुआ पुत्र तुम्हारा है, ज़िंदा मेरा.’ ”

24 राजा ने आदेश दिया, “मेरे लिए एक तलवार लेकर आओ.” सो राजा के लिए एक तलवार लाई गई.

25 राजा ने उन्हें आदेश दिया, “जीवित बच्चे को दो भागों में
काट दिया जाए और दोनों स्त्रियों को आधा-आधा भाग दे
दिया जाए.”

26 तब वह स्त्री, जिसका बच्चा वास्तव में ज़िंदा था, राजा से
विनती करने लगी, क्योंकि वह अपने पुत्र के विषय में बहुत ही
दुःखी हो गई थी, “मेरे प्रभु, दे दीजिए यह ज़िंदा बच्चा इसे,
इसकी हत्या बिलकुल न कीजिए.” मगर दूसरी स्त्री ने कहा,
“न बच्चा तुम्हारा होगा न मेरा; कर दो इसे दो भागों में आधा!”

27 यह सुनते ही राजा ने आदेश दिया, “इस बच्चे की हत्या
बिलकुल न की जाए. ज़िंदा बच्चा इस पहली स्त्री को दे दो. इस
बच्चे की माता यही है.”

28 तब सारे इस्राएल ने इस निर्णय के बारे में सुना कि राजा ने
कैसा निर्णय दिया है, सबके मन में राजा का भय छा गया.
क्योंकि वे यह साफ़ देख रहे थे कि न्याय करने के लिए राजा
में परमेश्वर की बुद्धि थी.

1 Kings 4:1

1 राजा शलोमोन सारे इस्राएल देश के शासक थे.

2 उनके द्वारा चुने गए प्रमुख अधिकारियों का ब्यौरा इस तरह
है: सादोक के पुत्र अज़रियाह मुख्य पुरोहित थे;

3 शिशा के पुत्र एलिहोरेफ और अहीयाह सचिव; अहीलूद का
पुत्र यहोशाफ़ात लेखापाल;

4 यहोयादा का पुत्र बेनाइयाह पूरी सेना का सेनापति था.
सादोक और अबीयाथर पुरोहित थे.

5 नाथान का पुत्र अज़रियाह क्षेत्रीय राज्यपालों का अधिकारी
बनाया गया. नाथान के अन्य पुत्र ज़ाबूद, जो पुरोहित भी थे,
राजा के सलाहकार भी;

6 अहीशाहार राजपरिवार से संबंधित विषयों का अधिकारी
था; अब्दा का पुत्र अदोनिरम बंधुआ मजदूरों का अधिकारी
था.

7 शलोमोन ने सारे इस्राएल राज्य के लिए बारह अधिकारियों
को चुन रखा था. इनकी जवाबदारी थी, राजा और उनके पूरे
परिवार के लिए भोजन की व्यवस्था बनाए रखें. हर एक
अधिकारी साल के एक महीने के लिए प्रबंध का ज़िम्मेदार था.

8 उनके नामों की सूची इस प्रकार है: एफ्राईम के पहाड़ी प्रदेश
में बेन-हूर;

9 माकाज़ नगर में बेन-देकर, शआलबीम, बेथ-शेमेश और
एलोन-बेथहानान;

10 अरुब्बोथ में बेन-हैसेद, उनका शासन सोकोह और पूरे
हेफेर क्षेत्र पर भी था.

11 बेन-अबीनादाब पूरा नाफ़ात-दोर का प्रशासक था. उसकी
पत्नी का नाम था ताफ़ात, जो शलोमोन की पुत्री थी.

12 अहीलूद का पुत्र बाअना, तानख और मगिद्दो में और येज़्रील
घाटी के ज़ारेथान के पास संपूर्ण बेथ-शान, बेथ-शान तक और
आबेल-मेहोलाह से लेकर योकमेअम;

13 बेन-गीबर रामोथ-गिलआद में चुना गया शासक था. उनके
अधिकार में मनश्शेह के पुत्र याईर के गांव भी थे, जो गिलआद
क्षेत्र में स्थित हैं. उसके अधिकार में अरगोब का क्षेत्र भी था, जो
बाशान में स्थित है—शहरपनाह और कांसे की छड़ों से
सुरक्षित बना दिए गए साठ विशाल नगर.

14 माहानाईम नगर में इद्दो का पुत्र अहीनादाब शासक था.

15 नफताली में, अहीमाज़ शासक था. उसने शलोमोन की पुत्री
बसेमाथ से विवाह किया था.

16 हुशाई का पुत्र बाअना आशेर और आलोथ में चुना गया था.

17 इस्साखार में पारुआह का पुत्र यहोशाफ़ात;

18 बिन्यामिन में एला का पुत्र शिमेई;

19 गिलआद प्रदेश में उरी का पुत्र गीबार, जो अमोरियों के राजा सीहोन और इसके अलावा यहूदिया राज्य के लिए एक राज्यपाल भी चुना गया था.

20 यहूदिया और इस्राएल में जनसंख्या समुद्र के किनारे की रेत के समान अनगिनत थी. प्रजा सुख समृद्धि में रह रही थी.

21 शलोमोन की प्रभुता फरात नदी के पश्चिम की ओर से लेकर फिलिस्तीनियों के देश तक और मिस्र देश की सीमाओं तक सारे राज्यों पर हो गयी थी. ये सभी शलोमोन के पूरे जीवन भर उन्हें भेंट भेजते रहे और उनकी सेवा करते रहे.

22 शलोमोन के राजपरिवार में प्रतिदिन के भोजन में पांच हज़ार किलो मैदा; दस हज़ार किलो आटा

23 दस हष्ट-पुष्ट बछड़ों का मांस, मैदानों में पाले गये बीस बैल, सौ भेड़ों और इन सबके अलावा हिरण, चिंकारों और यखमूरों और हष्ट-पुष्ट पक्षियों का मांस हुआ करता था.

24 फरात नदी के पश्चिम में हर जगह शलोमोन की प्रभुता थी, तिफ़साह से अज्जाह तक, फरात नदी के पश्चिम के सभी राजाओं पर. पूरे राज्य में चारों ओर शांति बनी हुई थी.

25 यहूदिया और इस्राएल पूरी तरह सुरक्षित थे. दान से बेअरशेबा तक हर एक व्यक्ति शलोमोन के पूरे जीवन भर में अपने अंगूरों और अंजीरों को खाते थे.

26 शलोमोन की घुड़शाला में चालीस हज़ार घोड़े उनके रथों के इस्तेमाल के लिए थे, जिनके लिए बारह हज़ार घुड़सवार चुने गए थे.

27 ठहराए गए महीने के लिए नियुक्त अधिकारी राजा शलोमोन के लिए ज़रूरी चीज़ों का प्रबंध करते थे, कि शलोमोन और उनके मेहमानों के सामने भोजन परोसा जाता रहे—कमी किसी चीज़ की नहीं होती थी.

28 घोड़ों और तेज चलनेवाले घोड़ों के भोजन के लिए जौ और चारे का इंतजाम करना भी इन्हीं की जवाबदारी थी. वे ज़रूरत के अनुसार ये सब पूरा कर देते थे.

29 परमेश्वर ने शलोमोन को बुद्धि, बहुत ही गहरा विवेक और असाधारण समझ दी थी.

30 शलोमोन की बुद्धि पूर्वी देश के ज्ञानियों और मिस्र देश के विद्वानों की बुद्धि से कहीं बढ़कर थी.

31 कारण यही था कि वह सभी मनुष्यों से अधिक बुद्धिमान थे—एज्रावासी एथन से, हेमान से, कालकोल से और माहोल की संतान दारदा से भी अधिक. आस-पास के सभी देशों में उनकी ख्याति फैल चुकी थी.

32 शलोमोन ने तीन हज़ार नीतिवचन कहे, और उनके द्वारा एक हज़ार पांच गीत भी लिखे गए थे.

33 शलोमोन ने पेड़ों के बारे में अपनी बुद्धि व्यक्त की, लबानोन के देवदार वृक्ष से लेकर दीवार में से उगने वाले जूफ़ा के पौधे के बारे में भी. उन्होंने पशुओं, पक्षियों, रेंगते जंतुओं और मछलियों के बारे में भी अपना ज्ञान प्रकट किया.

34 शलोमोन के ज्ञान की बातें सुनने सभी देशों से लोग आया करते थे. इसके अलावा पृथ्वी के सभी राजाओं के लोग भी उनकी बुद्धि के बारे में सुनकर शलोमोन के बुद्धि से भरे वचन सुनने आते रहते थे.

1 Kings 5:1

1 जब सोर देश के राजा हीराम को यह पता चला कि शलोमोन को उनके पिता दावीद के स्थान पर राजा बनाया गया है, उन्होंने शलोमोन के पास अपने राजदूतों को भेजे, दावीद हमेशा से ही हीराम के प्रिय रहे थे.

2 शलोमोन ने राजा हीराम के लिए यह संदेश भेजा:

3 "आपको यह तो पता ही है कि विभिन्‍न युद्धों में लगे रहने के कारण मेरे पिता दावीद, जब तक सभी शत्रु उनके अधीन न हो गए, तब तक अपने परमेश्वर याहवेह की महिमा के लिए भवन बनाने में असमर्थ ही रहे थे.

4 मगर अब याहवेह, मेरे परमेश्वर ने मुझे हर तरफ़ से शांति दी है. अब न कोई मेरा शत्रु है, और न ही मुझे किसी ओर से किसी जोखिम की कोई आशंका है.

1 Kings 6:1

5 इसलिये जैसा कि याहवेह ने मेरे पिता दावीद से कहा,
‘तुम्हारा पुत्र, जिसे मैं तुम्हारे सिंहासन पर बैठाऊंगा, वही
होगा, जो मेरी महिमा के लिए भवन बनवाएगा.’ मेरी इच्छा है
कि मैं याहवेह मेरे परमेश्वर की महिमा के लिए भवन बनवाऊं.

6 “इसलिये आप अपने सेवकों को आदेश दें कि वे मेरे लिए
लबानोन से देवदार के पेड़ कांटे. इन सेवकों के साथ मेरे
सेवक भी होंगे, और मैं आपके इन सेवकों को आपके द्वारा
तय किया गया वेतन देता जाऊंगा, क्योंकि यह तो आपको
मालूम ही है कि हमारे बीच ऐसा कोई नहीं है, जिसे सीदोनियों
के बराबर लकड़ी का काम आता हो.”

7 शलोमोन के ये वचन सुन हीराम बहुत ही खुश होकर कह
उठा, “आज धन्य हैं याहवेह, जिन्होंने इस बड़े देश पर शासन
के लिए दावीद को एक बुद्धिमान पुत्र दिया है.”

8 तब हीराम ने शलोमोन को यह संदेश भेजा: “आपके द्वारा
भेजा गया संदेश मैंने सुन लिया है. देवदार और सनोवर की
लकड़ी से संबंधित आपके द्वारा कहे गये सब कुछ करने के
लिए मैं तैयार हूं.

9 मेरे सेवक लकड़ी लबानोन से भूमध्य-सागर तक पहुंचा देंगे;
मैं उनके बेड़े बना दूंगा, कि वे समुद्र के मार्ग से आपके द्वारा
ठहराए गए स्थान तक भेजे जा सकें. वहां ये बेड़े खोल दिए
जाएंगे. वहां से आप इन्हें उठा सकेंगे. आपको करना यह
होगा: आप मेरे परिवार के लिए भोजन देकर मेरी भी इच्छा
पूरी कर दीजिए.”

10 शलोमोन ने देवदार और सनोवर की जितनी लकड़ी चाही
उतना हीराम ने दे दी.

11 दूसरी ओर शलोमोन ने हीराम को तीन हज़ार छः सौ टन
गेहूं और चार लाख चालीस हज़ार लीटर शुद्ध ज़ैतून का तेल
भेज दिया. शलोमोन यह हर साल करते रहे.

12 अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार याहवेह ने शलोमोन को बुद्धि से
भर दिया. शलोमोन और हीराम के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध थे.
दोनों ने आपस में वाचा बांध ली थी.

13 राजा शलोमोन ने सारे इस्राएल देश से इस काम के लिए
बेगारी पर पुरुष लगाए, जिनकी कुल संख्या तीस हज़ार हो
गई.

14 इनमें से वह दस हज़ार को पूरे साल में बारी-बारी से हर
महीने लबानोन भेज दिया करते थे. ये कर्मचारी एक महीने
लबानोन में और दो महीने अपने घर में रहते थे, अदोनिरम इन
सभी कर्मचारियों के ऊपर अधिकारी थे.

15 शलोमोन ने पहाड़ी क्षेत्र में सत्तर हज़ार बोझा ढोनेवाले और
अस्सी हज़ार पत्थर का काम करनेवाले चुने थे.

16 इन सबके अलावा पूरे काम को देखने के लिए तीन हज़ार
तीन सौ अधिकारी भी चुने गए थे, कि वे सारी योजना और
कर्मचारियों की गतिविधि पर नज़र रख सकें.

17 राजा के आदेश पर उन्होंने बड़े-बड़े कीमती पत्थर खोद
निकाले, कि इन्हें तराशकर भवन की नींव के लिए इस्तेमाल
किया जा सके.

18 इस प्रकार शलोमोन के कर्मचारियों ने, हीराम के
कर्मचारियों और गिबलियों ने मिलकर भवन बनाने के लिए
लकड़ी और पत्थर तैयार किए.

1 Kings 6:1

1 यह उस समय की बात है, जब इस्राएलियों को मिस्र देश से
निकले हुए चार सौ अस्सी साल हो चुके थे, और इस्राएल पर
शलोमोन के शासन के चार साल. शलोमोन ने साल के ज़ीव
नामक दूसरे महीने में याहवेह के लिए भवन बनाना शुरू
किया.

2 राजा शलोमोन ने यह जो भवन याहवेह के लिए बनाया,
उसकी लंबाई सत्ताईस मीटर और चौड़ाई नौ मीटर ऊंचाई
चौदह मीटर थी.

3 भवन के बीच के द्वार-मंडप की लंबाई भी नौ मीटर थी,
जितनी भवन की चौड़ाई थी. भवन के सामने इसकी गहराई
साढ़े चार मीटर थी.

1 Kings 6:1

4 शलोमोन ने भवन की खिड़कियां आकर्षक जालीदार बनाईं
थी.

5 भवन की बाहरी दीवारों के चारों ओर शलोमोन ने अनेक
कमरों का परिसर बनाया, दोनों ओर पीछे भी.

6 सबसे नीचे का तल सवा दो मीटर चौड़ा था. बीच वाला तल
दो मीटर सत्तर सेंटीमीटर, और तीसरा तीन मीटर पन्द्रह
सेंटीमीटर चौड़ा. उन्होंने भवन की बाहरी दीवार कुर्सीदार
बना दिए थे, कि बोझ उठाती बल्लियों को मूल भवन के भीतर
तक न पहुंचना पड़े.

7 भवन के लिए इस्तेमाल किए गए पत्थरों को वहीं तैयार कर
लिया गया था, जहां से उन्हें निकाला जा रहा था. फलस्वरूप
जब नया भवन बनाया जा रहा था, वहां न तो घन की, न हथौड़े
की और न किसी भी लोहे के औज़ार की आवाज सुनाई दी.

8 बीचवाले तल का प्रवेश भवन के दक्षिण ओर था: जब किसी
को तीसरे तल को जाना होता था, वह सीढ़ियों से चढ़कर
बीचवाले तल पर पहुंचता था, फिर वहां से तीसरे तल को;

9 इस प्रकार शलोमोन ने भवन बनाना समाप्त किया. भवन की
छत उन्होंने देवदार की बल्लियों और पटरियों से बनाई.

10 उन्होंने पूरे भवन के आस-पास छज्जे बनाए, जिसकी
ऊंचाई सवा दो मीटर थी. इन सभी को मूल भवन के देवदार
से जकड़ दिया गया था.

11 यह सब हो जाने पर शलोमोन को याहवेह का यह संदेश
भेजा गया.

12 “तुम जिस भवन को बना रहे हो, उसके संबंध में, यदि तुम
मेरी विधियों का पालन करते रहोगे, और मेरी आज्ञाओं को
पूरा मानोगे और मेरे आदेशों का पालन करोगे, तब मैं तुम्हारे
साथ अपनी वह प्रतिज्ञा पूरी करूंगा, जो मैंने तुम्हारे पिता
दावीद से की थी.

13 मैं इस्राएल वंशजों के बीच रहूंगा और उन्हें छोड़ न दूंगा.”

14 शलोमोन ने भवन बनाना समाप्त किया.

15 फिर उसने भवन की दीवारों के अंदर से देवदार की पटियां
लगवा दीं. उन्होंने भवन की ज़मीन से लेकर भवन की छत तक
दीवारों का अंदरूनी भाग देवदार लकड़ी से ढकवा दिया.
इसके बाद उन्होंने भवन का तल सनोवर की लकड़ी से ढकवा
दिया.

16 शलोमोन ने भवन की पीछे की दीवार से नौ मीटर भीतर
की ओर एक दीवार बनवाई. यह ज़मीन से छत तक देवदार
की बनी हुई थी. इससे एक अंदर का कमरा बन गया. यही
परम पवित्र स्थान था.

17 इसके सामने बीच वाला स्थान अठारह मीटर लंबा था.

18 भवन की दीवारों का अंदरूनी भाग देवदार की लकड़ी से
ढका था, जिस पर कलियां और खिले हुए फूल खुद हुए थे.
सभी कुछ देवदार से ढका था-पत्थर कहीं से भी दिखाई नहीं
पड़ता था.

19 तब उन्होंने अंदरूनी पवित्र स्थान बनवाया. यह भवन के
भीतर था, कि इसमें याहवेह की वाचा का संदूक प्रतिष्ठित
किया जा सके.

20 अंदरूनी कमरे की लंबाई छः मीटर, चौड़ाई छः मीटर और
ऊंचाई भी छः मीटर ही थी. इसे शुद्ध कुन्दन से मढ़ दिया गया
था. उन्होंने देवदार से बनी हुई वेदी को भी मढ़ दिया.

21 शलोमोन ने भवन के भीतरी भाग को शुद्ध कुन्दन से मढ़वा
दिया. तब उन्होंने अंदरूनी पवित्र स्थान के सामने सोने की
सांकलें खींचवा दीं. इसे भी उन्होंने सोने से मढ़वा दिया.

22 पूरे भवन को उन्होंने सोने से मढ़वा दिया. इस प्रकार पूरे
भवन का काम पूरा हुआ. इसके अलावा उन्होंने अंदरूनी
पवित्र स्थान की पूरी वेदी को सोने से मढ़वा दिया.

23 उन्होंने जैतून की लकड़ी से दो करूब बनवाए. हर एक की
ऊंचाई साढ़े चार-साढ़े चार मीटर थी.

24 करूब का एक पंख सवा दो मीटर था और दूसरा पंख भी
सवा दो मीटर का. पहले पंख के छोर से दूसरे पंख के छोर
तक लंबाई साढ़े चार मीटर थी.

25 दूसरा करूब भी साढ़े चार मीटर ऊंचा था. दोनों ही करूबों की नाप बराबर थी.

26 दोनों करूब की ऊंचाई साढ़े चार मीटर थी.

27 शलोमोन ने करूबों को अंदरूनी कमरे के बीच में स्थापित कर दिया. करूबों के पंख फैले हुए थे, जिससे पहले करूब का एक पंख एक दीवार को छू रहा था, तो दूसरे का एक पंख दूसरी दीवार को. इससे भवन के बीच में उनके पंख एक दूसरे को छू रहे थे.

28 शलोमोन ने करूबों को भी सोने से मढ़वा दिया था.

29 इसके बाद शलोमोन ने भवन की दीवारों के भीतर और बाहर और बाहरी पवित्र स्थानों पर करूब, खजूर के पेड़ और खिले हुए फूलों की आकृतियां खुदवा दीं.

30 भवन का फर्श उन्होंने भीतरी और बाहरी पवित्र स्थानों में सोने से मढ़वा दिया.

31 अंदरूनी पवित्र स्थान में प्रवेश के लिए शलोमोन ने जैतून के पेड़ की लकड़ी के दरवाजे बनवाए. इनकी चौखट पांच कोण के थे.

32 उन्होंने जैतून वृक्ष की लकड़ी के दो दरवाजे बनवाए. इन पर उन्होंने करूबों, खजूर के पेड़ों और खिले हुए फूलों की आकृति खुदवाई और फिर इन्हें सोने से मढ़वा दिया. उन्होंने करूबों और खजूर के पेड़ों पर सोने का पत्रक मढ़वा दिया.

33 उन्होंने बीचवाले स्थान में प्रवेश के लिए जैतून की लकड़ी के चौकोर चौखट और

34 दरवाजे उन्होंने सनोवर की लकड़ी के बनवाए. हर एक दरवाजे के दो-दो पल्ले थे, जो मोड़ने पर दोहरे हो जाते थे.

35 इन पर शलोमोन ने करूब, खजूर के पेड़ और खिले हुए पेड़ों की आकृतियां खुदवाईं. इन सभी पर उन्होंने एक बराबर सोने का पत्रक मढ़वा दिया.

36 भीतरी कमरा उन्होंने काटे संवारे गए पत्थरों की तीन पंक्तियों और देवदार की बल्लियों की एक सतह से बनवाया.

37 चौथे साल में याहवेह के भवन की नींव रखी गई थी, यह ज़ीव नाम का महीना था.

38 ग्यारहवें साल में बूल महीने में जो वास्तव में आठवां महीना है, हर तरह से भवन बनने का काम पूरा हो गया था. यह सब हर रीति से योजना के अनुसार ही हुआ था, यानी भवन बनाने के काम में सात साल लग गए थे.

1 Kings 7:1

1 इसी समय शलोमोन अपना महल भी बनवा रहे थे, जिसको बनने में तेरह साल लग गए.

2 उन्होंने लबानोन वन महल जो बनवाया, यह पैंतालीस मीटर लंबा, साढ़े बाईस मीटर चौड़ा और साढ़े तेरह मीटर ऊंचा था. इसमें देवदार के मीनारों की चार पंक्तियां थी, जिन पर देवदार ही की कड़ियां रखी थी.

3 कमरों की छत देवदार पटरियों से ढकी थी, जो पैंतालीस मीनारों पर थी; हर एक पंक्ति में पन्द्रह

4 खिड़कियों की चौखटें तीन पंक्तियों में थी, और खिड़कियां आमने-सामने तीन पंक्तियों में थी.

5 खिड़कियों और दरवाजों के चौखट चौकोर थे और खिड़कियां तीन पंक्तियों में आमने-सामने थी.

6 शलोमोन ने साढ़े बाईस मीटर लंबे और साढ़े तेरह मीटर चौड़े एक कमरे का निर्माण किया. इस कमरे के सामने मीनारों पर रखा छज्जा बनाया गया—एक बरामदा.

7 फिर उन्होंने सिंहासन का कमरा भी बनाया, जहां से वह न्याय करने पर थे. इसे न्याय कक्ष भी कहा गया, इसे भी ज़मीन से छतों तक देवदार की पटरियों से ढक दिया.

8 उनका अपना घर, जहां से वह न्याय करने पर थे, इस कमरे के पीछे बनाया गया. यह भी इसी प्रकार की कलाकृति के

1 Kings 7:1

अनुसार बनाया गया. शलोमोन ने फ़रोह की पुत्री, अपनी विवाहित पत्नी के लिए भी इसी महल के समान महल बनवाया.

9 ये सभी कीमती पत्थरों से बनाए गए थे, जिन्हें सावधानीपूर्वक माप के अनुसार किया गया था; अंदरूनी हिस्सा, बाहरी हिस्सा, नींव से लेकर छत तक, बड़े आंगन तक.

10 नींव के लिए इस्तेमाल किए गए पत्थर बहुत बड़े-बड़े थे जिनकी लंबाई साढ़े चार मीटर और चौड़ाई साढ़े तीन मीटर थी. ये सभी पत्थर कीमती श्रेणी के थे.

11 इनके ऊपर कीमती पत्थर और देवदार के खंभे भी थे.

12 बड़े आंगन में चारों ओर काटी गई चट्टानों की तीन पंक्तियां थी. उसके बाद देवदार की छतों की एक पंक्ति; ठीक ऐसी ही संरचना याहवेह के भवन के भीतरी आंगन और भवन की बीच वाली ड्योढ़ी की थी.

13 राजा शलोमोन ने दूत भेजकर सोर देश से हूराम को बुलवा लिया.

14 हूराम विधवा का पुत्र था, जो नफताली की वंशज थी. हूराम का पिता सोर देश का ही वासी था वह कांसे की धातु का शिल्पी था. उसमें ऐसी बुद्धि और कौशल था कि वह कांसे से किसी भी प्रकार का काम कर सकता था. उसने आकर राजा शलोमोन का सारा काम भार अपने हाथ में ले लिया.

15 उसने कांसे के दो खंभे गढ़े. एक खंभे की ऊंचाई आठ मीटर की थी और इसका घेरा साढ़े पांच मीटर. दूसरा खंभा भी इसी के समान था.

16 उसने ढाले गए कांसे के दो सिर बनाए कि इन्हें खंभों के ऊपर बैठाया जा सके. हर एक सिर की ऊंचाई सवा दो मीटर थी.

17 इसके बाद हूराम ने दोनों ही खंभों के सिरों के लिए कड़ियों में बुनी हुई सात-सात चौकोर जालीदार झालरें बनवाई.

18 इसी प्रकार उसने अनार गढ़े और खंभों के सिरों को ढकने के लिए दो पंक्तियों में अनार लटका दिए.

19 ड्योढ़ी के खंभों के सिरों पर सोसन के फूल उकेरे गए थे. इनकी ऊंचाई लगभग दो मीटर थी.

20 दोनों खंभों पर सिर बैठाए गए थे दोनों खंभों की गोलाकार रचना के ऊपर जालीदार रचना के पास खंभों के सिरों के चारों ओर दो पंक्तियों में दो सौ अनार उकेरे गए थे.

21 उन्होंने मंदिर के बरामदा में खंभे बनाए, एक दक्षिण दिशा में, दूसरा उत्तर दिशा में. दक्षिण खंभे को उन्होंने याकिन नाम दिया और उत्तरी खंभे को बोअज़.

22 खंभों के ऊपरी छोर पर सोसन के फूल उकेरे गए थे. यह सब होने पर खंभों से संबंधित सारा काम पूरा हो गया.

23 शलोमोन ने ढली हुई धातु का एक पानी का हौद बनवाया, जो गोल था और उसका व्यास साढ़े चार मीटर और उसकी ऊंचाई थी सवा दो मीटर इसका कुल घेर था साढ़े तेरह मीटर.

24 इस कुंड की किनारी के नीचे सज्जापूर्ण तुम्बियों की दो पंक्तियां ढाली गई थी; प्रति मीटर बीस तुम्बियों.

25 यह हौद बारह बछड़ों पर रखा, गया था; तीन उत्तर दिशा की ओर मुख किए हुए थे, तीन पश्चिम दिशा की ओर, तीन दक्षिण दिशा की ओर, और तीन पूर्व दिशा की ओर थे. यह हौद इन्हीं पर रखा गया था, और इन सभी के पिछले पैर अंदर की ओर थे.

26 इस कुंड की धातु की मोटाई लगभग आठ सेंटीमीटर थी. इसकी किनारी को वैसा ही आकार दिया गया था जैसा किसी कटोरे को सोसन के फूल के समान आकार दिया गया हो. इस कुंड में लगभग नब्बे हज़ार लीटर जल समाता था.

27 हूराम ने कांसे के दस ठेले बनाए. हर एक ठेले की लंबाई एक मीटर अस्सी सेंटीमीटर, चौड़ाई एक मीटर अस्सी सेंटीमीटर और ऊंचाई एक मीटर पैंतीस सेंटीमीटर थी.

28 इन ठेलों की बनावट इस प्रकार की थी: इनमें ऐसे हिल्ले थे, जो चौखटों में लगाए थे.

1 Kings 7:1

29 चौखटों में लगाए गए इन हिल्लों पर सिंह, बैल और करूबों
की आकृतियां उभरी हुई थी. इन आकृतियां के ऊपर और
नीचे तिरछी झालरें लटकी हुई थी.

30 हर एक ठेले के कांसे के चार-चार पहिये और कांसे की
धुरियां थी. चारों कोनों पर चिलमची रखने का स्थान था. ये
आधार ढाल कर बनाए गए थे. इनके किनारों पर दोनों ओर
झालरें लटक रही थी.

31 ठेलों के भीतर गोलाकार गड्ढा था, जो लगभग आधा मीटर
गहरा था. इसे एक आधार पर रखा गया था, जो लगभग सत्तर
सेंटीमीटर था, जिस पर चित्रकारी की गई थी. ठेले के हिल्ले
गोल नहीं, चौकोर थे.

32 चारों पहिये हिल्लों के नीचे थे, और पहियों की धुरियां ठेलों
की मूल संरचना का ही अंग थी. पहियों की ऊंचाई लगभग
सत्तर सेंटीमीटर थी.

33 इन पहियों को ठीक रथ के पहियों समान गढ़ा गया था;
उनकी धुरियां, नेमियां, आरियां और नाभियां सभी ढाले हुए थे.

34 हर एक ठेले के चारों कोनों पर एक-एक टेक था और यह
टेक ठेले ही का अंग था.

35 ठेले के ऊपरी ओर पर लगभग तेईस सेंटीमीटर चौड़ी गोल
पट्टी लगी हुई थी. ठेले की ऊपरी टेके और हिल्ले धातु के एक
ही टुकड़े से गढ़ गए थे; वे ठेले से जोड़े नहीं गए थे.

36 हूराम ने हिल्लों पर उनकी किनारियों और रिक्त स्थानों पर
करूब, सिंह और खजूर वृक्ष उकेर दिए थे. इन सभी के आस-
पास झालरें उकेरी गई थी.

37 हूराम ने दस ठेले इस प्रकार बनाए. वे सभी एक ही सांचे,
एक ही आकार में ढाले गए थे.

38 हूराम ने कांस्य की दस चिलमचियां भी बनाईं; हर एक में
एक हज़ार आठ सौ लीटर जल समाता था. हर एक चिलमची
लगभग दो मीटर गहरी थी. हर एक ठेले के लिए एक-एक
चिलमची ठहराई गई थी.

39 इसके बाद उन्होंने पांच ठेले भवन के दक्षिण की ओर और
पांच उत्तरी ओर में लगा दिए. उन्होंने कुंड को भवन की
दाहिनी ओर स्थापित कर दिया.

40 यह सब करके हूराम ने चिमचियां, बेलचे और कटोरियां भी
बनाईं. हूराम ने राजा शलोमोन के लिए याहवेह के भवन से
संबंधित सारा काम खत्म कर दिया.

41 दो मीनार, इन मीनारों के ऊपर लगाए गए दो गोलाकार
कंगनियां; खंभे के सिरों के गोलाकार भागों के ऊपर लटकाई
गई जाली;

42 दोनों मीनारों के सिरों पर लगाए गए चार सौ अनार; हर एक
के लिए दो सौ, दो सौ अनार जो खंभों के सिरों पर लगाए गए
थे;

43 दस ठेले; जिन पर टेकों पर रखी गई दस चिलमचियां,

44 और वह एक हौद और उसके नीचे स्थापित किए गए वे
बारह बछड़े और

45 चिलमचियां, बेलचे और कटोरियां. याहवेह के भवन में राजा
शलोमोन के लिए हूराम ने जितने भी बर्तन बनाए थे, वे सभी
रगड़कर चमकाए गए कांसे के थे.

46 राजा ने इनकी ढलाई यरदन घाटी में, जो सुक्कोथ और
ज़ारेथान में है, मिट्टी के सांचों में ढाल कर की थी.

47 शलोमोन ने इन्हें तोलना सही न समझा क्योंकि ये सब
संख्या में बहुत ही ज्यादा थे; कांसे को मापना संभव न था.

48 इस प्रकार शलोमोन ने याहवेह के भवन में इस्तेमाल के
लिए ठहराए गए सभी बर्तनों का निर्माण पूरा किया: सोने की
वेदी, भेंट की रोटी के लिए ठहराई गई सोने की मेज़,

49 अंदरूनी कमरे के सामने शुद्ध कुन्दन के दीवट; पांच
दक्षिण दिशा में और पांच उत्तर दिशा में, सोने के फूल, दीपक
और चिमटे, बर्तन;

1 Kings 8:1

50 कुन्दन के ठहराए गए बर्तन; अंदरूनी कमरा परम पवित्र
स्थान के दरवाजों के लिए सोने के ही कब्जे और बीचवाले
भवन के दरवाजों के लिए सोने के कब्जे.

51 इस प्रकार याहवेह के भवन का सारा काम, जो राजा
शलोमोन ने शुरू किया था, पूरा हुआ. तब शलोमोन अपने
पिता दावीद द्वारा भेंट की हुई वस्तुएं मंदिर में ले आए. उन्होंने
चांदी, सोना और सारे बर्तन परमेश्वर के भवन के खजाने में
इकट्ठा कर दिए.

1 Kings 8:1

1 राजा शलोमोन ने येरूशलेम में इस्राएल के सभी पुरनियों
को, गोत्र प्रमुखों और पूर्वजों के परिवारों के प्रधानों को
आमंत्रित किया. ये सभी राजा शलोमोन के सामने येरूशलेम
में इकट्ठे हो गए, कि याहवेह की वाचा के संदूक को दावीद
के नगर अर्थात् ज़ियोन से लाया जा सके.

2 सातवें महीने, एथनिम नामक महीने में, उस उत्सव के
अवसर पर, सारी इस्राएली प्रजा राजा शलोमोन के सामने
इकट्ठी हुई.

3 तब इस्राएल के सभी प्राचीन सामने आए, और पुरोहितों ने
संदूक को उठाया.

4 पुरोहित और लेवी याहवेह के संदूक, मिलापवाला तंबू और
उसमें रखे हुए सभी पवित्र बर्तन अपने साथ ले आए थे.

5 राजा शलोमोन और इस्राएल की सारी सभा, जो उस समय
उनके साथ वहां संदूक के सामने इकट्ठी हुई थी, इतनी बड़ी
संख्या में भेड़ें और बछड़े बलि कर रहे थे, कि उनकी गिनती
असंभव हो गई.

6 इसके बाद पुरोहितों ने याहवेह की वाचा के संदूक को
लाकर उसके लिए निर्धारित स्थान पर, भवन के भीतरी कमरे
में, परम पवित्र स्थान में करूबों के पंखों के नीचे रख दिया,

7 क्योंकि करूब संदूक के लिए तय स्थान पर अपने पंख
फैलाए हुए थे. यह ऐसा प्रबंध था कि करूबों के पंख संदूक
को उसके उठाने के लिए बनाई गई बल्लियों को आच्छादित
करें.

8 ये डंडे इतने लंबे थे, कि संदूक के इन डंडों को भीतरी कमरे
से देखा जा सकता था, मगर इसके बाहर से नहीं. आज तक वे
इसी स्थिति में हैं.

9 संदूक में पत्थर के उन दो पट्टियों के अलावा कुछ न था, जिन्हें
मोशेह ने होरेब पर्वत पर उसमें रख दी थी, जहां याहवेह ने
इस्राएल से वाचा बांधी थी, जब वे मिस्र देश से बाहर आए थे.

10 जैसे ही पुरोहित पवित्र स्थान से बाहर आए, याहवेह के
भवन में बादल समा गया.

11 इसके कारण अपनी सेवा पूरी करने के लिए पुरोहित वहां
ठहरे न रह सके, क्योंकि याहवेह के तेज से अपना भवन भर
गया था.

12 तब शलोमोन ने यह कहा: “याहवेह ने यह प्रकट किया है
कि वह घने बादल में रहना सही समझते हैं.

13 निश्चय आपके लिए मैंने एक ऐसा भव्य भवन बनवाया है,
कि आप उसमें हमेशा रहें.”

14 यह कहकर राजा ने सारी इस्राएली प्रजा की ओर होकर
उनको आशीर्वाद दिया, इस अवसर पर सारी इस्राएली सभा
खड़ी हुई थी.

15 राजा ने उन्हें कहा: “याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर, जिन्होंने
अपने हाथों से वह पूरा कर दिखाया, जो उन्होंने अपने मुख से
मेरे पिता दावीद से कहा था,

16 ‘जिस दिन से मैंने अपनी प्रजा इस्राएली गोत्रों में से किसी
भी नगर को इस उद्देश्य से नहीं चुना कि वहां मेरा नाम
प्रतिष्ठित हो. हां, मैंने दावीद को अपनी प्रजा इस्राएल का
शासक होने के लिए चुना.’

17 “मेरे पिता दावीद की इच्छा थी कि वह याहवेह, इस्राएल के
परमेश्वर की महिमा के लिए एक भवन बनवाएं.

18 किंतु याहवेह ने मेरे पिता दावीद से कहा, ‘तुम्हारे मन में मेरे
लिए भवन के निर्माण का आना एक उत्तम विचार है;

1 Kings 8:1

19 फिर भी, इस भवन को तुम नहीं, बल्कि वह पुत्र, जो तुमसे
पैदा होगा, मेरी महिमा के लिए वही भवन बनाएगा.'

20 "आज याहवेह ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की है. क्योंकि अब,
जैसे याहवेह ने प्रतिज्ञा की थी, और मैंने याहवेह इस्राएल के
परमेश्वर की महिमा के लिए इस भवन को बनवाया है.

21 इसमें मैंने संदूक के लिए स्थान निर्धारित किया है, जिसमें
हमारे पूर्वजों से बांधी गई याहवेह की वाचा रखी है; वह वाचा,
जो उन्होंने उनसे उस समय बांधी थी, जब उन्होंने उन्हें मिस्र
देश से निकाला था."

22 इसके बाद शलोमोन सारी इस्राएल सभा के देखते हाथों को
स्वर्ग की ओर फैलाकर याहवेह की वेदी के सामने खड़े हो
गए.

23 उस समय उनके वचन ये थे: "याहवेह इस्राएल के परमेश्वर,
आपके तुल्य परमेश्वर न तो कोई ऊपर स्वर्ग में है, और न यहां
नीचे धरती पर, जो अपने उन सेवकों पर अपना अपार प्रेम
दिखाते हुए अपनी वाचा को पूर्ण करता है, जिनका जीवन
आपके प्रति पूरी तरह समर्पित है.

24 आपने अपने सेवक, मेरे पिता दावीद को जो वचन दिया था,
उसे पूरा किया है. आज आपने अपने शब्द को सच्चाई में
बदल दिया है. आपके सेवक दावीद से की गई अपनी वह
प्रतिज्ञा पूरी करें, जो आपने उनसे इन शब्दों में की थी.

25 "अब इस्राएल के परमेश्वर, याहवेह, आपके सेवक मेरे पिता
दावीद के लिए अपनी यह प्रतिज्ञा पूरी कीजिए. 'मेरे सामने
इस्राएल के सिंहासन पर तुम्हारे उत्तराधिकारी की कोई कमी
न होगी, सिर्फ यदि तुम्हारे पुत्र सावधानीपूर्वक मेरे सामने
अपने आचरण के विषय में सच्चे रहें; ठीक जिस प्रकार
तुम्हारा आचरण मेरे सामने सच्चा रहा है.'

26 इसलिये अब, इस्राएल के परमेश्वर अपने सेवक, मेरे पिता
दावीद से की गई प्रतिज्ञा पूरी कीजिए.

27 "मगर क्या वास्तव में परमेश्वर पृथ्वी पर रहेंगे? स्वर्ग, हां,
सबसे ऊंचा स्वर्ग भी आपको समाकर नहीं रख सकता, तो
भला मेरे द्वारा बनाए गए भवन में यह कैसे संभव हो सकता
है!

28 फिर भी अपने सेवक की विनती और प्रार्थना का ध्यान
रखिए. याहवेह, मेरे परमेश्वर, इस दोहाई को, इस
गिड़गिड़ाहट को सुन लीजिए, जो आपका सेवक आपके
सामने आज प्रस्तुत कर रहा है,

29 कि इस भवन की ओर आपकी दृष्टि रात और दिन लगी रहे.
इस भवन पर, जिसके विषय में आपने कहा था, 'मेरी प्रतिष्ठा
वहां बनी रहेगी,' कि आप उस प्रार्थना को सुन सकें, जो
आपका सेवक इस ओर होकर कर रहा है.

30 अपने सेवक और अपनी प्रजा इस्राएल की विनती सुन
लीजिए, जब वे इस स्थान की ओर मुंह कर आपसे करते हैं,
और स्वर्ग, अपने घर में इसे सुनें और जब आप यह सुनें, आप
उन्हें क्षमा प्रदान करें.

31 "जब कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी के विरुद्ध पाप करता है,
और उसे शपथ लेने के लिए विवश किया जाता है और वह
आकर इस भवन में आपकी वेदी के सामने शपथ लेता है,

32 तब आप स्वर्ग से सुनें, और अपने सेवकों का न्याय करें,
दुराचारी का दंड उसके दुराचार को उसी पर प्रभावी करने के
द्वारा दें, और सदाचारी को उसके सदाचार का प्रतिफल देने
के द्वारा.

33 "जब आपकी प्रजा इस्राएल उनके शत्रुओं द्वारा इसलिये
हार जाती है, कि उन्होंने आपके विरुद्ध पाप किया है और वे
दोबारा आपकी ओर लौट आते हैं, आपके नाम की दोहाई देते
हुए प्रार्थना करते हैं, और इस भवन में आपसे विनती करते हैं,

34 तब स्वर्ग से यह सुनकर अपनी प्रजा इस्राएल का पाप क्षमा
कर दीजिए, और उन्हें उस देश में लौटा ले आइए, जो आपने
उन्हें और उनके पूर्वजों को दिया है.

35 "जब आप बारिश इसलिये रोक दें कि आपकी प्रजा ने
आपके विरुद्ध पाप किया है और फिर, जब वे इस स्थान की
ओर फिरकर प्रार्थना करें और आपके प्रति सच्चे हो, जब आप
उन्हें सताएं, और वे पाप से फिर जाएं;

36 तब स्वर्ग में अपने सेवकों और अपनी प्रजा इस्राएल की
दोहाई सुनकर उनका पाप क्षमा कर दें. आप उन्हें उन अच्छे
मार्ग पर चलने की शिक्षा दें. फिर अपनी भूमि पर बारिश भेजें;

1 Kings 8:1

उस भूमि पर जिसे आपने उत्तराधिकार के रूप में अपनी प्रजा
को प्रदान किया है.

37 “जब देश में अकाल का प्रकोप हो जाए, यदि यहां महामारी
हो जाए, पाला पड़े, अथवा उपज में गेरुआ रोग लग जाए,
टिड्डियों अथवा इल्लियों का आक्रमण हो जाए, यदि शत्रु उन्हीं
के देश में, उन्हीं के द्वार के भीतर उन्हें बंदी बना ले, कोई भी
महामारी हो, कोई भी व्याधि हो,

38 कैसी भी प्रार्थना की जाए, किसी भी व्यक्ति या सारे इस्राएल
देश द्वारा हर एक अपनी हृदय वेदना को पहचानते हुए जब
अपना हाथ इस भवन की ओर बढ़ाए,

39 तब अपने घर स्वर्ग में यह सुनकर क्षमा प्रदान करें, और हर
एक को, जिसके हृदय को आप जानते हैं, उसके सभी कामों
के अनुसार प्रतिफल दें; क्योंकि आप—सिर्फ आप—हर एक
मानव हृदय को जानते हैं,

40 कि वे इस देश में जो आपने उनके पूर्वजों को प्रदान किया
है, रहते हुए आपके प्रति आजीवन श्रद्धा बनाए रखें.

41 “इसी प्रकार जब कोई परदेशी, जो आपकी प्रजा इस्राएल
में से नहीं है, आपका नाम सुनकर दूर देश से यहां आता है,

42 क्योंकि आपकी महिमा आपके महाकार्य और आपकी
महाशक्ति के विषय में सुनकर वे यहां ज़रूर आएंगे; तब, जब
वह विदेशी यहां आकर इस भवन की ओर होकर प्रार्थना करे,

43 अपने आवास स्वर्ग में सुनकर उन सभी विनतियों को पूरा
करें, जिसकी याचना उस परदेशी ने की है, कि पृथ्वी के सभी
मनुष्यों को आपकी महिमा का ज्ञान हो जाए, उनमें आपके
प्रति भय जाग जाए; जैसा आपकी प्रजा इस्राएल में है, और
उन्हें यह अहसास हो जाए कि यह आपकी महिमा में मेरे द्वारा
बनाया गया भवन है.

44 “जब आपकी प्रजा अपने शत्रु के विरुद्ध बाहर जाए, चाहे
आप उन्हें किसी भी मार्ग से भेजें; जब वे आपके द्वारा चुने गए
इस नगर और मेरे द्वारा आपकी महिमा में बनाए गए इस भवन
की ओर होकर, हे प्रभु याहवेह, आपसे प्रार्थना करें,

45 तब स्वर्ग में उनकी प्रार्थना और अनुरोध सुनकर उनके पक्ष
में निर्णय की जायें.

46 “यदि वे आपके विरुद्ध पाप करें—क्योंकि ऐसा कोई भी
नहीं जो पाप नहीं करता—और आप उन पर क्रुद्ध हो जाएं,
और उन्हें शत्रु के अधीन कर दें कि उन्हें बंदी बनाकर शत्रु के
देश ले जाया जाए, दूर देश अथवा निकट,

47 फिर भी यदि वे उस बंदिता के देश में चेत कर पश्चाताप
करें, और अपने बंधुआई के देश में यह कहते हुए दोहाई दें,
‘हमने पाप किया है, हमने कुटिलता और दुष्टता भरे काम किए
हैं,’

48 यदि वे अपने शत्रुओं के देश में ही, जिन्होंने उन्हें बंदी बना
रखा है, पूरे मन और पूरे हृदय से पश्चाताप करें, अपने देश की
ओर होकर प्रार्थना करें, जो देश आपने उनके पूर्वजों को दिया
है, इस नगर की ओर, जिसे आपने चुना है और जो भवन मैंने
आपकी महिमा में बनवाया है,

49 तब अपने घर स्वर्ग में उनकी प्रार्थना सुन लीजिए और
उनका न्याय कीजिए,

50 और अपनी प्रजा को क्षमा कीजिए, जिन्होंने आपके विरुद्ध
पाप किया है. उन्हें उनकी दृष्टि में कृपा प्रदान करें, जिन्होंने
उन्हें बंदी बना रखा है, कि वे उनकी कृपा के पात्र हो जाएं.

51 क्योंकि वे आप ही के लोग हैं, आप ही की संपत्ति, जिन्हें आप
मिस्र देश से, लोहा गलाने की भट्टी में से, निकालकर लाए हैं.

52 “आपकी आंखें आपके सेवक की और आपकी प्रजा
इस्राएल की प्रार्थना के लिए खुली रहें कि वे जब भी आपको
पुकारें, आप उनकी सुन लें.

53 प्रभु याहवेह, जैसा आपने अपने सेवक मोशेह के द्वारा भेजा,
जब आप हमारे पूर्वजों को मिस्र देश से बाहर ला रहे थे, आपने
इन्हें विश्व के सभी जनताओं से अलग किया कि वे आपके
मीरास होकर रहें.”

54 जब शलोमोन यह प्रार्थना और विनती याहवेह से कर चुके,
वह याहवेह की वेदी के सामने से उठे, जहां वह घुटने टेक
स्वर्ग की ओर अपने हाथ बढ़ाए हुए थे,

1 Kings 9:1

55 उन्होंने खड़े होकर पूरी इस्राएली सभा के लिए ऊंची
आवाज में ये आशीर्वाद दिया:

56 "धन्य हैं याहवेह, जिन्होंने अपनी सभी प्रतिज्ञाओं के अनुसार
अपनी प्रजा इस्राएल को शांति दी है. उनके सेवक मोशेह द्वारा
दी गई उनकी सभी भली प्रतिज्ञाओं में से एक भी पूरी हुई बिना
नहीं रही है.

57 याहवेह हमारे परमेश्वर हमारे साथ रहें, जैसे वह हमारे
पूर्वजों के साथ रहे थे. ऐसा कभी न हो कि वह हमें त्याग दें, हमें
भुला दें,

58 कि वह हमारे हृदय अपनी ओर लगाए रखें, कि हम उन्हीं
के मार्गों पर चलें और उनके आदेशों, नियमों और विधियों का
पालन करें; जिन्हें उन्होंने हमारे पूर्वजों को सौंपा था.

59 मेरे ये शब्द, जिन्हें मैंने याहवेह तक अपनी विनती करने के
लिए इस्तेमाल किया है, रात-दिन याहवेह, हमारे परमेश्वर के
निकट बने रहें और दिन की आवश्यकता के अनुसार वह
अपने सेवक और अपनी प्रजा इस्राएल के पक्ष में अपना निर्णय
दें,

60 कि पृथ्वी पर सभी को यह मालूम हो जाए कि याहवेह ही
परमेश्वर हैं, दूसरा कोई नहीं.

61 तुम्हारा हृदय याहवेह हमारे परमेश्वर के प्रति पूरी तरह
सच्चा बना रहे, और तुम उनके नियमों और उनके आदेशों को
पालन करते रहो—जैसा तुम यहां आज कर रहे हो."

62 तब राजा और सारे इस्राएल ने उनके साथ याहवेह के
सामने बलि चढ़ाई.

63 शलोमोन ने 22,000 बछड़े और 1,20,000 भेड़ें मेल बलि
के रूप में चढ़ाईं. इस प्रकार राजा और सारी इस्राएल प्रजा ने
याहवेह के भवन को समर्पित किया.

64 उसी समय राजा ने याहवेह के भवन के सामने के बीचवाले
आंगन को समर्पित किया, क्योंकि उसी स्थान पर उन्होंने
होमबलि, अन्नबलि और मेल बलि की चर्बी के लिए वह कांसे
की वेदी बहुत ही छोटी पड़ रही थी.

65 शलोमोन ने इस अवसर पर एक भोज दिया. इसमें सारा
इस्राएल शामिल हुआ. यह बहुत ही बड़ा सम्मेलन था, जिसमें
लेबो हामाथ से लेकर मिस्र देश की नदी तक से लोग आए हुए
थे. वे याहवेह, हमारे परमेश्वर के सामने सात दिन तक रहे.

66 आठवें दिन राजा ने सभा को विदा किया. प्रजा ने राजा के
लिए शुभकामनाओं के शब्द कहे और बहुत ही आनंद के
साथ अपने-अपने घर लौट गए. उनके आनंद का विषय था
याहवेह द्वारा उनके सेवक दावीद और उनकी प्रजा इस्राएल
के ऊपर दिखाई गई दया.

1 Kings 9:1

1 जब शलोमोन ने याहवेह के भवन, राजमहल और जो कुछ
भी करने की योजना बनाई थी, और उसे पूरा कर चुके,

2 तब याहवेह दूसरी बार शलोमोन के सामने प्रकट हुए, ठीक
उसी प्रकार जिस प्रकार वह उनके सामने गिबयोन में प्रकट
हुए थे.

3 याहवेह ने उनसे कहा, "जो प्रार्थना तुमने मेरे सामने की है,
वह मैंने सुन ली है. तुम्हारे द्वारा बनाए इस भवन को सदा-
सर्वदा के लिए अपना नाम लगाने के द्वारा पवित्र बना लिया है,
कि इस स्थान पर मेरी महिमा हमेशा बनी रहे, और मेरी दृष्टि
और मेरा हृदय हमेशा यहीं लगे रहें.

4 "तुम्हारे बारे में मुझे यह कहना है: यदि तुम मेरे सामने चलते
रहोगे, जैसे तुम्हारे पिता दावीद हृदय की सच्चाई और सरलता
में चलते रहे, यदि तुम उन सभी आदेशों का पालन करते रहो,
जो मैंने तुम्हें दिए हैं, और उन सभी नियमों और आदेशों का
पालन करते रहो,

5 तब तुम्हारे पिता दावीद से की गई इस प्रतिज्ञा के अनुसार,
'इस्राएल के सिंहासन को स्थिर करूंगा, और इस्राएल के
सिंहासन पर बैठने के लिए तेरे वंश में पुरुष का अभाव न
होगा.'

6 "यदि तुम और तुम्हारे वंशज मेरे उन सभी नियमों और
आदेशों का अनुसरण करना छोड़ दो, जो मैंने तुम्हारे सामने
रखे हैं, और जाकर अन्य देवताओं की सेवा और आराधना
करने लगो,

1 Kings 9:1

7 तब उस देश से, जो मैंने उन्हें दिया, इस्राएल को अलग कर
दूंगा और उस भवन को, जो मैंने अपनी महिमा के लिए
प्रतिष्ठित किया है, अपनी दृष्टि से दूर कर दूंगा, फलस्वरूप
इस्राएल तब सभी लोगों के बीच उपहास और निंदा का पात्र
बन जाएगा.

8 यह भवन खंडहरों का ढेर होकर रह जाएगा. तब हर एक
व्यक्ति, जो उनके पास से होकर जाएगा, चकित हो सांस
ऊपर खींच यह कह उठेंगे, 'क्यों उन्होंने याहवेह अपने
परमेश्वर को भुला दिया था.

9 याहवेह, जिन्होंने उनके पूर्वजों को मिस्र देश से बाहर
निकाल लाया था. अब उन्होंने अन्य देवताओं का अनुसरण
करने का निश्चय किया. उन्होंने उन देवताओं की सेवा और
पूजा करनी आरंभ की. यही कारण है याहवेह ने उन पर यह
सारी घोर विपत्ति डाल दी है.' "

10 बीस साल खत्म होते-होते शलोमोन याहवेह का भवन और
राजमहल बना चुके थे.

11 तब तक सोर देश के राजा हीराम शलोमोन की इच्छा
अनुसार देवदार और सनोवर की लकड़ी और सोने की
आपूर्ति करते रहे. राजा शलोमोन ने हीराम को गलील क्षेत्र में
बीस नगर दे दिए.

12 किंतु जब हीराम ने आकर उन नगरों को देखा, उन्हें खुशी
नहीं हुई.

13 उन्होंने शलोमोन से कहा, "मेरे भाई, तुमने मुझे ये कैसे नगर
दे दिए हैं?" इसलिये आज तक वे नगर काबूल के नाम से जाने
जाते हैं

14 हीराम शलोमोन को लगभग चार हज़ार किलो सोना भेज
चुके थे.

15 शलोमोन ने जिन लोगों को ज़बरदस्ती काम पर लगाया था,
उसका लेखा इस प्रकार है: उन्होंने याहवेह का भवन और
राजमहल, मिल्लो, और येरूशलेम की शहरपनाह, और
हाज़ोर, मगिद्दो और गेज़ेर नगर को बनाने का काम किया.

16 मिस्र देश के राजा फ़रोह ने गेज़ेर नगर को अपने अधीन
कर उसे भस्म कर दिया था. उन्होंने वहां रह रहे कनान मूल
के वासियों को मारकर नगर को भस्म कर दिया. फिर उसने
यह नगर दहेज के रूप में अपनी पुत्री को दे दिया, जो
शलोमोन की पत्नी थी.

17 तब शलोमोन ने गेज़ेर नगर को दोबारा से बसाया तथा घाटी
क्षेत्र में बेथ-होरोन,

18 बालाथ और मरुभूमि में स्थित तादमोर को भी बसाया.

19 उन्होंने दूसरे भण्ड़ार नगरों को भी बनवाया जहां उनके रथ,
घोड़े और घुड़सवार रखे गए थे. इनके अलावा उन्होंने
येरूशलेम, लबानोन और सारे देश में अपनी इच्छा के
अनुसार भवन बनवाए.

20 शलोमोन ने इन सभी को ज़बरदस्ती दास बनाकर निर्माण
काम में लगा दिया; अमोरी, हित्ती, परिज्ज़ी, हिव्वी और यबूसी.
(ये इस्राएली नहीं थे.)

21 उनकी संतानों को भी शलोमोन ने दास बना लिये, जो उनके
बाद उस देश में बचे रह गए थे, जिन्हें इस्राएली वध न कर सके
थे; ये सब आज भी दास ही हैं.

22 मगर शलोमोन ने किसी भी इस्राएली को दास नहीं बनाया.
वे सैनिक बनाए जाते थे, उन्हें सैन्य अधिकारी बनाया जाता था:
योद्धा, कप्तान, रथ हाकिम और घुड़सवार.

23 सभी कामों के ऊपर शलोमोन ने 550 प्रमुख अधिकारी
ठहरा दिए थे. ये सभी पद श्रमिकों के अधिकारी थे, जो भवन
बनाने के काम में लगे हुए थे.

24 जब फ़रोह की पुत्री दावीद-नगर छोड़कर उस राजमहल
में आ गई, जो शलोमोन द्वारा बनवाया गया था, तब शलोमोन
ने उसके किए मिल्लो को बनवा दिया.

25 राजा शलोमोन साल में तीन बार उस वेदी पर होम और मेल
बलि चढ़ाते थे, जो उन्होंने याहवेह के लिए बनाई थी. इस पर
वह धूप जलाकर याहवेह के सामने की वेदी पर बलि चढ़ाते
थे. इस प्रकार उन्होंने भवन निर्माण समाप्त किया.

26 राजा शलोमोन ने एज़िओन-गेबेर में जलयानों का एक बेड़ा बनाया था. यह स्थान एदोम प्रदेश में लाल सागर के तट पर एलाथ नामक स्थान के पास है.

27 राजा हीराम ने बेड़े के साथ अपने सेवक भेज दिए. इनमें ऐसे सेवक थे, जिन्हें समुद्र का ज्ञान था. इनके साथ शलोमोन के सेवक भी थे.

28 ये सभी ओफीर नगर को गए और वहां से वे लगभग चौदह हज़ार किलो सोना लेकर लौटे. उन्होंने यह शलोमोन को भेंट कर दिया.

1 Kings 10:1

1 जब शीबा की रानी ने याहवेह के नाम के कारण शलोमोन को मिली ख्याति सुनी, वह कठिन प्रश्नों से उन्हें परखने के लिए आईं.

2 जब वह येरूशलेम पहुंची, उनके साथ एक बड़ा कर्मचारी दल, ऊंटों पर मसाले और बड़ी मात्रा में सोना और कीमती पत्थर थे. जब उनकी भेंट शलोमोन से हुई, उन्होंने शलोमोन के सामने वह सब कह डाला, जो उनके मन में था.

3 शलोमोन ने उनके सभी सवालों के जवाब दिए, ऐसा कुछ भी न था जो राजा के ज्ञान के बाहर था, जो वह समझा न सके.

4 जब शीबा की रानी शलोमोन की पूरी बुद्धिमानी को परख चुकीं और उनके द्वारा बनाया भवन,

5 उनकी मेज़ पर परोसा गया भोजन, उनके कर्मचारियों के बैठने की व्यवस्था, उनके सेवकों द्वारा की गई सेवा, उनके कपड़े, उनके पिलाने वाले और याहवेह के भवन में चढ़ाई गई होमबलियां देख वह हैरान रह गईं.

6 उन्होंने राजा से कहा, "आपकी प्रजा और आपकी बुद्धिमानी के बारे में जो मैंने अपने देश में सुना था, वह सच था.

7 मगर मैंने उन समाचारों का विश्वास ही नहीं किया, जब तक मैंने खुद आकर अपनी ही आंखों से यह सब देख न लिया. सच तो यह है कि मुझे तो इसका आधा भी न बताया गया था. आपकी बुद्धि और समृद्धि उस महिमा से कहीं बढ़कर है जो मेरे सामने वर्णन की गयी थी.

8 कैसे सुखी हैं आपके लोग और आपके ये सेवक, जो सदा आपके सामने रहते हैं, और आपकी बुद्धिमानी की बातें सुनते रहते हैं!

9 धन्य हैं याहवेह, आपके परमेश्वर, आप पर जिनकी कृपादृष्टि है, जिन्होंने आपको इस्राएल के सिंहासन पर बैठाया है. याहवेह हमेशा से इस्राएल से प्रेम करते आए हैं, इसलिये उन्होंने आपको राजा के पद पर रखा है, कि आप न्याय और धर्म के साथ शासन करें."

10 उन्होंने राजा को भेंट में लगभग चार हज़ार किलो सोना और बड़ी मात्रा में मसाले और कीमती पत्थर दे दिए; इतनी मात्रा में मसाले फिर कभी नहीं आए, जितने शीबा की रानी ने राजा शलोमोन को भेंट में दिए थे.

11 इसके अलावा हीराम के जो जहाज़ ओफीर देश से सोना लाए थे, वही जहाज़ ओफीर देश से बड़ी मात्रा में चन्दन की लकड़ी और कीमती पत्थर लेकर आए,

12 जिस लकड़ी से राजा शलोमोन ने याहवेह के भवन के लिए और राजमहल के लिए खंभे और गायकों के लिए वीणा और सारंगियां बना दिए. ऐसी चन्दन की लकड़ी देखी न गई, क्योंकि फिर इसे लाया ही नहीं गया.

13 राजा शलोमोन ने अपने खजाने में से शीबा की रानी को अपनी राजकीय उदारता के अनुसार दे दिया. इसके अलावा उन्होंने शीबा की रानी को उसकी इच्छा और विनती के अनुसार भी दे दिया. वह अपने सेवकों को लेकर अपने देश लौट गईं.

14 शलोमोन को हर साल लगभग बाईस हज़ार किलो सोना मिलता था.

15 यह राजकीय खजाने में व्यापारियों, यात्रियों, पश्चिमी देशों के राजाओं द्वारा दिए गए धन और देश के ही राज्यपालों द्वारा प्राप्त कर धन से इकट्ठा धन के अलावा था.

1 Kings 11:1

16 राजा शलोमोन ने पीटे हुए सोने की 200 विशाल ढालों को
बनवाया. हर एक ढाल में लगभग सात किलो सोना लगाया
गया था.

17 शलोमोन ने पीटे हुए सोने से 300 ढालों को भी बनवाया.
हर एक ढाल में लगभग साढ़े तीन किलो सोना लगाया गया था.
इन सभी को राजा ने लबानोन वन महल में रख दिया.

18 राजा ने हाथी-दांत का एक सिंहासन भी बनवाया और उसे
शुद्ध सोने से मढ़ दिया.

19 सिंहासन की छः सीढ़ियां थी, और इसके पीछे एक गोल
शीर्ष थी. सिंहासन के दोनों ओर दो हत्थे थे और उन्हीं से लगे
हुई दोनों ओर खड़े हुए शेर गढ़े गए थे.

20 हर एक सीढ़ी के दोनों ओर खड़े हुए शेर गढ़े गए थे, कुल
मिलाकर बारह शेर थे. इसके समान सिंहासन और किसी
राज्य में नहीं बनवाया गया था.

21 राजा शलोमोन के पीने के सारे बर्तन सोने के थे. लबानोन
वन भवन में इस्तेमाल किए जानेवाले बर्तन शुद्ध सोने के थे.
चांदी कहीं भी इस्तेमाल नहीं हुई थी क्योंकि शलोमोन के
शासनकाल में चांदी की कोई कीमत ही न थी.

22 तरशीश के सागर में राजा हीराम के साथ जहाजों का एक
समूह था. हर तीन साल में तरशीश के जहाज़ वहां सोना, चांदी,
हाथी-दांत, बन्दर और मोर लेकर आते थे.

23 इस प्रकार राजा शलोमोन पृथ्वी के सभी राजाओं से धन
और बुद्धि में बहुत बढ़कर थे.

24 सारी पृथ्वी उसकी बुद्धिमानी की बातें, जो परमेश्वर ने
उसके मन में दीं थी, सुनने के लिए उनके सामने जाने की
इच्छा रखती थी.

25 हर साल सभी देखनेवाले अपने साथ चांदी और सोने की
वस्तुएं, कपड़े, हथियार, मसाले, घोड़े और खच्चर भेंट देने के
लिए लाया करते थे.

26 शलोमोन ने अब तक एक हज़ार चार सौ रथ, बारह हज़ार
घुड़सवार एकत्र कर लिए थे. इन सबको उसने रथों के लिए
बनाए नगरों और येरूशलेम में राजा के लिए ठहराए गए
स्थानों पर रखवा दिया था.

27 राजा द्वारा येरूशलेम में चांदी का मूल्य वैसा ही कर दिया
गया था, जैसा पत्थरों का होता है, और देवदार की लकड़ी का
ऐसा जैसे तराई के गूलर के पेड़ों का.

28 शलोमोन घोड़ों का आयात मिस्र और कवे से करते थे. राजा
के व्यापारी इन्हें दाम देकर कवे से लाया करते थे.

29 लाए गए एक रथ की कीमत होती थी चांदी के छः सौ
सिक्के. राजा के व्यापारी इसी प्रकार इनका निर्यात सभी हित्ती
और अरामी राजाओं को कर देते थे.

1 Kings 11:1

1 फ़रोह की पुत्री के अलावा शलोमोन को अनेक विदेशी
स्त्रियों से प्रेम हो गया था: मोआबी, अम्मोनी, एदोमी, सीदोनी,
और हित्ती स्त्रियों से.

2 ये वे राष्ट्र थे, जिनके विषय में याहवेह ने इस्राएल को चेतावनी
देते हुए कहा था, "तुम न तो उन जनताओं से कोई वैवाहिक
संबंध रखना, और न उनका ही तुम्हारे साथ किसी प्रकार का
संबंध हो, क्योंकि यह तय है कि वे तुम्हारा हृदय अपने
देवताओं की ओर लगा ही लेंगे." शलोमोन को इन स्त्रियों से
गहरा प्रेम हो गया था.

3 शलोमोन ने सात सौ राजकुमारियों से विवाह किया और
उनकी तीन सौ उपपत्नियां थी! उनकी पत्नियों ने उनका हृदय
परमेश्वर से दूर कर दिया.

4 क्योंकि जब शलोमोन की उम्र ढलने लगी, उनकी पत्नियों ने
उनका हृदय पराए देवताओं की ओर कर दिया; उनका हृदय
याहवेह, उनके परमेश्वर के लिए पूरी तरह सच्चा नहीं रह गया,
जैसे उनके पिता दावीद का था.

5 शलोमोन ने सीदोनिवासियों की देवी अश्तोरेथ और
अम्मोनियों के घृणित देवता मिलकाम की आराधना करनी
शुरू कर दी.

1 Kings 11:1

6 यह करते हुए शलोमोन ने वह किया जो याहवेह की दृष्टि में
गलत था. अब वह पूरी तरह याहवेह के मार्गों पर नहीं चल रहे
थे, जैसा दावीद, उनके पिता ने किया था.

7 शलोमोन ने येरूशलेम की पूर्वी पहाड़ी पर मोआब देश के
घृणित देवता खेमोश और अम्मोनियों के घृणित देवता मोलेख
के आदर में पूजा घर बनवाए.

8 यही उन्होंने अपनी सभी विदेशी पत्नियों के लिए किया, जो
इन पर अपने-अपने देवताओं के लिए बलि चढ़ाया करती और
धूप जलाया करती थीं.

9 इन कामों के कारण याहवेह शलोमोन से क्रोधित हो गए,
क्योंकि उनका मन याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर से, जिन्होंने
दो बार उन्हें दर्शन दिए थे, दूर हो गया था,

10 जिन्होंने उन्हें यह आदेश दिया था कि वह पराए देवताओं
के पीछे न चलें. मगर उन्होंने याहवेह के इस आदेश का पालन
न किया.

11 इसलिये याहवेह ने शलोमोन से कहा, “तुम्हारे इसी काम के
कारण, और इसलिये कि तुमने मेरी वाचा और विधियों का
पालन नहीं किया, जिनका मैंने तुम्हें आदेश दिया था, यह तय
है कि मैं तुम्हारा राज्य तुमसे छीनकर तुम्हारे सेवक को दे दूंगा.

12 फिर भी, तुम्हारे पिता दावीद के कारण मैं यह तुम्हारे
जीवनकाल में नहीं करूंगा. बल्कि मैं यह तुम्हारे पुत्र के हाथ
से छीन लूंगा.

13 फिर भी मैं पूरा राज्य नहीं छीनूंगा. मैं एक गोत्र तुम्हारे पुत्र
के लिए छोड़ दूंगा; मेरे सेवक दावीद और मेरे चुने गए नगर
येरूशलेम के कारण.”

14 इसके बाद याहवेह ने शलोमोन के लिए एक शत्रु खड़ा
किया; एदोमी हदद, जो एदोम राजा के वंश से था.

15 जब दावीद एदोम देश में थे और सेनापति योआब मरे हुओं
को मिट्टी देने वहां गए हुए थे, उन्होंने एदोम देश के हर एक
पुरुष का वध कर दिया था.

16 योआब और इस्राएल सेना वहां छः महीने तक ठहरी रही
थी, जब तक एदोम के हर एक पुरुष की हत्या न कर दी गई.

17 मगर हदद मिस्र देश को भाग चुका था. उसके साथ उसके
पिता के एदोमी सेवक भी थे. उस समय हदद सिर्फ छोटा
बालक ही था.

18 उसने मिदियान देश से चलना शुरू किया और पारान
नामक स्थान पर आ पहुंचा. वहां से कुछ व्यक्तियों को अपने
साथ लेकर वे मिस्र देश में फ़रोह की शरण में पहुंच गया.
फ़रोह ने उसे एक घर और ज़मीन का टुकड़ा देकर उसके
लिए नियमित भोजन की व्यवस्था भी कर दी.

19 हदद फ़रोह का प्रिय बन गया, यहां तक कि फ़रोह ने
उसका विवाह अपनी पत्नी तहपनीस की बहन से कर दिया.

20 उससे उसके एक पुत्र पैदा हुआ. उसका नाम गेनुबाथ रखा;
फ़रोह के यहां रहते हुए ही इसने माता का दूध पीना छोड़
दिया था. गेनुबाथ राजमहल में फ़रोह के पुत्रों के साथ ही रहता
था.

21 मिस्र में रहते हुए ही जब हदद ने यह सुना कि दावीद अब
नहीं रहे, और सेनापति योआब की भी मृत्यु हो गई है, हदद ने
फ़रोह से विनती की, “मुझे आज्ञा दीजिए कि मैं अपने देश में
जा रहूं.”

22 मगर फ़रोह ने उससे कहा, “मेरे यहां ऐसी क्या कमी है कि
तुम अपने देश को जाना चाह रहे हो?” हदद ने उत्तर दिया,
“कमी तो कुछ भी नहीं है, मगर फिर भी मुझे जाने दीजिए.”

23 परमेश्वर ने शलोमोन के विरुद्ध एक और शत्रु खड़ा कर
दिया: एलियादा का पुत्र रेज़ोन, जो ज़ोबाह के राजा हादेदेज़र
अपने स्वामी से बचकर भागा था.

24 दावीद द्वारा की गई हत्याओं के बाद उसने अपने साथ
अनेक व्यक्ति जुटा लिए, और वह लूटमार करनेवाले झुण्ड़
का मुखिया बन गया. ये सब दमेशेक जाकर वहां बस गए. वहां
इन लोगों ने उसे दमेशेक का राजा बना दिया.

25 शलोमोन के पूरे जीवनकाल में वह इस्राएल का शत्रु ही बना
रहा. हदद ने इस्राएल की हानि ही की थी. इसके अलावा रेज़ोन
अराम का शासक को इस्राएल से घोर नफरत थी.

26 ज़ेरेदाह नगर से एक एफ्राईमवासी, नेबाथ के पुत्र
यरोबोअम ने भी, जो शलोमोन का ही सेवक था, जिसकी माता
का नाम ज़ेरुआह था, जो विधवा थी, राजा के विरुद्ध सिर
उठाया.

27 राजा के विरुद्ध उसके विद्रोह का कारण यह था: जब
शलोमोन मिल्लो को बनवा रहा था और जब उनके पिता
दावीद के नगर की शहरपनाह की मरम्मत की जा रही थी,

28 राजा ने ध्यान दिया कि यरोबोअम शक्तिशाली जवान था,
और राजा ने यह भी देखा कि वह मेहनती है, तो राजा ने उसे
योसेफ़वंशी दासों का मुखिया बना दिया.

29 जब यरोबोअम येरूशलेम से बाहर गया तो मार्ग में शीलो
वासी भविष्यद्वक्ता अहीयाह से उसकी भेंट हो गई. अहीयाह
ने नए कपड़े पहने हुए था. सिर्फ ये दोनों इस समय मैदान में
खड़े हुए थे.

30 अचानक ही अहीयाह ने अपने उस नए कपड़े को लिया,
जिसे वह पहने हुए थे, और उसे फाड़ते हुए बारह भागों में बांट
दिया.

31 यरोबोअम से उन्होंने कहा, "अपने लिए इनमें से दस भाग
उठा लो, क्योंकि याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर ने यह कहा है,
'यह देख लेना कि मैं शलोमोन के हाथ से छीनकर तुम्हें दस
गोत्रों का अधिकार दे दूंगा,

32 मगर मेरे सेवक दावीद और येरूशलेम नगर के हित में,
उसके लिए एक गोत्र दे दिया जाएगा, जिसे मैंने इस्राएल के
सारे गोत्रों में से चुन लिया है,

33 क्योंकि उसने मुझे भुलाकर सीदोनियों की देवी अश्तोरेथ
की, मोआब के देवता खेमोश की और अम्मोनियों के देवता
मिलकाम की पूजा करना शुरू कर दिया है. उसने मेरे नियमों
का पालन करना छोड़ दिया है. उसने अपने पिता दावीद के
समान वह नहीं किया, जो मेरी नज़रों में सही है, और न ही
उसने मेरी विधियों और नियमों का पालन ही किया है.

34 " 'यह सब होने पर भी मैं उससे सारा राज्य नहीं छीनूंगा, मैं
अपने सेवक दावीद के कारण उसे आजीवन शासक बना
रहने दूंगा, जो मेरा चुना हुआ था, जो मेरे आदेशों और नियमों
का पालन करता रहा,

35 मगर मैं यह राज्य उसके पुत्र से ज़रूर छीन लूंगा और ये
दस गोत्र तुम्हें दे दूंगा.

36 हां, उसके पुत्र को मैं एक गोत्र दे दूंगा, कि येरूशलेम में मेरे
सामने मेरे सेवक दावीद का दीप हमेशा जलता रहे.
येरूशलेम वह नगर है, जहां मैंने अपनी महिमा करना सही
समझा है.

37 मैं तुम्हें प्रतिष्ठित करूंगा, कि तुम अपनी इच्छा अनुसार
शासन कर सकोगे. तुम इस्राएल देश के राजा बन जाओगे.

38 और यदि तुम मेरे आदेश को सुनकर उनका पालन करोगे,
मेरी आज्ञाओं को मानोगे, और वही सब करोगे जो मेरी नज़रों
में सही है, जैसा मेरे सेवक दावीद ने मेरे नियमों और आदेशों
का पालन करने में किया था, मैं तुम्हारे साथ रहूंगा और तुम्हारे
वंश को स्थिर करूंगा, जैसा मैंने दावीद के साथ किया. तब मैं
तुम्हें इस्राएल की प्रभुता सौंप दूंगा.

39 ऐसा करके मैं दावीद के वंशजों को पीड़ित तो करूंगा,
मगर यह पीड़ा हमेशा के लिए नहीं होगी.' "

40 यह सुन शलोमोन ने यरोबोअम की हत्या करने की कोशिश
की, मगर यरोबोअम मिस्र के राजा शिशाक की शरण में चला
गया और शलोमोन की मृत्यु तक वहीं रहा.

41 शलोमोन की बाकी उपलब्धि और उसके द्वारा किए गए
सारे सुधारों का ब्योरा शलोमोन के काम नामक पुस्तक में
लिखित है.

42 सारे इस्राएल पर शलोमोन ने येरूशलेम से चालीस साल
राज किया.

43 शलोमोन अपने पूर्वजों के साथ हमेशा के लिए सो गए.
उसका अंतिम संस्कार उसके पिता दावीद के नगर में किया
गया. उसका स्थान पर उसका पुत्र रिहोबोयाम राजा बना.

1 Kings 12:1

1 Kings 12:1

1 रिहोबोयाम शेकेम नगर गया, क्योंकि उसके राजाभिषेक के
उद्देश्य से सारा इस्राएल वहां इकट्ठा हुआ था.

2 जब नेबाथ के पुत्र यरोबोअम ने यह सुना, जो इस समय मिस्र
देश में ही रह रहा था—वह राजा शलोमोन से भागकर यहीं
ठहरा हुआ था—

3 लोगों ने संदेश भेजकर उसे बुलवा लिया. तब यरोबोअम
और सारी इस्राएली सभा अपनी बात रखने रिहोबोयाम के
पास गई. उन्होंने रिहोबोयाम से कहा,

4 “आपके पिता ने हमारा जूआ बहुत ही भारी कर दिया था;
अब तो आपके पिता द्वारा कराई गई मेहनत और इस भारी
जूए को हल्का कर दीजिए. हम आपकी सेवा हमेशा करते
रहेंगे.”

5 रिहोबोयाम ने उन्हें उत्तर दिया, “अभी आप जाइए और तीन
दिन के बाद आइए, तब मैं आपको इसका उत्तर दूंगा.” तब वे
सब लौट गए.

6 इसी समय राजा रिहोबोयाम ने उन पुरनियों से सलाह ली,
जो उसके पिता शलोमोन के जीवन भर उसके सेवक रहे थे.
उसने पूछा, “मेरे लिए आपकी क्या राय है? मैं इन लोगों को
क्या उत्तर दूं?”

7 उन्होंने उसे उत्तर दिया, “यदि आप आज इन लोगों के सामने
सेवक की तरह बनकर उन्हें उत्तर देते हुए उनसे मीठी बातें
करें, तो वे आजीवन आपके सेवक बने रहेंगे.”

8 मगर रिहोबोयाम ने पुरनियों की इस सलाह को छोड़ दिया
और जाकर उन युवाओं से सलाह ली, जो उसी के साथ बड़े
हुए थे और जो उसके सेवक थे.

9 उसने उनसे पूछा “इन लोगों के लिए तुम्हारी राय क्या है,
जिन्होंने मुझसे विनती की, ‘आपके पिता द्वारा हम पर रखा
गया जूआ हल्का कर दीजिए’?”

10 उसके साथ साथ पले बढ़े युवाओं ने उसे उत्तर दिया, “जिन
लोगों ने आपसे यह विनती की है, ‘आपके पिता द्वारा हम पर
रखे गए भारी जूए को हल्का कर दीजिए,’ उन्हें यह उत्तर
दीजिए, ‘मेरे हाथ की छोटी उंगली ही मेरे पिता की कमर से
मोटी है!

11 यदि मेरे पिता ने तुम पर भारी जूआ लादा था, तो मैं उसे
और भी अधिक भारी बना दूंगा. मेरे पिता ने तो तुम्हें नियंत्रण
में रखने के लिए कोड़े इस्तेमाल किए थे, मगर मैं इसके लिए
बिच्छू का इस्तेमाल करूंगा.’ ”

12 जब यरोबोअम और सारी भीड़ तीन दिन बाद रिहोबोयाम
के सामने आया, जैसा राजा द्वारा बताया गया था, “मेरे पास
तीन दिन के बाद आना.”

13 राजा ने पुरनियों की सलाह को छोड़कर लोगों को कठोर
उत्तर दिया,

14 जो उन्हें युवाओं के द्वारा दी गई सलाह के अनुसार था. उसने
कहा, “मेरे पिता ने तुम्हारा जूआ भारी किया था, तो मैं इसे और
ज्यादा भारी कर दूंगा. मेरे पिता ने अगर तुम पर कोड़े चलाए
थे, तो अब मैं तुम पर बिच्छू ड़ंक के समान कोड़े बरसाऊंगा.”

15 राजा ने लोगों की एक न सुनी क्योंकि यह सारी बातें याहवेह
द्वारा तय की जा चुकी थी, कि वह अपनी कही हुई बात पूरी
करे, जो उन्होंने नेबाथ के पुत्र यरोबोअम से शीलो के
भविष्यद्वक्ता अहीयाह द्वारा की थी.

16 जब सारे इस्राएल के सामने यह बात आ गई कि राजा ने
उनकी विनती की ओर ध्यान ही नहीं दिया है, उन्होंने राजा से
यह कह दिया: “क्या भाग है दावीद में हमारा? क्या मीरास है
यिशै पुत्र में हमारी? लौट जाओ अपने-अपने तंबुओं में,
इस्राएल! दावीद, तुम अपने ही वंश को संभालते रहो!” तब
इस्राएली अपने-अपने तंबुओं को लौट गए.

17 मगर यहूदिया प्रदेशवासी इस्राएलियों पर रिहोबोयाम का
शासन हो गया.

18 राजा रिहोबोयाम ने अदोरम को, जो बेगार श्रमिकों का
मुखिया था, इस्राएलियों के पास भेजा. सारे इस्राएलियों ने
उसका पथराव किया कि उसकी हत्या हो गई. यह देख राजा
रिहोबोयाम ने बिना देर किए रथ जुतवाया और वह येरूशलेम
को भाग गया.

19 इस प्रकार इस्राएल राज्य आज तक दावीद के वंश के
विरुद्ध विद्रोह की स्थिति में है.

20 जब सारे इस्राएल देश में यह मालूम चल गया कि
यरोबोअम लौट आया है, उन्होंने उसे सभा में आमंत्रित किया
और उसका सारे इस्राएल के राजा के रूप में राजाभिषेक कर
दिया. सिर्फ यहूदाह गोत्र दावीद वंश के साथ रहा.

21 जब रिहोबोयाम येरूशलेम लौटा, उसने सारे यहूदाह और
बिन्यामिन गोत्र को इकट्ठा किया. ये एक लाख अस्सी हज़ार
योद्धा थे, जिन्हें परखकर अलग किया गया था, कि ये इस्राएल
वंश से युद्ध करें और शलोमोन के पुत्र रिहोबोयाम के राज्य
को दोबारा उसे लौटा दें.

22 मगर परमेश्वर के एक जन शेमायाह को परमेश्वर का आदेश
इन शब्दों में मिला,

23 "शलोमोन के पुत्र यहूदिया के राजा रिहोबोयाम से और
यहूदाह और बिन्यामिन के सभी गोत्रों से और बाकी सभी
लोगों से जाकर यह कहो:

24 'यह याहवेह का आदेश है, अपने इन संबंधियों से, जो
इस्राएल के वंशज हैं, युद्ध न करना. तुममें से हर एक अपने-
अपने घर लौट जाए, क्योंकि यह स्थिति मेरे द्वारा उत्पन्न की
गई है.' " तब उन्होंने याहवेह के आदेश का पालन किया.
याहवेह के आदेश के अनुसार वे सब अपने-अपने घर लौट
गए.

25 यरोबोअम ने एफ्राईम के पहाड़ी इलाके में शेकेम नामक
नगर को बसाया और वहीं रहने लगा. कुछ समय बाद उसे
छोड़ उसने पनीएल नामक स्थान को मजबूत किया.

26 यरोबोअम ने विचार किया, "अब तो राज्य दावीद वंश के
पास लौट जाएगा.

27 यदि मेरे प्रजाजन बलि चढ़ाने के उद्देश्य से येरूशलेम में
याहवेह के भवन को ही जाते रहेंगे, तो यह तय ही है कि उनका
हृदय उनके स्वामी की ओर ही लगता जाएगा; यहूदिया के
राजा रिहोबोयाम की ओर, और ये लोग मेरी हत्या कर देंगे
और यहूदिया के राजा रिहोबोयाम की ओर फिर जाएंगे."

28 सलाह-मशविरा करने के बाद, राजा ने सोने के दो बछड़े
ढाले, और लोगों के सामने घोषणा की, "बहुत हो चुका तुम्हारा
येरूशलेम जाना. इस्राएल, यह देखो, तुम्हारे देवता ये हैं, ये ही
हैं जो तुम्हें मिस्र देश से बाहर निकाल लाए हैं."

29 इसके बाद उसने एक को तो बेथेल में और दूसरे को दान
प्रदेश में प्रतिष्ठित किया.

30 यह पाप साबित हुआ, क्योंकि लोग उसकी उपासना करने
दूर के दान प्रदेश तक जाने लगे.

31 उसने पूजा स्थलों पर मंदिर बनवा दिए, और सारी प्रजा में
से ऐसे व्यक्तियों को पुरोहित चुन दिया, जो लेवी के वंशज न
थे.

32 तब यरोबोअम ने आठवें महीने के पन्द्रहवें दिन एक पर्व
घोषित कर दिया. यह वैसा ही पर्व था, जो यहूदिया में मनाया
जाता था. उसने बेथेल में वेदी पर उन बछड़ों के लिए, जो स्वयं
उसने गढ़ी थी, बलियां चढ़ाईं. उसने बेथेल में उन पूजा की
जगहों पर पुरोहित चुन लिए, जिन पूजा घरों को खुद उसी ने
बनवाया था.

33 वह बेथेल में अपनी ही बनाई हुई वेदी पर आठवें महीने के
पन्द्रहवें दिन गया, और यह महीना और दिन खुद उसने
अपनी ही बुद्धि से निश्चित किया था. इस प्रकार उसने इस्राएली
प्रजा के लिए यह उत्सव ठहराया था, फिर वह धूप जलाने वेदी
पर गया.

1 Kings 13:1

1 जहां यरोबोअम धूप जलाने के लिए वेदी के पास खड़ा था,
वहां ऐसा हुआ कि याहवेह के आदेश पर परमेश्वर का एक दूत
यहूदिया से बेथेल आया.

2 याहवेह के आदेश पर इस व्यक्ति ने वेदी से कहा, "वेदी, ओ
वेदी! यह संदेश याहवेह का है 'यह देखना कि दावीद के वंश
से एक पुत्र पैदा होगा, जिसका नाम होगा योशियाह. वह तुझ
पर पूजा-गिरियों के लिए ठहराए गए पुरोहितों को बलि चढ़ा
देगा, जो पुरोहित आज तुझ पर धूप जला रहे हैं, तुझ पर
मनुष्यों की हड्डियां जलाई जाएंगी.' "

3 उसने उसी दिन उन्हें एक चिन्ह भी दिया. “यह वह चिन्ह है,
जो याहवेह द्वारा दिया गया है: देख लेना कि यह वेदी फट
जाएगी और इस पर की रखी चर्बी की राख नीचे आ पड़ेगी.”

4 जब राजा ने परमेश्वर के दूत के ये शब्द सुने, जो उसने बेथेल
में बनी वेदी के बारे में कहे थे, वेदी के पास खड़े यरोबोअम ने
हाथ बढ़ाते हुए यह कहा: “पकड़ लो उसे!” परमेश्वर के दूत
की ओर बढ़ाया हुआ उसका हाथ सूख चुका था, वह उसे
दोबारा अपनी ओर खींच न सका.

5 दूसरी ओर वेदी भी फट चुकी थी और वेदी की चर्बी की राख
भूमि पर जा पड़ी थी. परमेश्वर के दूत ने याहवेह की ओर से
यही भविष्यवाणी की थी.

6 इस पर राजा ने परमेश्वर के दूत से बिनती की, “कृपया
याहवेह अपने परमेश्वर से दोहाई देते हुए यह विनती कीजिए,
कि मेरा यह हाथ पहले जैसा हो जाए.” तब परमेश्वर के दूत ने
याहवेह की दोहाई दी, और राजा का वह हाथ पहले के समान
ही हो गया.

7 तब राजा ने परमेश्वर के दूत से कहा, “आप मेरे साथ मेरे घर
आने की कृपा करें और वहां अपना जी ठंडा करें. मैं आपको
उपहार भी दूंगा.”

8 परमेश्वर के दूत ने राजा को उत्तर दिया, “यदि आप मुझे
अपना आधा राज्य भी दे दें, मैं न तो आपके घर आऊंगा और
न मैं इस स्थान पर खाना खाऊंगा और न ही पानी पिऊंगा,

9 क्योंकि याहवेह की ओर से उसे यही आदेश मिला था, ‘न
तुम वहां कुछ खाओगे, पिओगे और न उस मार्ग से लौटोगे,
जिससे तुम वहां गए थे.’ ”

10 इसलिये वह जिस मार्ग से बेथेल आया था, उससे नहीं बल्कि
दूसरे मार्ग से घर लौट गया.

11 बेथेल में एक बूढ़ा भविष्यद्वक्ता था. उसके पुत्रों ने लौटकर
बेथेल में परमेश्वर के दूत से संबंधित सारी घटना का हाल सुना
दिया और वे सारी बातें भी, जो उसके द्वारा राजा के लिए की
गई थी.

12 उनके पिता ने उनसे पूछा, “किस रास्ते से लौटा है वह?”
उसके पुत्रों ने उसे बता दिया कि परमेश्वर का वह दूत, जो
यहूदिया से आया था, उसी रास्ते से लौटा था.

13 उस बूढ़े भविष्यद्वक्ता ने अपने पुत्रों को आदेश दिया, “मेरे
लिए गधे पर काठी कसो.” तब उन्होंने पिता के लिए गधे पर
काठी कस दी, और वह बूढ़ा भविष्यद्वक्ता उस पर बैठकर
चला गया.

14 उसने परमेश्वर के दूत का मार्ग लिया और उसे एक बांज
वृक्ष की छाया में बैठा पाया. उसने उससे पूछा, “क्या तुम्हीं
यहूदिया से आए हुए परमेश्वर के दूत हो?” उसने उत्तर दिया,
“जी हां.”

15 तब उस प्राचीन भविष्यद्वक्ता ने उससे कहा, “मेरे साथ मेरे
घर चलकर भोजन कर लो.”

16 परमेश्वर के दूत ने उत्तर दिया, “मैं आपके साथ नहीं जा
सकता, न तो मैं आपके साथ लौट सकता हूं, न ही मैं इस स्थान
में आपके साथ कुछ खा-पी सकता हूं;

17 क्योंकि याहवेह की ओर से मुझे यह आदेश मिला है, ‘तुम
वहां न तो कुछ खाओगे, पिओगे और न इस मार्ग से लौटोगे,
जिस मार्ग से तुम वहां गए थे.’ ”

18 बूढ़े भविष्यद्वक्ता ने उसे उत्तर दिया, “मैं भी तुम्हारे ही
समान एक भविष्यद्वक्ता हूं. याहवेह की ओर से एक स्वर्गदूत
ने मुझसे कहा, ‘उसे लौटाकर अपने घर ले आओ, कि वह
भोजन कर सके.’ ” मगर यह झूठ था.

19 तब परमेश्वर का वह दूत उस वृद्ध भविष्यद्वक्ता के साथ
नगर में लौट गया और उसने उसके घर पर भोजन किया और
पानी पिया.

20 जब वे भोजन के लिए बैठे ही थे, उस बूढ़े भविष्यद्वक्ता को,
जो उसे लौटा लाया था, याहवेह का संदेश मिला,

21 और उसने यहूदिया से आए हुए परमेश्वर के दूत से
दृढतापूर्वक कहा, “यह याहवेह का संदेश है: इसलिये कि
तुमने याहवेह के आदेश का पालन नहीं किया है, और उनके

1 Kings 14:1

निर्देशों का पालन नहीं किया है, जो याहवेह तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें दिए थे,

22 बल्कि तुम लौट गए और तुमने उस स्थान में भोजन किया और पानी पिया है, जिसके बारे में मैंने तुमसे कह दिया था, ‘वहां न तो भोजन करना और न जल पीना, तुम्हारे शरीर को तुम्हारे पूर्वजों के साथ मिट्टी न मिलेगी.’ ”

23 जब परमेश्वर के दूत ने भोजन कर लिया और जल पी लिया, बूढ़े भविष्यद्वक्ता ने उस भविष्यद्वक्ता के लिए, जिसे वह यात्रा से लौटा लाया था, गधे पर काठी कसी.

24 जब वह भविष्यद्वक्ता कुछ दूर पहुंचा, उसे मार्ग में एक शेर मिला, जिसने उसे मार डाला. उसका शव रास्ते में ही पड़ा रहा. गधा उस शव के पास खड़ा रह गया. शेर भी शव के ही पास खड़ा रहा.

25 वहां से जाते हुए यात्रियों ने यह दृश्य देखा: शव मार्ग पर पड़ा था और सिंह शव के निकट खड़ा हुआ था. उन्होंने उस नगर में जाकर यह समाचार दे दिया, जहां वह बूढ़ा भविष्यद्वक्ता रहता था.

26 जब उस भविष्यद्वक्ता ने, जो उसे यात्रा से लौटा लाया था, यह समाचार सुना, उसने यह घोषणा की, “यह परमेश्वर का वही दूत है, जिसने याहवेह की आज्ञा टाली थी, इसलिये याहवेह ने उसे शेर के अधिकार में कर दिया, कि शेर उसे फाड़कर मार डाले. यह ठीक वैसा ही हुआ, जैसा याहवेह ने उससे कहा था.”

27 तब उसने अपने पुत्रों को आदेश दिया, “मेरे जाने के लिए गधे पर काठी कसो.” उन्होंने गधे पर काठी कस दी.

28 बूढ़ा भविष्यद्वक्ता गया और पाया कि उसका शव मार्ग में पड़ा हुआ था और गधा और शेर शव के पास खड़े हुए थे. शेर ने न तो शव को खाया था और न ही उसने गधे को फाड़ डाला था.

29 भविष्यद्वक्ता ने परमेश्वर के दूत के शव को गधे पर लादा और नगर लौट आया, कि उसके लिए विलाप करके उसका अंतिम संस्कार किया जाए.

30 उसने उसके शव को अपने लिए तैयार की गई कब्र में रखा. लोगों ने उसके लिए यह कहते हुए विलाप किया, “हाय, मेरे भाई!”

31 उसे कब्र में रखने के बाद उसने अपने पुत्रों से कहा, “जब मेरी मृत्यु होगी, मुझे भी इसी कब्र में रखना, जिसमें परमेश्वर का यह दूत रखा गया है; मेरी हड्डियां उसी की हड्डियों के पास रख देना,

32 क्योंकि यह तो तय है कि वह सभी कुछ होगा, जो याहवेह के संदेश के अनुसार बेथेल की वेदी और शमरिया के नगरों में पूजा की सभी जगहों में बने सभी घरों के संबंध में उसने दृढतापूर्वक कहा था.”

33 यह सब होने पर भी यरोबोअम अपने गलत कामों से न फिरा. उसने पूजा की जगहों के लिए अपनी सारी प्रजा में से पुरोहित चुने. जो कोई भी पुरोहित का पद चाहता था, वह उसे पूजा की जगहों के पुरोहित होने के लिए अभिषिक्त कर देता था.

34 यह नीति यरोबोअम के परिवार के लिए पाप हो गई, यही यरोबोअम के वंश का पृथ्वी पर से विनाश का कारण हो गया.

1 Kings 14:1

1 उसी समय यरोबोअम का पुत्र अबीयाह बीमार हो गया.

2 यरोबोअम ने अपनी पत्नी से कहा, “ऐसा भेष बदलो, कि कोई भी तुम्हें पहचान न सके, कि तुम यरोबोअम की पत्नी हो. और तुम शीलो को चली जाओ, जहां भविष्यद्वक्ता अहीयाह रहते हैं. यह वही भविष्यद्वक्ता हैं, जिन्होंने मेरे विषय में यह भविष्यवाणी की थी, मैं ही इस प्रजा का राजा बन जाऊंगा.

3 अपने साथ दस रोटियां, कुछ टिकियां और एक कुप्पी शहद लेकर उनसे भेंटकरने चली जाओ. वही तुम्हें बताएंगे कि बालक का क्या होगा.”

4 यरोबोअम की पत्नी ने ऐसा ही किया. वह तैयार हो शीलो नगर में अहीयाह के घर पर जा पहुंची. बूढ़ा होने के कारण अहीयाह की नज़रें धुंधली पड़ चुकी थी, और वह देख नहीं सकता था.

5 मगर याहवेह ने अहीयाह को पूर्वसूचित किया, “यरोबोअम
की पत्नी तुमसे अपने पुत्र की स्थिति के विषय में पूछताछ
करने आ रही है. यह बालक अस्वस्थ है. तुम उसे ऐसा और
ऐसा जवाब देना है.” जब वह भविष्यद्वक्ता के निकट पहुंची,
उसने अन्य स्त्री होने का बहाना किया.

6 अहीयाह उसके पदचाप सुन रहे थे. जैसे ही वह द्वार पर
पहुंची, अहीयाह ने पुकारते हुए कहा, “श्रीमती यरोबोअम,
भीतर आ जाइए. क्या लाभ है आपके वेष बदलने का? मुझे
आपको अप्रिय समाचार देने का दायित्व सौंपा गया है.

7 जाकर यरोबोअम को सूचित कर दीजिए, ‘याहवेह, इस्राएल
के परमेश्वर का यह संदेश है, मैंने सारी प्रजा में से तुम्हें चुनकर
उन्नत किया, तुम्हें अपनी प्रजा का प्रधान नियुक्त किया.

8 और दावीद के वंश से राज्य छीनकर तुम्हें दे दिया है; फिर
भी तुम मेरे सेवक दावीद के समान साबित न हुए, जिसने मेरे
आदेशों का पालन किया और पूरे मन से मेरा अनुसरण करता
रहा—सिर्फ वही करता रहा, जो मेरी दृष्टि में सही है;

9 मगर तुमने तो ऐसी बुराई की है, जो तुमसे पहले हुए उनसे
भी बुरी है; तुमने अपने लिए पराए देवता बना लिए, धातु की
मूर्तियां गढ़ लीं और मेरे क्रोध को भड़का दिया. तुमने तो मुझे
अपने ही पीछे फेंक दिया है.

10 “ ‘इसलिये मैं यरोबोअम के परिवार पर मुसीबत ड़ाल दूंगा.
मैं यरोबोअम के वंश से हर एक पुरुष को नाश कर दूंगा, चाहे
वह इस्राएल में बंधुआ हो या स्वतंत्र. मैं यरोबोअम के परिवार
को उसी प्रकार भस्म कर दूंगा जिस प्रकार कोई गोबर को
पूरी तरह भस्म कर फेंक देता है.

11 यदि यरोबोअम के किसी भी संबंधी की मृत्यु नगर के भीतर
होती है, तो उसका शव कुत्ते खा जाएंगे; यदि किसी की मृत्यु
खुले मैदान में होती है, तो वह आकाश के पक्षियों का आहार
हो जाएगा; यह याहवेह का संदेश है!’

12 “इसलिये अब उठो और अपने घर लौट जाओ. तुम्हारे नगर
में प्रवेश करते ही बालक की मृत्यु हो जाएगी.

13 पूरा इस्राएल उसके लिए विलाप करेगा, और फिर उसे
गाड़ा जाएगा; सिर्फ वह अकेला होगा जिसे यरोबोअम के
परिवार में कब्र मिलेगी; क्योंकि याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर
ने सारे यरोबोअम परिवार से सिर्फ उसी में कुछ भला पाया है.

14 “इसके अलावा आज ही याहवेह अपने लिए इस्राएल में से
एक राजा पैदा करेंगे, जो यरोबोअम के परिवार को आज ही
हमेशा के लिए मिटा देगा.

15 इसके बाद याहवेह इस्राएल पर वैसा ही वार करेंगे, जैसा
जल में सरकंडा. वह इस समृद्ध भूमि पर से इस्राएल को
उखाड़कर छोड़ेंगे—उस भूमि पर से, जो उन्होंने उनके पूर्वजों
को दी थी. वह उन्हें फरात नदी के पार तक बिखरा देंगे,
क्योंकि उन्होंने अशेरा खंभे गढ़ कर याहवेह को क्रोधित कर
दिया है.

16 यरोबोअम द्वारा किए गए पापों के कारण याहवेह इस्राएल
को छोड़ देंगे, वे पाप काम जो खुद यरोबोअम किए और
जिनके द्वारा उसने इस्राएल को पाप करने लिए उकसाया.”

17 तब यरोबोअम की पत्नी वहां से विदा हो गई, और अपने
नगर तिरज़ाह पहुंची. उसने अपने घर की डेवढ़ी पर पैर रखा
ही था, कि उसका पुत्र मर गया.

18 सारे इस्राएल ने उसका अंतिम संस्कार किया, उसके लिए
विलाप किया, ठीक जैसा याहवेह ने अपने सेवक भविष्यद्वक्ता
अहीयाह के द्वारा कहा गया था.

19 यरोबोअम के बाकी काम, यानी उसने युद्ध कैसे किया और
उसने किस प्रकार शासन किया, इनका ब्यौरा इस्राएल के
राजाओं की इतिहास की पुस्तक में लिखा है.

20 यरोबोअम का पूरा शासनकाल बाईस साल का था. फिर
वह अपने पूर्वजों के साथ हमेशा के लिए सो गया. उसकी
जगह पर उसका पुत्र नादाब राजा बना.

21 इस समय यहूदिया का शासक था शलोमोन का पुत्र
रिहोबोयाम. जिस समय उसने शासन शुरू किया, उसकी
उम्र एकतालीस साल की थी. येरूशलेम में उसने सत्रह साल
शासन किया. येरूशलेम वह नगर है, जिसे याहवेह ने सारे
इस्राएल में से इसलिये चुना, कि इसमें अपना नाम की प्रतिष्ठा
करें. उसकी माता का नाम था नामाह जो अम्मोनी थी.

22 यहूदिया प्रदेश ने वह किया, जो याहवेह की नज़रों में गलत
था. उन्होंने अपने पापों के द्वारा याहवेह में इतनी जलन पैदा
कर दी, जितनी उनके किसी भी पूर्वज ने कभी न की थी.

23 उन्होंने भी अपने लिए पूजा की जगह, हर एक ऊंची पहाड़ी
और हर एक घने पेड़ के नीचे पूजा-स्तम्भ और अशेराह के
खंभे बनवाए थे.

24 देश में पुरुषगामियों के लिए पुरुष वेश्या भी मंदिरों में रखे
गए थे. ये सब उन सारे घृणित कामों में संलग्न थे, जो उन
जातियों में किए जाते थे, जिन्हें याहवेह ने इस्राएल के सामने से
भगा दिया था.

25 राजा रिहोबोयाम के शासनकाल के पांचवें साल में मिस्र के
राजा शिशाक ने येरूशलेम पर हमला कर दिया.

26 उसने याहवेह के भवन से और राजा का महल में से सारा
कीमती सामान लूट लिया. वह सभी कुछ अपने साथ ले गया,
यहां तक कि शलोमोन द्वारा गढ़ी गई सारी सोने की ढालें भी.

27 तब राजा रिहोबोयाम ने उनकी जगह पर कांसे में गढ़ी गई
ढालें वहां रख दीं. इनकी जवाबदारी रिहोबोयाम ने राजघराने
के पहरेदारों के प्रधान को सौंप दी.

28 तब रीति यह बन गई कि जब-जब राजा याहवेह के भवन
को जाता था, पहरेदार ये ढालें लेकर चलते थे और राजा के
वहां से लौटने पर इन्हें पहरेदारों के कमरों में दोबारा रख दिया
जाता था.

29 रिहोबोयाम के बाकी काम और उसके सारे कृत्य यहूदिया
के राजाओं की इतिहास की पुस्तक में लिखे हैं.

30 रिहोबोयाम और यरोबोअम हमेशा ही आपस में युद्ध करते
रहे.

31 रिहोबोयाम अपने पूर्वजों के समान हमेशा के लिए सो गया.
उसे उसके पूर्वजों के साथ दावीद के नगर की कब्र में रखा
गया. उसकी माता का नाम नामाह था. वह अम्मोनी थी. उसके
स्थान पर उसका पुत्र अबीयाम राजा बना.

1 Kings 15:1

1 नेबाथ के पुत्र यरोबोअम के शासनकाल के अठारहवें साल
में अबीयाम ने यहूदिया पर शासन करना शुरू किया.

2 उसने येरूशलेम में तीन साल शासन किया. उसकी माता
का नाम माकाह था. वह अबीशालोम की पुत्री थी.

3 उसने अपने पिता के जैसा ही चालचलन रखा, और वे ही वे
सारे पाप किए जो अपने पिता ने किए. याहवेह, अपने परमेश्वर
के प्रति उसका हृदय पूरी तरह समर्पित न था, जैसा उसके
पूर्वज दावीद का था.

4 यह सब होने पर भी, दावीद के कारण याहवेह, उसके
परमेश्वर ने उसके लिए एक पुत्र पैदा कर उसके हित में
येरूशलेम में एक दीप जला रखा, और येरूशलेम को स्थिरता
दी.

5 क्योंकि दावीद ने वही किया था, जो याहवेह की दृष्टि में सही
था. दावीद आजीवन याहवेह द्वारा दिए गए आदेशों से नहीं
हटे—सिर्फ हित्ती उरियाह से संबंधित घटना के सिवाय.

6 पूरे जीवन भर रिहोबोयाम और यरोबोअम के बीच युद्ध होता
रहा.

7 अबीयाम द्वारा किए गए बाकी काम और वह सब, जो उसने
किया, यहूदिया के राजाओं की इतिहास नामक पुस्तक में
लिखी हैं. अबीयाम और यरोबोअम में युद्ध होता रहा.

8 अबीयाम अपने पूर्वजों के साथ हमेशा के लिए सो गया, और
उसे उसके पूर्वजों के साथ दावीद के नगर की कब्र में रखा
गया. उसके स्थान पर आसा राजा बना.

9 राजा यरोबोअम के शासनकाल के बीसवें साल में आसा ने
यहूदिया पर शासन करना शुरू किया.

10 उसने येरूशलेम में रहकर एकतालीस साल तक शासन
किया. उसकी दादी का नाम था माकाह जो अबीशालोम की
पुत्री थी.

1 Kings 15:1

11 आसा ने वह किया, जो याहवेह की दृष्टि में सही था—जैसा
उसके मूल पुरुष दावीद ने किया था.

12 उसने मंदिरों में से पुरुष वेश्याओं को देश से निकाल दिया
और अपने पिता द्वारा गढ़ी गई सारी मूर्तियों को हटवा दिया.

13 उसने अपनी दादी माकाह को राजमाता पद से हटा दिया,
क्योंकि उसने अशेरा की घृणित मूर्ति बनाकर रखी थी. आसा
ने इस मूर्ति को काटकर उसे किद्रोन नदी तट पर राख बना
डाला.

14 मगर पूजा-गिरियों को हटाया नहीं गया. फिर भी आसा का
मन जीवन भर याहवेह के लिए पूरी तरह सच्चा बना रहा.

15 उसने याहवेह के भवन में वे सारी पवित्र वस्तुएं लाकर रख
दीं, सोना, चांदी और बर्तन, जो उसके पिता और खुद उसके
पास थे.

16 आसा और इस्राएल के राजा बाशा के बीच उनके पूरे जीवन
भर युद्ध चलता रहा.

17 इस्राएल के राजा बाशा ने यहूदिया पर हमला कर दिया,
और उसने रामाह नगर के चारों ओर किला बनवाया, ताकि
इस्राएल का कोई भी व्यक्ति इस्राएल की सीमा से बाहर न
जाए और यहूदिया के राजा आसा इस तरफ न पहुंच सके.

18 इसके बाद आसा ने याहवेह के भवन में बाकी रह गए सोने
और चांदी और राजा के भंडार में बचे हुए सोने और चांदी को
लेकर अपने सेवकों को दिया, और उन्हें दमेशेक निवासी
हेज़ीऑन के पोते, ताब्रिम्मन के पुत्र बेन-हदद के लिए यह
कहते हुए भेज दिया,

19 “आपके और मेरे बीच एक वाचा बांधी जाए—ठीक जैसी
मेरे और आपके पिताओं के बीच थी. मैं उपहार के रूप में
आपके लिए सोना और चांदी भेज रहा हूं. आप इस्राएल के
राजा बाशा से अपनी वाचा तोड़ दीजिए, कि वह यहां से अपनी
सेनाएं हटा ले.”

20 बेन-हदद राजा आसा के प्रस्ताव से राज़ी हो गया. उसने
इस्राएल राज्य के नगरों के विरुद्ध अपने सैन्य अधिकारी भेज
दिए. उन्होंने इयोन, दान, बेथ-माकाह के आबेल और पूरे
किन्नेरेथ को नफताली प्रदेश सहित अपने अधीन कर लिया.

21 जब बाशा को यह समाचार प्राप्त हुआ, उसने रामाह का
गढ़ बनाना रोक कर सारा काम समाप्त कर दिया और वह
खुद तिरज़ाह में रहता रहा.

22 इसके बाद राजा आसा ने यहूदिया में सभी के लिए घोषणा
की—किसी को छूट नहीं थी—सबने मिलकर राजा बाशा
द्वारा लगाई निर्माण-सामग्री, पत्थर और लकड़ी लेकर आसा
द्वारा बनाए जा रहे बिन्यामिन और मिज़पाह के गेबा में लगा
दी.

23 आसा द्वारा किए गए बाकी काम, उनका शौर्य और उनकी
सारी उपलब्धियां और उसके द्वारा बसाए गए नगरों का ब्यौरा
यहूदिया के राजाओं की इतिहास नामक पुस्तक में है. उसके
बुढ़ापे में उसके पैर रोगग्रस्त हो गए थे.

24 आसा अपने हमेशा के लिए सो गया और उसको उसके
पूर्वजों के साथ दावीद के नगर की कब्र में रख दिया गया.
उसके स्थान पर उसका पुत्र यहोशाफ़ात राजा बना.

25 आसा के शासनकाल के दूसरे साल में यरोबोअम का पुत्र
नादाब इस्राएल पर शासन करने लगा. इसने इस्राएल पर दो
साल तक शासन किया.

26 उसने वही किया, जो याहवेह की दृष्टि में गलत था. उसका
स्वभाव उसके पिता के समान ही था. नादाब ने भी इस्राएल से
वही पाप करवाए, जो उसके पिता ने उनसे करवाए थे.

27 इस्साखार वंश के अहीयाह के पुत्र बाशा ने नादाब के
विरुद्ध साजिश रची, और बाशा ने उसे फिलिस्तीनियों की
सीमा में, गिब्बथोन नामक स्थान पर, मार गिराया, क्योंकि
नादाब ने सारी इस्राएली सेना लेकर गिब्बथोन को घेर रखा था.

28 यह यहूदिया के राजा आसा के शासन का तीसरा साल था,
जब बाशा ने नादाब की हत्या की, और उसकी जगह पर राजा
हो गया.

29 जैसे ही उसने राजपद संभाला, उसने यरोबोअम के सारे
वंश का नाश कर दिया, ठीक वैसे ही जैसे याहवेह ने

शीलोनवासी अपने सेवक अहीयाह के द्वारा भविष्यवाणी की थी. उसने यरोबोअम के परिवार में एक व्यक्ति भी जीवित न छोड़ा.

30 उन पापों के कारण, जो यरोबोअम ने किए और उनके लिए, जो उसने इस्राएल को करने के लिए उकसाया, उसने याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर के क्रोध को भड़काया.

31 नादाब द्वारा किए गए बाकी काम और जो उसके काल घटी घटनाएं इस्राएल के राजाओं की इतिहास नामक पुस्तक में लिखा है.

32 आसा और इस्राएल के राजा बाशा के बीच उनके पूरे जीवन भर युद्ध चलता रहा.

33 यहूदिया के राजा आसा के शासन के तीसरे साल में, तिरज़ाह नगर में अहीयाह के पुत्र बाशा ने सारे इस्राएल पर शासन करना शुरू किया. उसने चौबीस साल शासन किया.

34 उसने वह सब किया, जो याहवेह की दृष्टि में गलत था. उसका आचरण और उसके पाप यरोबोअम के समान थे, जो उसने इस्राएल को भी करने के लिए उकसाया.

1 Kings 16:1

1 हनानी के पुत्र येहू के पास बाशा के विरुद्ध याहवेह का यह संदेश आया:

2 “इसलिये कि मैंने धूल से उठाकर तुम्हें प्रतिष्ठित किया, और अपनी प्रजा इस्राएल का मुखिया चुना, मगर तुम्हारा स्वभाव यरोबोअम के समान ही रहा है. तुमने मेरी प्रजा इस्राएल को पाप की ओर उकसाया और उनके पाप के द्वारा तुमने मेरे क्रोध को भड़काया है.

3 अब देख लेना कि मैं बाशा के वंश को मिटा दूंगा और तुम्हारे वंश को नेबाथ के पुत्र यरोबोअम के समान कर दूंगा.

4 यदि बाशा के किसी भी संबंधी की मृत्यु नगर के भीतर होती है, तो उसका शव कुत्तों का भोजन हो जाएगा; यदि किसी की मृत्यु खुले मैदान में होती है, तो वह आकाश के पक्षियों का भोजन हो जाएगा.”

5 बाशा की बाकी उपलब्धियां, उसके द्वारा किए गए काम और उसके शौर्य का ब्यौरा इस्राएल के राजाओं की इतिहास नामक पुस्तक में है.

6 बाशा की मृत्यु हुई, और वह तिरज़ाह नगर में गाड़ा गया, और उसके स्थान पर उसका पुत्र एलाह राजा बना.

7 इसके अलावा, हनानी के पुत्र भविष्यद्वक्ता येहू के द्वारा याहवेह का संदेश बाशा और उसके सारे परिवार के विरुद्ध ये दोनों ही कारणों से भेजा गया: उसने यरोबोअम के परिवार के समान वे काम करके, जो याहवेह दृष्टि में गलत थे, याहवेह का क्रोध भड़काया और दूसरा, उसने यरोबोअम के वंश को खत्म कर डाला.

8 यहूदिया पर राजा आसा के शासन के छब्बीसवें साल में बाशा के पुत्र एलाह ने इस्राएल पर, तिरज़ाह नगर में रहते हुए अपना शासन शुरू किया. उसने दो साल शासन किया.

9 किंतु उसके सेवक ज़िमरी ने, जो आधी रथ सेना का मुखिया था, उसके विरुद्ध षड्यंत्र रचा. जब एलाह तिरज़ाह में राजघराने के अधिकारी अरज़ा के घर में नशे में था,

10 ज़िमरी ने आकर उस पर वार कर उसकी हत्या कर दी. और उसके स्थान पर शासन करने लगा. यह यहूदिया के राजा आसा के शासनकाल के सत्ताईसवें साल की घटना है.

11 जब उसने शासन शुरू किया, सिंहासन पर बैठते ही उसने बाशा के परिवार के सारे सदस्यों की हत्या कर दी. उसने परिवार और मित्रों के परिवारों में एक भी पुरुष को जीवित न छोड़ा.

12 इस प्रकार ज़िमरी ने याहवेह के संदेश के अनुसार, जो उन्होंने भविष्यद्वक्ता येहू के द्वारा बाशा के विरुद्ध कहा था, बाशा के पूरे परिवार को खत्म कर दिया!

13 यह सब उन पापों के कारण हुआ जो बाशा और उसके पुत्र एलाह ने किए, और इस्राएल को भी यह पाप करने के लिए प्रेरित किया, और इसलिये भी की उन्होंने याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर को अपने बेकार के कामों द्वारा क्रोधित किया.

1 Kings 16:1

14 एलाह की बाकी उपलब्धियों का और उसके सारे कामों का
ब्यौरा इस्राएल के राजाओं की इतिहास नामक पुस्तक में
किया गया है.

15 यहूदिया के राजा आसा के शासन के सत्ताईसवें साल में
तिरज़ाह नगर में ज़िमरी ने सात दिन शासन किया. सेना ने
गिब्बथोन नगर की घेराबंदी की, जो फिलिस्तीनियों के अधीन
में एक नगर था.

16 नगर की घेराबंदी की हुई. सेना ने किसी को यह कहते हुए
सुना, "ज़िमरी ने षड्यंत्र रचा है, और उसने राजा की हत्या कर
दी है." यह सुन सारे इस्राएल ने ओमरी को सेनापति बना दिया,
यानी उसे उस दिन छावनी में ही इस्राएल का राजा घोषित कर
दिया गया.

17 इस्राएली सेना ने ओमरी के साथ गिब्बथोन से कूच किया
और तिरज़ाह नगर को अधीन कर लिया.

18 जब ज़िमरी ने देखा कि नगर उसके हाथ से निकल चुका है,
वह राजघराने के गढ़ में चला गया, और राजघराने में आग
लगा ली, जिससे उसकी मृत्यु हो गई.

19 यह उसके पापों के कारण हुआ. उसने वही किया, जो
याहवेह की दृष्टि में गलत था, यरोबोअम के समान बुरी चाल
चलने के द्वारा, जिसमें उसने इस्राएल को पाप करने के लिए
उकसाया था.

20 ज़िमरी के बाकी कामों का ब्यौरा और उसके द्वारा रचे गए
षड्यंत्र का वर्णन इस्राएल के राजाओं की इतिहास नामक
पुस्तक में किया गया है.

21 इस्राएली प्रजा दो भागों में बंट गई. आधे लोग गीनाथ के पुत्र
तिबनी की तरफ हो गए, कि उसे राजा बना दें और आधे
ओमरी के.

22 ओमरी के समर्थकों ने गीनाथ के पुत्र तिबनी के समर्थकों
को हरा दिया. इसमें तिबनी की मृत्यु भी हो गई, और ओमरी
राजा बन गया.

23 यहूदिया के राजा आसा के शासनकाल के एकतीसवें साल
में ओमरी ने इस्राएल पर शासन शुरू किया. इनमें से उसने
छः साल तिरज़ाह नगर में शासन किया.

24 उसने चौंतीस किलो चांदी देकर शेमेर नामक व्यक्ति से
शमरिया की पहाड़ी खरीद ली. उसने पहाड़ी को गढ़ में बदल
दिया. उसने इस ज़मीन के मालिक शेमेर के नाम पर इस नगर
का नाम शमरिया रख दिया.

25 ओमरी ने वे काम किए, जो याहवेह की दृष्टि में गलत थे. ये
काम उन सभी की तुलना में अधिक बुरे थे, जो ओमरी के
पहले के राजाओं ने किए थे.

26 उसका स्वभाव हर प्रकार से नेबाथ के पुत्र यरोबोअम
समान था. जो पाप यरोबोअम ने किए थे, वे पाप उसने
इस्राएली प्रजा को करने के लिए भी उकसाया. उन्होंने
याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर को अपनी दुष्टता के द्वारा
क्रोधित किया.

27 ओमरी द्वारा किए गए बाकी कामों और उसके द्वारा दिखाए
शौर्य का ब्यौरा इस्राएल के राजाओं की इतिहास नामक
पुस्तक में किया गया है.

28 ओमरी की मृत्यु हुई और उसे शमरिया में गाड़ा गया.
उसकी जगह पर उसका पुत्र अहाब राजा बना.

29 यहूदिया के राजा आसा के शासनकाल के अड़तीसवें साल
में ओमरी के पुत्र अहाब ने इस्राएल पर शासन शुरू किया.
अहाब ने इस्राएल पर बाईस साल शासन किया.

30 ओमरी के पुत्र अहाब ने वही सब किया, जो याहवेह की दृष्टि
में गलत थे. यह सब उन सबसे कहीं अधिक गलत था, जो
उसके पहले के राजाओं द्वारा किया गया था.

31 इसके अलावा, मानो इतना काफ़ी न था, कि उसने वे ही
पाप किए, जो नेबाथ के पुत्र यरोबोअम द्वारा किए गए थे, उसने
सीदोनियों के राजा एथबाल की पुत्री ईजेबेल से विवाह कर
लिया और फिर वह जाकर बाल की पूजा-अर्चना करने लगा.

32 शमरिया में उसने बाल के लिए एक मंदिर बनवाया. इस
मंदिर में उसने बाल के लिए एक वेदी भी बनवाई.

33 अहाब ने अशेरा के खंभे की भी स्थापना की. यह सब करके
अहाब ने याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर को उन सब की अपेक्षा
अधिक क्रोधित किया, जो उसके पहले के राजाओं ने किया
था.

34 इन्हीं दिनों में बेथेल निवासी हिएल ने येरीख़ो नगर को
बनाना शुरू किया और जब उसने इसकी नींव डाली तो
उसके पहलौठे पुत्र अबीराम की मृत्यु हो गई. और जब वह
नगर फाटक, लगवा रहा था, उसके छोटे पुत्र सेगूब की मृत्यु
हो गई. यह याहवेह के वचन के अनुसार था, जो उन्होंने नून के
पुत्र यहोशू द्वारा बताया था.

1 Kings 17:1

1 गिलआद क्षेत्र के तिशबे नगर के निवासी एलियाह ने अहाब
से कहा, "इस्राएल के जीवित परमेश्वर याहवेह की शपथ, मैं
जिनका सेवक हूं, आनेवाले सालों में बिना मेरे कहे, न तो ओस
पड़ेगी और न ही बारिश होगी."

2 तब उसे याहवेह का यह संदेश मिला,

3 "यहां से जाओ और पूर्व में जाकर केरिथ नाले के क्षेत्र में, जो
यरदन के पूर्व में है, छिप जाओ.

4 तुम्हें नाले का जल पीना होगा. मैंने कौवों को आदेश दिया है
कि वे वहां तुम्हारे भोजन का इंतजाम करें."

5 तब एलियाह ने जाकर याहवेह के आदेश का पालन किया,
और यरदन नदी के पूर्व में केरिथ नाले के पास रहने लगे.

6 सुबह-सुबह कौवे उनके लिए रोटी और मांस ले आते थे; वैसे
ही शाम को भी.

7 कुछ समय बाद वह नाला सूख गया, क्योंकि उस देश में
बारिश हुई ही नहीं थी:

8 एलियाह को याहवेह से यह आदेश प्राप्त हुआ:

9 "उठो, सीदोन प्रदेश के ज़रफता नगर को जाओ, और वहीं
रहो; और सुनो, मैंने वहां एक विधवा को आदेश दिया है कि
वह तुम्हारे भोजन की व्यवस्था करे."

10 तब एलियाह ज़रफता चले गए. जब वह नगर द्वार के पास
पहुंचे, उन्होंने एक विधवा को ईंधन-लकड़ी इकट्ठी करते
देखा. उन्होंने पुकारकर उससे विनती की, "पीने के लिए एक
बर्तन में थोड़ा-सा जल ले आओ."

11 जब वह जल लेने जा ही रही थी, एलियाह ने दोबारा
पुकारकर उससे विनती की: "मेरे लिए रोटी का एक टुकड़ा
भी लेते आना."

12 उस स्त्री ने उन्हें उत्तर दिया, "याहवेह, आपके जीवित
परमेश्वर की शपथ, मैंने कुछ भी नहीं पकाया है. घर पर एक
बर्तन में मुट्ठी भर आटा और एक कुप्पी में थोड़ा-सा तेल ही
बाकी रह गया है. अब मैं यहां थोड़ी सी लकड़ियां बीन रही थी,
कि जाकर कुछ पका लूंगी, कि मैं और मेरा पुत्र इसे खाएं;
उसके बाद मृत्यु तो तय है ही."

13 एलियाह ने उससे कहा, "डरो मत. वही करो जैसा अभी
तुमसे कहा है. हां, मेरे लिए एक छोटी रोटी बनाकर ले आना,
इसके बाद अपने लिए और अपने पुत्र के लिए भी बना लेना.

14 याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर का यह संदेश है, 'उस बर्तन
का आटा खत्म न होगा और तेल की वह कुप्पी उस दिन तक
खाली न होगी, जब तक याहवेह पृथ्वी पर बारिश न भेज दें.' "

15 वह गई और ठीक वैसा ही किया, जैसा एलियाह ने कहा था.
एलियाह और उस स्त्री का परिवार इससे अनेक दिन तक
भोजन करते रहे.

16 उस बर्तन में न आटा खत्म हुआ और न ही तेल की वह
कुप्पी कभी खाली हुई, एलियाह द्वारा दिए गए याहवेह के
संदेश के अनुसार.

17 कुछ समय बाद जो उस घर की स्वामिनी का पुत्र बीमार हो
गया. उसका रोग ऐसा बढ़ गया था कि उसका सांस लेना बंद
हो गया.

1 Kings 18:1

18 उस स्त्री ने एलियाह से कहा, “परमेश्वर के दूत, मुझसे ऐसी
कौन सी भूल हो गई है? आपके यहां आने का उद्देश्य यह है
कि मुझे मेरा पाप याद कराया जाए और मेरे पुत्र के प्राण ले
लिए जाएं?”

19 एलियाह ने उससे कहा, “अपना पुत्र मुझे दो.” यह कहते हुए
उन्होंने उसके पुत्र को उसके हाथों से ले लिया और उसे उसी
ऊपरी कमरे में ले गए, जहां वह ठहरे हुए थे, और उसी बिछौने
पर लिटा दिया, जिस पर वह सोते थे.

20 उन्होंने याहवेह को पुकारते हुए कहा, “याहवेह, मेरे
परमेश्वर, क्या इस विधवा पर, जिसके यहां मैंने आसरा लिया
है, क्या, यह विपत्ति आपके ही के द्वारा लाई गई है, कि उसके
पुत्र की मृत्यु हो गई है?”

21 यह कहकर वह बालक पर तीन बार पसरे और याहवेह की
दोहाई देते हुए कहा, “याहवेह, मेरे परमेश्वर, इस बालक के
प्राण उसमें लौटा दीजिए.”

22 याहवेह ने एलियाह की दोहाई सुन ली; बालक के प्राण
उसमें लौट आए और वह जीवित हो गया.

23 एलियाह बालक को लेकर ऊपरी कमरे से घर में आ गए
और उसे उसकी माता को सौंप दिया. और उससे कहा,
“देखो, तुम्हारा पुत्र जीवित है.”

24 यह देख वह स्त्री एलियाह से कहने लगी, “अब मैं यह जान
गई हूं कि आप परमेश्वर के दूत हैं और आपके मुख से निकला
हुआ याहवेह का संदेश सच है.”

1 Kings 18:1

1 एक लंबे समय के बाद, तीसरे साल में एलियाह को याहवेह
का यह आदेश प्राप्त हुआ: “जाओ, स्वयं को अहाब के सामने
पेश करो. मैं पृथ्वी पर बारिश भेज रहा हूं.”

2 तब एलियाह अपने आपको अहाब की उपस्थिति में प्रस्तुत
करने चले गए. इस समय शमरिया में अकाल बहुत ही भारी
था.

3 अहाब ने ओबदयाह को बुलवाया. ओबदयाह याहवेह का
बड़ा भक्त था.

4 वास्तव में जब ईजेबेल ने याहवेह के भविष्यवक्ताओं को
मारना शुरू किया था, ओबदयाह ने सौ भविष्यवक्ताओं को
पचास-पचास करके गुफा में छिपा रखा था और वह उनके
लिए भोजन और जल का प्रबंध करते रहे थे.

5 अहाब ने ओबदयाह से कहा, “सारे देश में जाकर जल के
सोतों और घाटियों की खोज करो. संभव है हमें हमारे घोड़ों
और खच्चरों के लिए चारा मिल ही जाए और उनके प्राण बच
जाएं. इस प्रकार हमारे पशु नाश होने से बच जाएंगे.”

6 इसके लिए अहाब और ओबदयाह ने सारे देश को दो भागों
में बांट लिया. अहाब एक दिशा में चला गया और ओबदयाह
अकेले दूसरी दिशा में.

7 जब ओबदयाह मार्ग में ही थे कि उनकी भेंट एलियाह से हो
गई. ओबदयाह ने उन्हें पहचान लिया. भूमि पर मुख के बल
होकर उन्होंने एलियाह से कहा, “क्या आप ही मेरे स्वामी
एलियाह हैं?”

8 एलियाह ने उत्तर दिया, “हां. जाकर अपने स्वामी को सूचित
करो, ‘देखिए, एलियाह आ गया है.’ ”

9 ओबदयाह ने उन्हें उत्तर दिया, “मुझसे ऐसा कौन सा पाप हो
गया है,” जो आप मृत्यु दंड के लिए मुझे अहाब के हाथों में सौंप
रहे हैं?

10 “याहवेह, आपके जीवित परमेश्वर की शपथ, न तो कोई
ऐसा देश है न ऐसा राष्ट्र, जहां मेरे स्वामी ने आपको खोजने
किसी को न भेजा हो. और जब उन्हें यह सूचना दी गयी,
एलियाह तो यहां भी नहीं है, वह उस देश और राष्ट्र से शपथ
खिलाई, कि खोजने पर भी उन्हें आप नहीं मिले.

11 और यहां आपका आदेश है, जाकर अपने स्वामी को
बताओ, ‘देखिए, यहां है एलियाह!’

12 मैं जैसे ही यहां आपको छोड़कर जाऊंगा, याहवेह के
आत्मा आपको न जाने कहां ले जाएंगे. और जब मैं अहाब को
सूचना दूंगा और वह आपको यहां नहीं पाएंगे, वह तो मुझे मृत्यु

1 Kings 18:1

दंड दे देंगे, जबकि मैं आपका सेवक बचपन से याहवेह के लिए भय रखता आया हूं.

13 क्या मेरे स्वामी को इस विषय में बताया नहीं गया, कि जब ईजेबेल ने याहवेह के भविष्यवक्ताओं की हत्या कर दी थी, मैंने उस स्थिति में क्या किया था, मैंने कैसे याहवेह के सौ भविष्यवक्ताओं को पचास-पचास करके गुफा में छिपा दिया था और उनके लिए भोजन और जल की व्यवस्था की थी?

14 और अब आप आदेश दे रहे है, जाकर अपने स्वामी को सूचना दो, 'देखिए, यहां है एलियाह.' अहाब तो ज़रूर मेरी हत्या कर देंगे!"

15 एलियाह ने उन्हें उत्तर दिया, "मैं जिनका सेवक हूं, उस जीवित, सेनाओं के याहवेह की शपथ, आज मैं निश्चित ही अपने आपको अहाब के सामने प्रस्तुत करूंगा."

16 तब ओबदयाह अहाब से भेंटकरने चले गए. और उन्हें यह सूचना दे दी. अहाब एलियाह से मिलने चला.

17 एलियाह को देखते ही अहाब कह उठा, "अच्छा तुम्हीं हो इस्राएल के सतानेवाले!"

18 एलियाह ने उत्तर दिया, "सतानेवाला मैं नहीं, आप और आपके पिता का परिवार है. आप हैं जिन्होंने याहवेह के आदेशों को टाला है और बाल देवताओं का अनुसरण किया है.

19 इसलिये अब मेरे सामने कर्मेल पर्वत पर सारे इस्राएल को इकट्ठा होने के लिए आदेश भेजिए. इसके अलावा बाल के चार सौ पचास और अशेरा के चार सौ भविष्यवक्ताओं को भी बुलाइए, जो ईजेबेल की मेज़ पर भोजन करते हैं."

20 तब अहाब ने सारे इस्राएल और भविष्यवक्ताओं को कर्मेल पर्वत पर इकट्ठा होने का आदेश दिया.

21 एलियाह ने भीड़ के निकट आकर कहा, "दो मतों के बीच तुम लोग और कब तक डगमगाते रहोगे? यदि याहवेह ही परमेश्वर हैं तो उनका अनुसरण करो; और अगर बाल, तो उसका." इसके उत्तर में लोग एक शब्द तक न कह सके.

22 तब एलियाह ने भीड़ को कहा, "सिर्फ मैं; याहवेह का भविष्यद्वक्ता बाकी रह गया हूं, मगर बाल के भविष्यद्वक्ता चार सौ पचास व्यक्ति हैं.

23 हमें दो बछड़े दिए जाएं. उन्हें अपने लिए बछड़ा चुनने दिया जाए. वे उसके टुकड़े कर लकड़ी पर सजा दें, मगर लकड़ी में आग न लगाई जाए. मैं भी दूसरे बछड़े को तैयार कर लकड़ी पर सजाऊंगा मगर उसमें आग न लगाऊंगा.

24 तुम लोग अपने देवता की दोहाई देना और मैं याहवेह की दोहाई दूंगा. परमेश्वर वही होगा, जो आग के द्वारा उत्तर देगा." भीड़ ने एक स्वर में उत्तर दिया, "अच्छा विचार है यह!"

25 एलियाह ने बाल के भविष्यवक्ताओं के सामने प्रस्ताव रखा, "अपने लिए एक बछड़ा चुन लो और पहले तुम इसे तैयार करो, क्योंकि तुम लोग गिनती में अधिक हो. अपने देवता की दोहाई दो, मगर उसमें आग न लगाना."

26 उन्होंने उन्हें दिए गए बछड़े को लेकर उसे बलि के लिए तैयार किया और उन्होंने बाल को बलि देनी शुरू की और सुबह से दोपहर तक वे यह कहकर दोहाई देते रहे, "हे बाल, हमारी सुनो!" किंतु न तो कोई आवाज ही सुनी गई और न किसी से कोई उत्तर ही मिला. वे अपनी बनाई हुई वेदी के आस-पास उछलते-कूदते रहे.

27 दोपहर के समय एलियाह ने उनका मज़ाक उड़ाकर कहा: "थोड़ा ऊंची आवाज में पुकारो! वह देवता है, हो सकता है वह ध्यानमग्न होगा, या वह शौच के लिए गया होगा या यह भी संभव है कि वह यात्रा पर गया हो या वह गहरी नींद में हो, जिसे जगाना ज़रूरी हो गया है."

28 तब वे ऊंची आवाज में चिल्लाते हुए अपनी प्रथा के अनुसार तलवारों और बर्छियों से अपने आपको छेदने लगे, जिससे उनकी देह लहूलुहान हो गई.

29 दोपहर के बाद, वे संध्या बलि तक आवेश में पागलों जैसे बड़बड़ाते रहे, मगर कहीं से कोई आवाज सुनाई नहीं दी. न किसी ने उत्तर दिया न किसी ने इनकी ओर ध्यान दिया.

30 तब सभी लोगों को एलियाह ने कहा, "मेरे पास आओ." सभी उनके पास आ गए. एलियाह ने याहवेह की वेदी की मरम्मत की थी, जो इस समय टूटी-फूटी थी.

1 Kings 19:1

31 एलियाह ने, जिस याकोब से याहवेह का यह वादा था,
“तुम्हारे नाम इस्राएल होगा,” उस याकोब के पुत्रों के गोत्रों की
गिनती के अनुसार बारह पत्थर इकट्ठे किए थे.

32 एलियाह ने इन बारह पत्थरों को लेकर याहवेह के सम्मान
में एक वेदी बनाई. इसके बाद उन्होंने वेदी के चारों ओर ऐसी
गहरी नाली खोद दी, जिसमें लगभग ग्यारह किलो बीज समा
सकता था.

33 फिर उन्होंने लकड़ी काटकर वेदी पर सजाकर रख दी और
बछड़े को टुकड़े-टुकड़े कर लकड़ियों पर सजा दिया. इसके
बाद उन्होंने उन्हें आदेश दिया, “चार घड़े जल से भरकर सारा
जल होमबलि और लकड़ियों पर उंडेल दो.”

34 फिर उन्होंने कहा, “यही एक बार फिर करो.” उन्होंने वैसा
ही किया. फिर एलियाह ने कहा, “यही एक बार फिर करो.”
उन्होंने यह सब तीसरी बार भी किया.

35 जल वेदी के चारों ओर बह निकला, और नालियां तक जल
से भर गईं.

36 शाम की बलि चढ़ाने के समय भविष्यद्वक्ता एलियाह ने वेदी
के निकट आकर यह दोहाई दी, “याहवेह, अब्राहाम,
यित्सहाक और याकोब के परमेश्वर, आज यह सबको पता
चल जाए कि इस्राएल देश में परमेश्वर सिर्फ आप ही हैं, और
यह भी कि मैं आपका सेवक हूं, और यह सब मैंने सिर्फ आपके
ही आदेश पर किया है.

37 याहवेह, मुझे उत्तर दीजिए, मुझे उत्तर दीजिए, कि ये लोग
जान जाएं कि आप, याहवेह, ही परमेश्वर हैं, और आपने ही
उनके हृदय अपनी ओर दोबारा फेर लिए हैं.”

38 यह पूरा होते ही याहवेह द्वारा भेजी गई आग गिरी! उससे
होमबलि, लकड़ियां, पत्थर और धूल, सभी कुछ भस्म हो गया,
और आग नाली में भरा जल चट कर गई.

39 जब उन सबने यह सब देखा, वे मुंह के बल ज़मीन पर
गिरकर यह स्वीकारने लगे, “याहवेह ही परमेश्वर हैं, याहवेह
ही परमेश्वर हैं.”

40 एलियाह ने उन्हें आदेश दिया, “बाल के भविष्यवक्ताओं को
पकड़ लो; एक भी बचने न पाए.” उन्होंने उन्हें पकड़ लिया.
एलियाह उन्हें कीशोन नाले पर ले गए और वहां उन सबको
मार दिया.

41 एलियाह ने अहाब से कहा, “उठिए, और भोजन कर
लीजिए. मुझे मूसलाधार बारिश की आवाज सुनाई दे रही है.”

42 तब अहाब भोजन करने चला गया. एलियाह कर्मेल पर्वत
के शिखर पर चले गए. उन्होंने भूमि की ओर झुककर अपने
चेहरे को घुटनों में छिपा लिया.

43 और अपने सेवक को आदेश दिया, “जाकर समुद्र की दिशा
में देखते रहो.” उसने जाकर देखा और सूचना दी. “वहां तो
कुछ भी नहीं है!” एलियाह ने यह आदेश सात बार दिया
“जाकर फिर देखो!”

44 सातवीं बार सेवक ने सूचना दी, “देखिए-देखिए! मनुष्य की
बांह के समान बादल का एक छोटा टुकड़ा समुद्र की सतह से
उठ रहा है.” एलियाह ने सेवक को आदेश दिया, “जाकर
अहाब से कहो, ‘अपना रथ तैयार कर पर्वत से नीचे उतर
जाइए, कहीं ऐसा न हो कि आप बारिश में घिर जाएं.’ ”

45 कुछ ही देर बाद आकाश बादलों से काला हो गया, क्योंकि
हवा बहने लगी थी और मूसलाधार बारिश शुरू हो गई. अहाब
रथ पर येज्रील चला गया.

46 याहवेह की कृपादृष्टि में एलियाह ने ऐसा बल पाया, कि
उन्होंने अपने ढीले कपड़े समेटे और कमर कसकर दौड़ते
हुए अहाब के रथ से आगे निकलकर येज्रील तक पहुंच गए.

1 Kings 19:1

1 अहाब ने एलियाह के सारे कामों का वर्णन ईजेबेल को जा
सुनाया, कि किस प्रकार उसने बाल के सारे भविष्यवक्ताओं
को तलवार से घात कर दिया था.

2 इस पर ईजेबेल ने एलियाह के पास एक दूत के द्वारा यह
संदेश भेज दिया, “अगर कल इस समय तक मैं तुम्हारा जीवन
उन भविष्यवक्ताओं में से एक के जीवन के समान न बना दूं,
तो देवता मेरे साथ ऐसा ही, बल्कि इससे भी अधिक करें.”

3 यह सुन एलियाह इतने डर गए, कि वह अपने प्राण लेकर भागे. वह भागते हुए यहूदिया के बेअरशेबा नगर जा पहुंचे. उन्होंने अपने सेवक को वहीं छोड़ दिया,

4 और वह खुद एक दिन की यात्रा कर बंजर भूमि में जा पहुंचे, जहां वह एक झाऊ के पेड़ के नीचे बैठ गए. वहां उन्होंने इन शब्दों में अपनी मृत्यु की प्रार्थना की, "याहवेह, अब तो बहुत हो चुका. मेरे प्राण ले लीजिए. मुझमें मेरे पूर्वजों की तुलना में कुछ भी अच्छा नहीं है."

5 वह उस झाऊ के पेड़ के नीचे लेट गए और वहीं सो गए. एक स्वर्गदूत वहां आया और उन्हें छूकर उनसे कहा, "उठिए, भोजन कर लीजिए."

6 उन्होंने देखा कि उनके सिर के पास रोटी रखी थी, जो गर्म पत्थर पर पकाई हुई थी, और वहीं एक बर्तन में पानी भी रखा था. उन्होंने भोजन किया, जल पिया और दोबारा लेट गए.

7 याहवेह का दूत दूसरी बार उनके पास प्रकट हुआ, उन्हें छुआ और उनसे कहा, "उठिए, भोजन कीजिए. आपको एक लंबी यात्रा करनी है."

8 एलियाह उठे, उन्होंने भोजन किया, जल पिया और उसी भोजन से बल पाकर चालीस दिन और चालीस रात लगातार चलते-चलते वह परमेश्वर के पर्वत होरेब पहुंच गए.

9 वहां पहुंचकर उन्होंने एक गुफा में शरण ली. उनके लिए वहां याहवेह का भेजा यह संदेश मिला, "तुम यहां क्या कर रहे हो, एलियाह?"

10 एलियाह ने उत्तर दिया, "मैं सर्वशक्तिमान याहवेह परमेश्वर के लिए बहुत ही उत्साही रहा हूं; मगर इस्राएलियों ने आपकी वाचा को त्याग दिया है, आपकी वेदियां गिरा दी हैं, और तलवार से आपके भविष्यवक्ताओं को मार दिया है और मैं, सिर्फ मैं, बाकी रह गया हूं. अब वे मेरे प्राणों के खोजी हैं, कि वे उन्हें भी ले लें."

11 उन्होंने आदेश दिया, "बाहर निकलकर पर्वत पर याहवेह के सामने खड़े हो जाओ, याहवेह वहां से होकर अभी निकल रहे हैं!" तब याहवेह के आगे-आगे प्रचंड आंधी ने पहाड़ को हिला दिया, चट्टानें तड़क गईं, मगर याहवेह की उपस्थिति वायु में न थी. प्रचंड आंधी के बाद एक भूकंप आया, मगर याहवेह की उपस्थिति भूकंप में भी न थी.

12 भूकंप के बाद आग बरसी, मगर याहवेह की उपस्थिति आग में भी न थी, आग के बाद एक धीमी सी आवाज!

13 जब एलियाह ने यह सुना, उसने अपने वस्त्र से अपना मुख ढांप लिया. वह गुफा से बाहर निकल गुफा के द्वार पर खड़े हो गए. तब उन्हें एक आवाज सुनाई दी, "एलियाह, तुम यहां क्या कर रहे हो?"

14 एलियाह ने उत्तर दिया, "मैं सर्वशक्तिमान याहवेह परमेश्वर के लिए बहुत ही उत्साही रहा हूं; मगर इस्राएलियों ने आपकी वाचा को त्याग दिया है, आपकी वेदियां गिरा दी हैं, और तलवार से आपके भविष्यवक्ताओं को मार दिया है, और सिर्फ मैं बाकी रह गया हूं, अब वे मुझे भी मारने की कोशिश कर रहे हैं."

15 याहवेह ने उन्हें आदेश दिया, "दमेशेक के बंजर भूमि के मार्ग पर चले जाओ, वहां पहुंचकर अराम के राजपद के लिए हाज़ाएल का राजाभिषेक करना,

16 इस्राएल के राजपद के लिए निमशी के पुत्र येहू का राजाभिषेक करना और अपने स्थान पर भविष्यद्वक्ता होने के लिए आबेल-मेहोलाह वासी शाफात के पुत्र एलीशा का अभिषेक करना.

17 तब जो कोई हाज़ाएल की तलवार से बच निकलेगा, उसको येहू मार देगा. और जो कोई येहू की तलवार से बच निकलेगा, उसके प्राण एलीशा ले लेगा.

18 फिर भी इस्राएल देश में मैं उन सात हज़ार व्यक्तियों को बचाकर रखूंगा, जिन्होंने न तो बाल के सामने घुटने टेके हैं और न अपने होंठों से उसका चुंबन ही लिया है."

19 तब एलियाह वहां से चल दिए. उन्हें शाफात के पुत्र एलीशा खेत में हल चलाते हुए मिले. हल में बारह जोड़े बैल जुते हुए थे, और वह खुद बारहवीं जोड़ी के साथ थे. एलीशा के पास से निकलते हुए एलियाह ने अपना बाहरी कपड़ा उन पर डाल दिया.

1 Kings 20:1

20 एलीशा अपने बैलों को वहीं छोड़ एलियाह के पीछे दौड़े
और उन्होंने एलियाह से कहा, “मुझे आज्ञा दीजिए कि मैं अपने
पिता और माता का चुंबन ले सकूं; तब लौटकर मैं आपका
अनुसरण करूंगा.” एलियाह ने उससे कहा, “जाओ मैं तुम्हें
रोक नहीं रहा.”

21 एलीशा एलियाह के पास से खेत में लौट आए, एक जोड़ी
बैल लिए और उन्हें बलि के रूप में भेंट किया. उसके बाद
जोते गए जूए को लेकर उससे उनके मांस को उबाला और
उस मांस को लोगों में बांट दिया और उन्होंने भोजन किया.
इसके बाद एलीशा एलियाह का अनुसरण करने चला गया
और एलियाह के सेवक बन गया.

1 Kings 20:1

1 अराम के राजा बेन-हदद ने अपनी सारी सेना इकट्ठी की.
उनके साथ बत्तीस राजा, घोड़े और रथ थे. उसने शमरिया की
घेराबंदी कर उससे युद्ध किया.

2 इसके बाद उसने दूतों द्वारा नगर में इस्राएल के राजा अहाब
को यह संदेश भेजा, “यह बेन-हदद का संदेश है,

3 ‘तुम्हारा सोना और चांदी मेरा है; तुम्हारी सबसे उत्तम पत्नियां
और तुम्हारे बच्चे भी मेरे हैं.’ ”

4 इस्राएल के राजा का उत्तर था, “महाराज, मेरे स्वामी, जैसा
आप कह रहे हैं, सही है. सब कुछ जो मेरा है आपका ही है
और मैं खुद भी आपका हूं.”

5 वे दूत दोबारा आए और उन्होंने यह संदेश दिया, “यह बेन-
हदद का संदेश है ‘मैंने तुमसे कहा था, “मुझे अपना सोना,
चांदी, पत्नियां और संतान दे दो,”

6 फिर भी, कल लगभग इसी समय मैं अपने सेवक तुम्हारे यहां
भेजूंगा. वे तुम्हारे घरों की और तुम्हारे सेवकों के घरों की
छानबीन करेंगे और वह सब लेकर यहां आ जाएंगे, जो तुम्हें
प्यारा है.’ ”

7 यह सुन इस्राएल के राजा ने देश के सारे पुरनियों की एक
सभा बुलाई और उन्हें यह कहा, “देख लीजिए, कैसे यह
व्यक्ति हमसे झगड़ा मोल ले रहा है! वह मुझसे मेरी पत्नियां
और संतान और मेरा सोना और चांदी छीनने की योजना बना
रहा है! मैंने यह अस्वीकार नहीं किया है.”

8 सारे पुरनियों और सभा के सदस्यों ने एक मत में कहा, “न
तो उसकी सुनिए और न ही उसे सहमति दीजिए.”

9 अहाब ने बेन-हदद के दूतों से यह कहा, “महाराज, मेरे
स्वामी से जाकर कहना, ‘आपने अपने सेवक से पहले जो कुछ
चाहा था, वह मैं करूंगा, किंतु यह मैं नहीं कर सकता.’ ” दूत
लौट गए और दोबारा आकर अहाब को यह संदेश दिया.

10 उनके लिए बेन-हदद का संदेश था, “देवता मुझसे ऐसा,
बल्कि इससे भी अधिक बुरा व्यवहार करें, यदि शमरिया की
धूल मेरे थोड़े से पीछे चलने वालों की मुट्ठी भरने के लिए भी
काफ़ी हो.”

11 इस्राएल के राजा ने उसे उत्तर दिया, “उससे जाकर कह दो,
‘वह जो हथियार धारण करता है, (विजयी होकर) वह उतारने
वाले के समान घमण्ड न करे.’ ”

12 बेन-हदद दूसरे राजाओं के साथ, छावनी में, दाखमधु पीने
में लगा था. जैसे ही उसने अहाब का संदेश सुना, उसने
सैनिकों को आदेश दिया, “चलो मोर्चे पर!” इस पर उन्होंने
नगर के विरुद्ध मोर्चा बांध लिया.

13 एक भविष्यद्वक्ता इस्राएल के राजा अहाब के सामने आ
गए. उन्होंने राजा से कहा, “यह याहवेह का संदेश है: ‘क्या
तुमने इस बड़ी भीड़ को देखी है? यह देख लेना कि आज मैं
इसे तुम्हारे अधीन कर दूंगा. तब तुम यह जान लोगे कि याहवेह
मैं ही हूं.’ ”

14 अहाब ने भविष्यद्वक्ता से प्रश्न किया, “कौन करेगा यह?”
“भविष्यद्वक्ता ने उत्तर दिया, ‘याहवेह का संदेश यह है, कि यह
काम राज्यपाल ही करेंगे.’ “तब अहाब ने प्रश्न किया, युद्ध की
पहल कौन करेगा?” भविष्यद्वक्ता ने उत्तर दिया, “आप.”

15 अहाब ने राज्यपालों के सेवकों को इकट्ठा किया; कुल
मिलाकर ये गिनती में दो सौ बत्तीस थे; उनके पीछे की
पंक्तियों में सात हज़ार इस्राएली सैनिक थे.

1 Kings 20:1

16 इन्होंने दोपहर के समय कूच किया. इस समय बेन-हदद
बत्तीस साथी राजाओं के साथ छावनी में बैठा हुआ दाखमधु
के नशे में धुत था.

17 राज्यपालों के सेवक सबसे आगे थे. बेन-हदद ने भेद लेने
के लिए भेदिये भेजे थे. उन्होंने लौटकर उसे यह सूचना दी,
“शमरिया से सेना निकल चुकी है.”

18 बेन-हदद ने आदेश दिया, “चाहे वे शांति के लक्ष्य से आ रहे
हैं या युद्ध के लक्ष्य से, उन्हें जीवित ही पकड़ लेना.”

19 तब वे नगर से बाहर निकल पड़े. राज्यपालों के सेवक आगे-
आगे और उनके पीछे सेना.

20 हर एक ने अपने-अपने सामने के सैनिक को मार दिया.
अरामी सेना के पैर उखड़ गए और इस्राएली सेना ने उनका
पीछा करना शुरू कर दिया; मगर अराम का राजा बेन-हदद
अपने घोड़े पर घुड़सवारों के साथ भाग निकला.

21 इस्राएल के राजा ने पीछा करके घोड़ों और रथों को खत्म
कर दिया. अरामी सेना हार गई और उसमें बड़ी मार-काट
हुई.

22 तब वह भविष्यद्वक्ता इस्राएल के राजा की उपस्थिति में
जाकर कहने लगा, “आप आइए और अपने आपको बलवंत
करे. फिर सावधानीपूर्वक विचार कीजिए कि अब आपको
क्या करना है; क्योंकि वसन्त ऋतु में अराम का राजा आप पर
हमला करेगा.”

23 अराम के राजा के मंत्रियों ने उससे कहा, “उनके देवता
पहाड़ियों के देवता हैं. यही कारण है कि वे हमसे अधिक
शक्तिशाली साबित हुए हैं, मगर आइए हम उनसे मैदान में
युद्ध करें, तब हम निश्चित ही उनसे अधिक मजबूत साबित
होंगे.

24 हम ऐसा करें; राजाओं को हटाकर सेनापतियों को उनकी
जगहों पर खड़ा कर दें,

25 और फिर हारी हुई सेना के समान घोड़े के लिए घोड़े और
रथ के लिए रथ की सेना इकट्ठी करें; फिर हम उनसे मैदान में
ही युद्ध करेंगे. निश्चित ही हम उनसे अधिक मजबूत साबित
होंगे.” राजा ने उनकी सलाह स्वीकार कर ली और वैसा ही
किया भी.

26 वसन्त काल में बेन-हदद ने अरामी सेना को इकट्ठा किया
और इस्राएल से युद्ध करने अफेक नगर की ओर बढ़ गया.

27 इस्राएली सैनिक भी इकट्ठे हुए, उन्होंने व्यूह रचना की
और अरामियों का सामना करने के लिए आगे बढ़े. इस्राएली
सेना ने उनके सामने ऐसे डेरे खड़े किए कि वे भेड़ों के दो छोटे
समूहों समान दिखाई दे रहे थे; मगर अरामी सेना पूरी तरह से
मैदान पर छा गई थी.

28 परमेश्वर के एक दूत ने आकर इस्राएल के राजा से कहा,
“यह संदेश याहवेह की ओर से है ‘इसलिये कि अरामियों का
यह मानना है, याहवेह सिर्फ पहाड़ियों का परमेश्वर है, मगर
घाटियों-मैदानों का नहीं, मैं इस पूरी बड़ी भीड़ को तुम्हारे
अधीन कर दूंगा, और तुम यह जान जाओगे कि मैं ही याहवेह
हूं.’ ”

29 सात दिन तक वे इसी स्थिति में एक दूसरे के आमने-सामने
डटे रहे. सातवें दिन युद्ध छिड़ गया. इस्राएली सेना ने एक ही
दिन में एक लाख अरामी पैदल सैनिकों को मार डाला,

30 बाकी अफेक नगर को भाग गए. उनमें से बाकी सत्ताईस
हज़ार की मृत्यु उन पर दीवार के ढहने से हो गई. बेन-हदद
भी भागा और एक भीतरी कमरे में जाकर छिप गया.

31 उसके सेवकों ने उससे कहा, “सुनिए, हमने सुना है कि
इस्राएल वंश के राजा कृपालु राजा होते हैं. हम ऐसा करें; हम
कमर में टाट लपेट लेते हैं, अपने सिर पर रस्सियां डाल लेते हैं
और इस्राएल के राजा की शरण में चले जाते हैं. संभव है वह
आपको प्राण दान दे दें.”

32 तब उन्होंने अपनी कमर में टाट लपेट ली, सिर पर रस्सियां
डाल लीं और जाकर इस्राएल के राजा से कहा, “आपके सेवक
बेन-हदद की विनती है, ‘कृपया मुझे प्राण दान दें.’ ” अहाब ने
उनसे पूछा, “क्या वह अब तक जीवित है? वह तो मेरा भाई
है.”

33 वहां बेन-हदद के मंत्री सही इशारे का इंतजार कर रहे थे.
इसे ही शुभ संकेत समझकर उन्होंने तुरंत उत्तर दिया, “जी हां,
जी हां, आपका ही भाई बेन-हदद.” राजा अहाब ने उन्हें

1 Kings 21:1

आदेश दिया, “जाओ, उसे ले आओ!” तब बेन-हदद अहाब के सामने आया. अहाब ने उसे अपने रथ पर ऊपर बुलाया.

34 बेन-हदद ने अहाब को कहा, “जो नगर मेरे पिता ने आपके
पिता से छीने थे, मैं उन्हें लौटा दूंगा. आप अपनी सुविधा के लिए
दमेशेक में अपने व्यापार के केंद्र बना सकते हैं; जैसा मेरे पिता
ने शमरिया में किया था.” अहाब ने बेन-हदद से कहा, “यदि
तुम्हारी ओर से यही सुझाव है, तो मैं तुम्हें मुक्त किए देता हूं.”
तब उसने बेन-हदद से संधि की और उसे मुक्त कर दिया.

35 याहवेह के आदेश पर भविष्यद्वक्ता मंडल के एक
भविष्यद्वक्ता ने अन्य सदस्य से विनती की, “कृपा कर मुझ पर
वार करो.” मगर उसने यह विनती अस्वीकार कर दी.

36 तब उस पहले ने दूसरे से कहा, “इसलिये कि तुमने याहवेह
की आज्ञा तोड़ी है, यह देख लेना कि जैसे ही तुम यहां से बाहर
जाओगे, एक शेर तुम्हें दबोच लेगा. हुआ भी यही: जैसे ही वह
वहां से बाहर गया एक सिंह ने उसे दबोच लिया और मार
डाला.”

37 तब उसे एक दूसरा व्यक्ति मिला. उससे उसने विनती की,
“कृपया मुझ पर वार कीजिए.” उस व्यक्ति ने उस पर वार
किया और ऐसा वार किया कि वह भविष्यद्वक्ता चोटिल हो
गया.

38 तब वह भविष्यद्वक्ता वहां से चला गया और जाकर मार्ग में
राजा का इंतजार करने लगा. उसने अपना रूप बदलने के
उद्देश्य से अपनी आंखों पर पट्टी बांध ली थी.

39 जैसे ही राजा वहां से गुजरा, उसने पुकारकर राजा से कहा,
“आपका सेवक युद्ध-भूमि में गया हुआ था. वहां एक सैनिक
ने एक व्यक्ति को मेरे पास लाकर कहा, ‘इस व्यक्ति की रक्षा
करना. यदि किसी कारण से मुझे लौटने पर यह यहां न मिले,
उसके प्राण के बदले में तुम्हारा प्राण लिया जाएगा. यदि यह
नहीं तो तुम्हें उसके स्थान पर मुझे पैंतीस किलो चांदी देनी
होगी.’

40 मैं, आपका सेवक जब अपने काम में जुट गया, वह व्यक्ति
वहां से जा चुका था.” इस्राएल के राजा ने उससे कहा, “तुम्हारा
न्याय तुम्हारे ही कथन के अनुसार किया जाएगा. तुमने खुद
अपना निर्णय सुना दिया है.”

41 तब भविष्यद्वक्ता ने तुरंत अपनी आंखों पर से पट्टी हटा दी
और इस्राएल का राजा तुरंत पहचान गया कि वह
भविष्यद्वक्ता मंडल में से एक भविष्यद्वक्ता है.

42 तब भविष्यद्वक्ता ने राजा से कहा, “यह संदेश याहवेह की
ओर से है, ‘जिस व्यक्ति को मैंने पूर्ण विनाश के लिए अलग
किया था, तुमने उसे अपने अधिकार में आने के बाद भी मुक्त
कर दिया है, अब उसके प्राणों के स्थान पर तुम्हारे प्राण ले लिए
जाएंगे और उसकी प्रजा के स्थान पर तुम्हारी प्रजा.’ ”

43 इस्राएल का राजा उदास और अप्रसन्न होकर शमरिया
पहुंचा.

1 Kings 21:1

1 येज़्रील में, शमरिया के राजा अहाब के राजघराने के पास
येज़्रीलवासी नाबोथ का एक दाख की बारी थी.

2 इन घटनाओं के बाद अहाब ने नाबोथ के सामने यह प्रस्ताव
रखा, “मुझे अपना दाख की बारी दे दो. मैं इसे अपने लिए साग-
पात का बगीचा बनाना चाहता हूं, क्योंकि यह मेरे घर के पास
है. इसकी जगह पर मैं तुम्हें इससे बेहतर अंगूर का बगीचा दे
दूंगा या अगर तुम्हें सही लगे तो मैं तुम्हें इसका पूरा दाम दे
सकता हूं.”

3 मगर नाबोथ ने अहाब को उत्तर दिया, “याहवेह यह कभी न
होने दें कि मैं अपने पूर्वजों की मीरास आपको सौंप दूं.”

4 अहाब उदास और गुस्सा होता हुआ अपने घर को लौट गया,
क्योंकि येज़्रीलवासी नाबोथ ने उसे कहा था, “मैं अपने पूर्वजों
की मीरास आपको सौंप नहीं सकता.” अहाब जाकर अपने
बिछौने पर लेट गया, अपना मुंह फेर लिया और उसने भोजन
भी न किया.

5 मगर उसकी पत्नी ईजेबेल ने उसके पास आ उससे कहा,
“आपके मन में ऐसी कौन सी उदासी है कि आप भोजन तक
नहीं कर रहे!”

6 राजा ने उसे उत्तर दिया, “इसलिये कि मैंने येज़्रीलवासी
नाबोथ से बातें की हैं और उसके सामने यह प्रस्ताव रखा,
‘अपनी दाख की बारी मुझे बेच दो या तुम चाहो तो मैं तुम्हें
इसकी जगह पर एक दूसरी दाख की बारी दिए देता हूं,’ मगर

1 Kings 21:1

उसने मुझे उत्तर दिया, ‘मैं तुम्हें अपनी दाख की बारी नहीं दे सकता.’ ”

7 उसकी पत्नी ईजेबेल ने उत्तर दिया, “क्या इस्राएल के राजा आप नहीं हैं? उठिए, भोजन कीजिए कि आपके चेहरे पर चमक आ जाए. येज़्रीलवासी नाबोथ की दाख की बारी आपको मैं दूंगी.”

8 इसके लिए ईजेबेल ने अहाब के नाम में पत्र लिखे, उन पर अहाब की मोहर लगा उन्हें नाबोथ के नगर के पुरनियों और बड़े लोगों को भेज दिया.

9 पत्रों में उसने लिखा था: “उपवास की घोषणा करो और नाबोथ को मुख्य स्थान पर बैठाना.

10 नाबोथ के ही सामने दो दुष्ट लोगों को भी बैठा देना. वे नाबोथ पर यह आरोप लगाएं: ‘तुमने परमेश्वर और राजा को शाप दिया है.’ तब उसे ले जाकर पत्थराव द्वारा उसकी हत्या कर देना.”

11 नाबोथ के नगरवासी पुरनियों और प्रमुखों ने ऐसा ही किया, जैसा ईजेबेल ने उन्हें आदेश दिया था; ठीक जैसा आदेश उन्हें पत्रों में ईजेबेल द्वारा दिया गया था.

12 उन्होंने उपवास की घोषणा की और नाबोथ को लोगों के बीच मुख्य स्थान पर बैठाया.

13 दो दुष्टों ने आकर सबके सामने यह कहकर नाबोथ पर आरोप लगाया: “नाबोथ ने परमेश्वर और राजा को शाप दिया है.” तब वे नाबोथ को नगर के बाहर ले गए, और पत्थराव कर उसकी हत्या कर दी.

14 इसके बाद उन्होंने ईजेबेल को यह सूचना भेज दी, “नाबोथ का पत्थराव किया चुका है; उसकी मृत्यु हो चुकी है.”

15 जैसा ही ईजेबेल को यह मालूम हुआ कि नाबोथ का पत्थराव किया गया और उसकी मृत्यु हो चुकी है, ईजेबेल ने अहाब से कहा, “उठिए! येज़्रीलवासी नाबोथ की दाख की बारी को अब अपने अधिकार में ले लीजिए. इस दाख की बारी के लिए वह आपसे इसका मूल्य भी स्वीकार करने के लिए तैयार न था, अब वह जीवित नहीं, मर चुका है.”

16 जैसे ही अहाब ने यह सुना कि नाबोथ की मृत्यु हो चुकी है, अहाब उठकर येज़्रीलवासी नाबोथ की दाख की बारी की ओर चल पड़ा, कि उस पर अधिकार कर ले.

17 तिशबेवासी एलियाह को याहवेह का यह संदेश भेजा गया:

18 “जाकर इस्राएल के राजा अहाब से, जो शमरिया में है, भेंटकरो. देखना इस समय वह नाबोथ की दाख की बारी में है, जहां वह उस पर अधिकार करने के लिए गया हुआ है.

19 तुम्हें उससे कहना, ‘यह याहवेह का संदेश है, तुमने हत्या की है, और अब अधिकार भी कर लिया न?’ फिर यह कहना होगा: ‘यह याहवेह का संदेश है, जहां कुत्तों ने नाबोथ का लहू चाटा है, वहीं वे तुम्हारा लहू भी चाटेंगे!’ ”

20 अहाब ने एलियाह से कहा, “मेरे शत्रु, तुम फिर मेरे सामने आ गए!” एलियाह ने उत्तर दिया, “मुझे आना पड़ा, क्योंकि आपने अपने आपको उस काम के लिए समर्पित कर रखा है, जो याहवेह की दृष्टि में गलत है.

21 याहवेह कहते हैं, ‘यह देखना, मैं तुम पर बहुत विपत्ति बरसाऊंगा. मैं तुम्हें पूरी तरह भस्म कर दूंगा और मैं इस्राएल में अहाब के परिवार से हर एक पुरुष को—बंधुआ हो या स्वतंत्र—मिटा दूंगा.

22 मैं तुम्हारे परिवार को नेबाथ के पुत्र यरोबोअम के समान और अहीयाह के पुत्र बाशा के समान बना दूंगा, क्योंकि तुमने मुझे क्रोध के लिए भड़काया और इस्राएल को पाप की ओर उकसाया है.’

23 “हां, ईजेबेल के लिए भी याहवेह का संदेश है, ‘येज़्रील नगर की सीमा के भीतर ही कुत्ते ईजेबेल को खा जाएंगे.’

24 “अहाब के किसी भी संबंधी की मृत्यु नगर में होगी वह कुत्तों का भोजन हो जाएगा, और जिस किसी की मृत्यु नगर के बाहर खुले मैदान में होगी, वह आकाश के पक्षियों का भोजन हो जाएगा.”

25 (निःसंदेह ऐसा कोई भी न हुआ, जो याहवेह के सामने बुराई
के लिए अहाब के समान लगा रहा—अहाब, जिसे उसकी पत्नी
ईजेबेल उकसाती रहती थी.

26 उसकी मूर्तियों की पूजा करना, जैसा अमोरी किया करते
थे, जिन्हें याहवेह ने इस्राएली प्रजा के सामने से निकाल दिया
था, बहुत ही घृणित काम था.)

27 यह सुनकर अहाब ने अपने वस्त्र फाड़ दिए, और टाट लपेट
लिया, उपवास किया, टाट पर ही सोने लगा और विलाप करते
हुए ही अपना पूरा दिन गुज़ारने लगा.

28 तिशबे एलियाह के पास याहवेह का यह संदेश पहुंचा,

29 "क्या तुमने देखा कि अहाब मेरे सामने कैसा विनम्र हो गया
है? उसकी इस विनम्रता के कारण मैं यह विपत्ति उसके
जीवनकाल में नहीं, बल्कि उसके पुत्र के शासनकाल में ही
उसके परिवार पर डालूंगा."

1 Kings 22:1

1 तीन साल तक इस्राएल और अराम के बीच युद्ध न हुआ.

2 तीसरे साल यहूदिया का राजा यहोशाफ़ात इस्राएल के राजा
अहाब से भेंटकरने आया.

3 इस्राएल के राजा ने अपने सेवकों से कहा, "क्या तुम्हें मालूम
है कि रामोथ-गिलआद हमारे अधिकार क्षेत्र में है और हम इसे
अराम के राजा से दोबारा पाने के लिए कुछ भी नहीं कर रहे
हैं?"

4 तब उसने यहोशाफ़ात से प्रश्न किया, "क्या आप रामोथ-
गिलआद में युद्ध करने मेरे साथ चलेंगे?" यहोशाफ़ात ने
इस्राएल के राजा को उत्तर दिया, "मैं आपके ही जैसा हूं, मेरी
प्रजा आपकी प्रजा के समान और घोड़े आपके घोड़ों के
समान."

5 यहोशाफ़ात ने इस्राएल के राजा से कहा, "सबसे पहले
याहवेह की इच्छा मालूम कर लें."

6 तब इस्राएल के राजा ने भविष्यवक्ताओं को इकट्ठा किया. ये
लगभग चार सौ व्यक्ति थे. उसने भविष्यवक्ताओं से प्रश्न किया,
"मैं रामोथ-गिलआद से युद्ध करने जाऊं, या यह विचार छोड़
दूं?" उन्होंने उत्तर दिया, "आप जाइए, क्योंकि याहवेह उसे
राजा के अधीन कर देंगे."

7 मगर यहोशाफ़ात ने प्रश्न किया, "क्या यहां याहवेह का कोई
भविष्यद्वक्ता नहीं, जिससे हम यह मालूम कर सकें?"

8 इस्राएल के राजा ने यहोशाफ़ात को उत्तर दिया, "हां, यहां
एक और व्यक्ति है, जिससे हम याहवेह की इच्छा जान सकते
है; इमलाह का पुत्र मीकायाह; मगर मुझे उससे घृणा है;
क्योंकि उसकी भविष्यवाणी में मेरे लिए कुछ भी भला नहीं,
बल्कि बुरा ही हुआ करता है." इस पर यहोशाफ़ात ने कहा,
"राजा का ऐसा कहना अच्छा नहीं है."

9 तब इस्राएल के राजा ने अपने एक अधिकारी को बुलाकर
आदेश दिया, "जल्दी ही इमलाह के पुत्र मीकायाह को ले
आओ."

10 इस्राएल का राजा और यहूदिया के राजा यहोशाफ़ात
शमरिया के फाटक के सामने खुले खलिहान में राजसी वस्त्रों
में अपने-अपने सिंहासनों पर बैठे थे. उनके सामने सारे
भविष्यद्वक्ता भविष्यवाणी कर रहे थे.

11 तभी केनानाह का पुत्र सीदकियाहू, जिसने अपने लिए लोहे
के सींग बनाए थे, कहने लगा, "यह संदेश याहवेह की ओर से
है, 'इन सींगों के द्वारा आप अरामियों पर इस रीति से वार
करेंगे, कि वे खत्म हो जाएंगे.' "

12 सारे भविष्यद्वक्ता यही भविष्यवाणी कर रहे थे, "रामोथ-
गिलआद पर हमला कीजिए और विजयी हो जाइए. याहवेह
इसे राजा के अधीन कर देंगे."

13 उस दूत ने, जो मीकायाह को लाने के लिए भेजा गया था,
मीकायाह से कहा, "देख लो, सारे भविष्यद्वक्ता राजा के लिए
अनुसार और भलाई में ही भविष्यवाणी कर रहे हैं. तुम्हारी
भविष्यवाणी भी इन्हीं में से एक के समान हो. तुम भी भली
भविष्यवाणी ही करना."

14 मगर मीकायाह ने कहा, "जीवित याहवेह की शपथ, मैं
सिर्फ वही कहूंगा, जिसके लिए याहवेह मुझे भेजेंगे."

1 Kings 22:1

15 जब मीकायाह राजा के सामने पहुंचा, राजा ने उससे प्रश्न
किया, “मीकायाह, क्या हम रामोथ-गिलआद से युद्ध करें या
इसका विचार ही छोड़ दें?” मीकायाह ने राजा को उत्तर दिया,
“आप जाइए और सफलता प्राप्त कीजिए. याहवेह इसे राजा
के अधीन कर देंगे.”

16 राजा ने मीकायाह से कहा, “मीकायाह, मुझे तुम्हें कितनी
बार इसकी शपथ दिलानी होगी कि तुम्हें मुझसे याहवेह के
नाम में सच के सिवाय और कुछ भी नहीं कहना है?”

17 तब मीकायाह ने उत्तर दिया, “मैंने सारे इस्राएल को बिन
चरवाहे की भेड़ों के समान पहाड़ों पर तितर-बितर देखा. तभी
याहवेह ने कहा, ‘इनका तो कोई स्वामी ही नहीं है. हर एक को
शांतिपूर्वक अपने-अपने घर लौट जाने दो.’ ”

18 इस्राएल के राजा ने यहोशाफ़ात से कहा, “मैंने कहा था न,
कि यह मेरे बारे में बुरी भविष्यवाणी ही करेगा, भली नहीं?”

19 इस पर मीकायाह ने उत्तर दिया, “बहुत बढ़िया! तो फिर
याहवेह का संदेश भी सुन लीजिए: मैंने याहवेह को उनके
सिंहासन पर बैठे देखा. उनके दाईं और बाईं ओर में सारी
स्वर्गिक सेना खड़ी हुई थी.

20 याहवेह ने वहां प्रश्न किया, ‘यहां कौन है, जो अहाब को ऐसे
लुभाएगा कि वह रामोथ-गिलआद जाए और वहां जाकर मारा
जाए?’ “किसी ने वहां कुछ उत्तर दिया और किसी ने कुछ और.

21 तब वहां एक आत्मा आकर याहवेह के सामने खड़े होकर
यह कहने लगा, ‘मैं उसे लुभाऊंगा.’

22 “ ‘कैसे?’ याहवेह ने उससे प्रश्न किया. “उसने उत्तर दिया,
‘मैं जाकर राजा के सभी भविष्यवक्ताओं के मुख में झूठी
आत्मा बन जाऊंगी.’ ” इस पर याहवेह ने कहा, “ ‘तुम्हें इसमें
सफल भी होना होगा. जाओ और यही करो.’

23 “इसलिये देख लीजिए, याहवेह ने इन सारे भविष्यवक्ताओं
के मुंह में छल का एक आत्मा डाल रखा है. आपके लिए
याहवेह ने सर्वनाश की घोषणा कर दी है.”

24 यह सुन केनानाह का पुत्र सीदकियाहू सामने आया और
मीकायाह के गाल पर मारते हुए कहने लगा, “याहवेह का
आत्मा मुझमें से निकलकर तुमसे बातचीत करने किस प्रकार
जा पहुंचा?”

25 मीकायाह ने उसे उत्तर दिया, “तुम यह देख लेना, जब उस
दिन तुम छिपने के लिए भीतर के कमरे में शरण लोगे.”

26 इस्राएल के राजा ने कहा, “पकड़ लो, मीकायाह को! उसे
हाकिम अमोन और राजकुमार योआश के पास ले जाओ.

27 उनसे कहना, ‘यह राजा का आदेश है: इस व्यक्ति को जेल
में डाल दो और उसे उस समय तक ज़रा सा ही भोजन और
पानी देना, जब तक मैं सुरक्षित न लौट आऊं.’ ”

28 इस पर मीकायाह ने कहा, “यदि आप सच में सकुशल लौट
आएं, तो यह समझ लीजिए कि याहवेह ने मेरे द्वारा यह सब
प्रकट किया ही नहीं है.” और फिर भीड़ से उसने कहा, “आप
सब भी यह सुन लीजिए.”

29 फिर भी इस्राएल के राजा और यहूदिया के राजा
यहोशाफ़ात ने रामोथ-गिलआद पर हमला कर दिया.

30 इस्राएल के राजा ने यहोशाफ़ात से कहा, “मैं भेष बदलकर
युद्ध-भूमि में जाऊंगा, मगर आप अपनी राजसी वेशभूषा ही
पहने रहिए.” इस्राएल का राजा भेष बदलकर युद्ध-भूमि में
गया.

31 अराम के राजा ने अपनी रथ सेना के बत्तीस प्रधानों को
आदेश दे रखा था, “युद्ध न तो साधारण सैनिकों से करना और
न मुख्य अधिकारियों से, सिर्फ इस्राएल के राजा को निशाना
बनाना.”

32 जैसे ही इन अधिकारियों ने यहोशाफ़ात को देखा, उन्होंने
समझा, “ज़रूर यही इस्राएल का राजा है.” तब वे यहोशाफ़ात
की ओर लपके. इस पर यहोशाफ़ात चिल्ला उठा.

33 जब प्रधानों ने देखा कि वह इस्राएल का राजा नहीं था,
उन्होंने उसका पीछा करना छोड़ दिया.

1 Kings 22:1

34 इसी समय किसी एक सैनिक ने बिना कोई निशाना साधे
ही अपना बाण छोड़ दिया. वह बाण जाकर इस्राएल के राजा
के कवच के जोड़ पर जा लगा. तब राजा ने सारथी को आदेश
दिया, “रथ मोड़ो और मुझे युद्ध-भूमि से बाहर ले चलो, मैं बुरी
तरह से ज़ख्मी हो गया हूं.”

35 युद्ध तेज होता चला गया. अरामियों के सामने राजा को रथ
में खड़ा हुआ पेश किया गया. शाम को राजा के प्राणपखेरु
उड़ गए. उसका खून बहता हुआ रथ के पेंदे में जमा होता रहा.

36 शाम को सारी सेना में यह घोषणा की गई: “हर एक व्यक्ति
अपने-अपने नगर को और हर एक सैनिक अपने-अपने देश
को लौट जाए.”

37 राजा के शव को शमरिया लाया गया और उसे शमरिया में
गाड़ दिया गया.

38 रथ को शमरिया के तालाब के तट पर धोया गया, और उस
खून को कुत्ते चाटते रहे. इस समय वह जगह वेश्याओं के
नहाने के लिए ठहराया हुआ घाट था. यह ठीक वैसा ही हुआ
जैसी याहवेह की भविष्यवाणी थी.

39 अहाब द्वारा किए गए बाकी काम और वह सब, जो उसके
द्वारा किया गया, उसके द्वारा बनाया गया हाथी-दांत का भवन
और उसके द्वारा बनाए नगरों का ब्यौरा इस्राएल के राजाओं
की इतिहास की पुस्तक में दिया गया है.

40 अहाब अपने पूर्वजों के साथ हमेशा के लिए जा मिला, और
उसकी जगह पर उसका पुत्र अहज़्याह राजा बना.

41 इस्राएल के राजा अहाब के शासनकाल के चौथे साल में
आसा के पुत्र यहोशाफ़ात ने यहूदिया पर शासन करना शुरू
किया.

42 जब उसने शासन की बागडोर संभाली, उसकी उम्र पैंतीस
साल की थी. उन्होंने येरूशलेम में पच्चीस साल शासन किया.
उसकी माता का नाम अत्सूबा था, वह शिल्ही की पुत्री थी.

43 यहोशाफ़ात का व्यवहार सभी बातों में उनके पिता आसा
के समान था. वह कभी उस तरह के जीवन से अलग न हुआ.
उसके काम वे ही थे, जो याहवेह की दृष्टि में सही थे. फिर भी,
पूजा स्थलों की वेदियां तोड़ी नहीं गई थी. लोग पूजा स्थलों की
वेदियों पर धूप जलाते और बलि चढ़ाते रहे.

44 इनके अलावा यहोशाफ़ात ने इस्राएल के राजा के साथ
शांति की वाचा बांधी.

45 यहोशाफ़ात की बाकी उपलब्धियां, उसके द्वारा किए गए
वीरता के काम, और उसके युद्ध कौशल का ब्यौरा यहूदिया
के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में किया गया है.

46 उसने अपने पिता आसा के शासनकाल से बाकी रह गए
अन्य देवताओं के मंदिर में काम कर रहे पुरुष वेश्याओं को
निकाल दिया.

47 एदोम देश में कोई राजा न था; वहां सिर्फ राजा द्वारा एक
दूत चुना गया था.

48 यहोशाफ़ात ने दोबारा ओफीर से सोना आयात करने के
लिए तरशीश के समान जहाज़ बनाए; मगर वे यात्रा पर जा ही
न सके, क्योंकि वे एज़िओन-गेबेर नामक स्थान पर ही टूट गए.

49 अहाब के पुत्र अहज़्याह ने यहोशाफ़ात के सामने प्रस्ताव
रखा, “जहाजों में अपने सेवकों के साथ मेरे सेवकों को भी ले
लीजिए,” मगर यहोशाफ़ात इसके लिए राज़ी न हुआ.

50 यहोशाफ़ात हमेशा के लिए अपने पूर्वजों में मिल गया. उसे
उसके पूर्वज दावीद के नगर में उसके पूर्वजों के साथ गाड़ा
दिया. उसके स्थान पर उसका पुत्र यहोराम राजा हुआ.

51 यहूदिया के राजा यहोशाफ़ात के शासनकाल के सत्रहवें
साल में अहाब के पुत्र अहज़्याह ने शासन करना शुरू किया.

52 उसने वह किया, जो याहवेह की दृष्टि में गलत है. उसका
स्वभाव अपने पिता और माता और नेबाथ के पुत्र यरोबोअम
के समान था, जिन्होंने इस्राएल को पाप के लिए उकसाया था.

53 वह बाल की सेवा-उपासना करता था, जिसके द्वारा उसने
याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर के क्रोध को भड़काया, ठीक
वही सब, जैसा उसके पिता ने किया था.